जमा का खाता

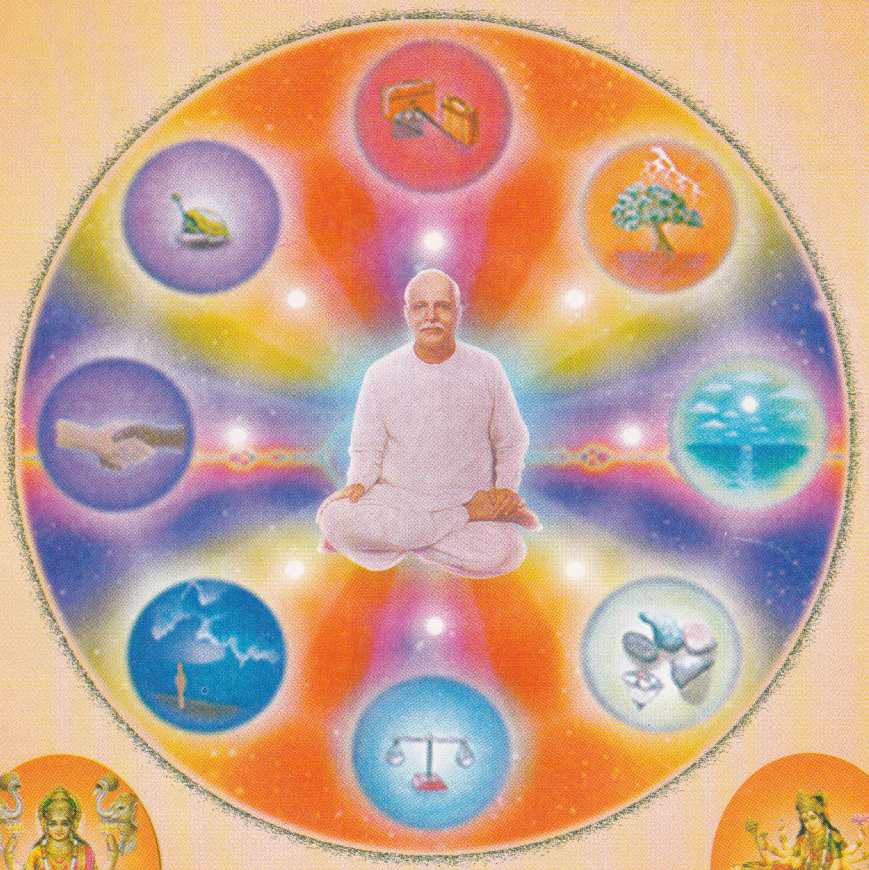

जमा का खाता

सन् 1969 से सन् 2005 तक की
अव्यक्त वाणियों का संग्रह संकलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)

अव्यक्त शिवबाबा और ब्रह्माबाबा ने
ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से
ब्रह्मा-वत्सों के सम्मुख जो कल्याणकारी
महावाक्य उच्चारण किये,
यह पुस्तक उनका संग्रह संकलन है।

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रिटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड – 307 510
☎ – 228125

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

अमृत सूची

1. संगमयुग - जमा करने का युग 8
1.1 अविनाशी और श्रेष्ठ खाता जमा करने का युग – संगमयुग
1.2 सारे कल्प के लिए जमा का समय अभी है
1.3 जमा करने का बैंक खुलने का समय
1.4 जमा करने का समय सिर्फ अब संगम है
1.5 संगमयुग – तन, मन, धन और समय सफल करने का युग
1.6 पदमों की कमाई का समय संगमयुग
1.7 संगमयुगी सम्पन्न स्थिति के कारण ही भारत का गायन है
1.8 बाप की प्रापर्टी को कमाई द्वारा बढ़ाते रहो
1.9 नंबरवन सपूत बन, नंबरवन पद पाओ
2. संगमयुग के श्रेष्ठ खजाने 14
2.1 हरेक अविनाशी खज़ानों से रिचेस्ट हैं
2.2 अविनाशी खज़ाने और उनसे प्राप्तियां
3. समय का खज़ाना 16
3.1 सर्व खज़ानों के जमा का आधार – समय को सफल करो
3.2 हर सेकेण्ड का लाभ उठाओ – समय व्यर्थ मत गंवाओ
4. संकल्प का खज़ाना 17
4.1 सर्व श्रेष्ठ खज़ाना – संकल्प का खज़ाना
4.2 श्रेष्ठ व कमजोर स्थिति का आधार – संकल्प
4.3 ब्राह्मण जीवन का खज़ाना – संकल्प
4.4 समर्थ संकल्प का खज़ाना – ज्ञान मुरली
4.5 श्रेष्ठ संकल्प से सिद्धि
5. बोल रूपी खज़ाना 20
5.1 वाचा शक्ति को जमा करो, बाप समान बनाओ
5.2 व्यर्थ और डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त बनो,
कम बोलो, धीरे बोलो
5.3 बोल की एकॉनामी करो, बोल की वैल्यू समझो

13. खज़ाने जमा करने की विधि – यूज़ करो 54
13.1 मन्सा, वाचा, कर्मणा में सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाओ
13.2 जमा की विधि – यूज करो, कार्य में लगाओ
13.3 जमा करने की भिन्न-भिन्न विधियाँ
13.4 सर्व खजानों की चाबी और उसको यूज करने की विधि
13.5 जमा का खाता बढ़ाने का सहज साधन
13.6 स्व-चेकिंग करो, चार्ट रखो, वेस्ट से बचो, जमा करो
13.7 सदा के लिए पदमापति बनने के लिये – सस्ता सौदा
13.8 सर्वशक्तियों का बजट बनाओ और चेकिंग करो – विश्व सेवा के लिए
13.9 बचत (एकॉनामी) की स्कीम बनाओ – वेस्ट मत करो, वेट कम करो
13.10 बचत की स्कीम को प्रैक्टिकल में लाओ
13.11 सर्व खज़ानों को बढ़ाने का आधार – महादानी बनो
13.12 सफलता की चाबी – सफल करना माना बचाना, बढ़ाना
13.13 विशेष ध्यान से जमा करो, विशेष बनो
13.14 अन्तर्मुखी बनो, अविनाशी प्रोग्राम सेट करो
13.15 अपना रजिस्टर साफ रखो
13.16 स्नेह देना ही भविष्य के लिए जमा करना है
13.17 डबल जमा करने की विधि – डबल लॉक लगाओ
13.18 कोई भी सेवा में विधिपूर्वक बिजी रहते हो तो
सेवा की सब्जेक्ट में मार्क्स जमा हो जाएँगी
13.19 चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए
कमाई जमा होती रहेगी
14. जमा न होने के भिन्न-भिन्न कारण..... 74
15. जमा की प्रालब्ध 81
16. सर्व खज़ानों का खाता भरपूर हो
तब कहेंगे पास विद् ऑनर 83
17. अभी भी चांस है – बचत का खाता जमा करो 84
18. जमा के लिए बापदादा की शिक्षाएं एवं आशाएं 86

6. कर्म का खज़ाना : 22

6.1 कर्मणा शक्ति जमा करने की विधि – एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा

7. ज्ञान का खज़ाना 23

7.1 ज्ञान का खज़ाना जमा करने की विधि

8. दुआओं का खज़ाना 23

8.1 दुआओं का खाता बढ़ाने की विधि

9. शक्तियों का खज़ाना 25

9.1 आज्ञाकारी ही सर्व शक्तियों के अधिकारी हैं

9.2 सर्व शक्तियों का स्टॉक

9.3 एकाग्रता से सर्व शक्तियों की प्राप्ति

9.4 सर्वश्रेष्ठ शक्ति परखने की शक्ति

9.5 परखने की शक्ति को तीव्र बनाओ

9.6 सफलता का आधार – परखने की शक्ति

9.7 निर्णय शक्ति बढ़ाने की कसौटी – ब्रह्मा बाबा

9.8 परखने और निर्णय शक्ति का आधार – साइलेन्स शक्ति

9.9 साइलेन्स शक्ति की महानता

9.10 साइलेंस शक्ति जमा करने का आधार – अन्तर्मुखी और एकांतवासी स्थिति

9.11 शान्ति की शक्ति का महत्त्व

9.12 तन, मन, धन और सम्बन्ध की शक्ति

9.13 तन, मन, धन और सम्बन्ध का श्रेष्ठ सौदा

9.14 शक्तियों को जमा करना सीखो

10. सबसे बड़े-से-बड़ा खज़ाना 46

10.1 खुशी का खज़ाना

11. व्यर्थ और समर्थ में अन्तर 48

11.1 समर्थ

11.2 व्यर्थ

12. सर्व खज़ानों से सम्पन्नता की निशानियाँ 50

ये अव्यक्त इशारे

अभी सभी को यह खास ध्यान रखना चाहिए, अपना बैलेन्स बढ़ाना चाहिए। कम से कम इतना तो होना चाहिए जो खुद सन्तुष्ट रहें। अपनी कमाई से खुद भी सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तो औरों को क्या देंगे? एक-एक को कितना जमा करना है? क्या सिर्फ अपने लिए ही जमा करना है या औरों के लिए भी जमा करना है? अभी ऐसा समय आयेगा जो सभी भिखारी रूप में आप लोंगो से यह भीख मांगेंगे। तो उन्हों को नहीं देंगे? इतना जमा करना पड़ेगा ना। अपने लिए तो करना ही है लेकिन साथ-साथ ऐसा दृश्य सभी के सामने होगा। जो आज अपने को भरपूर समझते हैं वह भी भिखारी के रूप में आप सभी से भीख मांगेंगे। तो भीख कैसे दे सकेंगे? जब जमा होगा ना। दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे ना। आप सभी की एक सेकेंड की दृष्टि के अमूल्य बोल के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रख पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आई हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये। साकार में क्या करके दिखाया? कोई भी आत्मा असन्तुष्ट होकर न जाये। भल कैसी भी आत्मा हो लेकिन सन्तुष्ट होकर जाये। तो ऐसी बातें सोचनी चाहिएँ। सिर्फ अपने लिए नहीं। अभी आप रचियता हो। आप एक-एक रचयिता के पीछे रचना भी है। माँ-बाप को जब बच्चे नहीं होते हैं, माँ-बाप की कमाई अपने प्रति ही होती है। जब रचना होती है तो फिर रचना का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है। अपने लिए जो कमाया था वह तो बहुत समय खाया, मनाया। लेकिन अब अपनी रचना का भी ध्यान रखना है।

1. संगमयुग – जमा करने का युग

1.1 अविनाशी और श्रेष्ठ खाता जमा करने का युग – संगमयुग

सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है। छोटा-सा युग,छोटी-सा जीवन है। लेकिन इस युग, इस जीवन की विशेषता है जो अब ही जितना जमा करना चाहें वह कर सकते हैं। इस समय के श्रेष्ठ खाते के प्रमाण पूज्य पद भी पाते हो और फिर पूज्य सो पुजारी भी बनते हो। इस समय श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ नालेज, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का, सब श्रेष्ठ खाते अभी जमा करते हो। **जमा करने का अविनाशी खाता, जो जन्म-जन्म चलता रहे वह अविनाशी खाते जमा करने का अभी समय है।** इसलिए इस श्रेष्ठ समय को 'पुरुषोत्तम-युग या धर्माऊ-युग' कहा जाता है। 'परमात्म अवतरण-युग' कहा जाता है। डायरेक्ट बाप द्वारा प्राप्त 'शक्तियों का युग' कहा जाता है। इसी युग में ही बाप विधाता और वरदाता का पार्ट बजाते हैं। इसलिए इस युग को 'वरदानी युग' भी कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं, जो एक का पदम्गुणा फल देते है। एक का पदम् गुणा जमा होने का विशेष भाग्य अभी ही प्राप्त होता है। अभी डायरेक्ट बाप वर्से और वरदान दोनों रूप में प्राप्ति कराने के निमित्त हैं। भक्ति में भावना का फल है, अभी वर्से और वरदान का फल है। इसलिए इस समय के महत्त्व को जान, प्राप्तियों को जान, जमा के हिसाब को जान त्रिकालदर्शी बन कदम उठाते हो? इस समय का एक सेकेण्ड कितने साधारण समय से बड़ा है। क्योंकि इस समय के अधिकारी जन्म-जन्म के अधिकारी बनते हैं।

1.2 सारे कल्प के लिए जमा का समय अभी है

इस समय का जमा किया हुआ खज़ाना सारा कल्प साथ में चलता है। सारे कल्प में ऐसा कोई भी नहीं मिलेगा जो यह सोचे कि इस जन्म में तो

रिचेस्ट हूँ लेकिन भविष्य में भी अनेक जन्म साहूकार से साहूकार रहूँगा। और आप सभी निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा यह खज़ाना अनेक जन्म साथ रहेगा। गैरन्टी है ना?

1.3 जमा करने का बैंक खुलने का समय

विशेष सारे दिन में एक तो समय, दूसरा संकल्प इन दो खज़ानों पर अटेन्शन रखना। वैसे खज़ाने तो बहुत हैं लेकिन विशेष इन दो खज़ानों के ऊपर अटेन्शन देना है। हर दिन संकल्प श्रेष्ठ, शुभ कितना जमा किया? क्योंकि पूरे कल्प के लिए जमा करने की बैंक अभी खुलती है। सतयुग में यह बैंक जमा की बन्द हो जायेगी। इस समय एक का पद्मगुणा करके देने की बैंक है लेकिन एक जमा करेंगे तब पद्म मिलेगा, ऐसे नहीं, हिसाब है।

1.4 जमा करने का समय सिर्फ अब संगम है

विश्व के बापदादा अति प्यारे, अति मीठे बच्चों को यही इशारा देते हैं कि – ''अभी अपने इस ब्राह्मण जीवन में अमृतवेले से लेकर रात तक बचत का खाता बढ़ाओ।'' जमा का खाता बढ़ाओ। हर एक अपने कार्य के प्रमाण अपना प्लैन बनावे, जो भी ब्राह्मण जीवन में खज़ाने मिले हैं, उस हरेक खज़ाने की बचत वा जमा का खाता बढ़ाओ क्योंकि बापदादा ने चारों ओर के बच्चों की रिजल्ट देखी। क्या देखा? जान तो गये हो। जमा का खाता जितना होना चाहिए क्या उतना है, क्या कहें? आप खुद ही बोलो, **क्योंकि बापदादा जानते हैं कि सर्व खज़ाने जमा करने का समय सिर्फ अब संगम है।** इस छोटे से युग में जितना जमा किया उसी प्रमाण सारा कल्प प्रालब्ध प्राप्त करते रहेंगे। जो आप सबका स्लोगन है ना 'अब नहीं तो कब नहीं' – यह स्लोगन दिमाग में तो बहुत याद है। लेकिन दिल में, याद में भूलता भी है तो याद भी रहता है। सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना इस ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता का आधार है – संकल्प का खज़ाना, समय का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का

खज़ाना – बाकि स्थूल धन का खज़ाना तो कॉमन है। तो बापदादा ने देखा जितना आप हरेक ब्राह्मण श्रेष्ठ संकल्प के खज़ाने द्वारा स्वयं को वा सेवा को श्रेष्ठ बना सकते हो, उसमें अभी और अण्डरलाइन लगानी पड़ेगी। आप ब्राह्मणों के एक श्रेष्ठ संकल्प में, शुभ संकल्प में इतनी शक्ति है जो आत्माओं को बहुत सहयोग दे सकते हो। संकल्प शक्ति का महत्त्व अभी और जितना चाहो बढ़ा सकते हो। आपका शुभ श्रेष्ठ संकल्प उसके आगे यह रॉकेट क्या है? रिफाइन विधि से कार्य में लगाके देखो, आपकी विधि की सिद्धि बहुत श्रेष्ठ है।

1.5 संगमयुग – तन, मन, धन और समय सफल करने का युग

बाप का सेवा से प्यार है इसलिए स्नेही, सहयोगी बच्चों का भी प्यार सेवा से अच्छा है। यह स्नेह का सबूत है अर्थात् प्रमाण है। अपना तन, मन, धन और समय कितना प्यार से सफल कर रहे हैं। पाप के खाते से बदल पुण्य के खाते में वर्तमान भी श्रेष्ठ और भविष्य में भी जमा कर रहे हैं। संगमयुग है ही एक का पद्मगुणा जमा करने का युग। तन सेवा में लगाओ और 21 जन्मों के लिये सम्पूर्ण निरोगी तन प्राप्त करो। कैसा भी कमजोर तन हो, रोगी हो लेकिन वाचा, कर्मणा नहीं तो मनसा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। अपने अतीन्द्रिय सुख-शान्ति की शक्ति चेहरे से, नयनों से दिखा सकते हो। जो सम्पर्क वाले देख कर यही कहें कि यह तो वन्डरफुल पेशेन्ट हैं। डॉक्टर्स भी पेशेन्ट को देख हर्षित हो जाएं। वैसे तो डॉक्टर्स पेशेन्ट को खुशी देते या दिलाते हैं लेकिन यहाँ देने के बजाए लेने का अनुभव करें। कैसे भी बीमार हो अगर दिव्य बुद्धि सालिम है तो अन्त घड़ी तक भी सेवा कर सकते हैं। क्योंकि यह जानते हो कि इस तन की सेवा का फल 21 जन्म खाते रहेंगे।

मन से – स्वयं सदा मन के शान्ति स्वरूप बन, सदा हर संकल्प में शक्तिशाली बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा दाता बन सुख-शान्ति की

किरणें वायुमण्डल में फैलाते रहो। जब आपकी रचना सूर्य चारों ओर प्रकाश की किरणें फैलाता रहता है तो आप मास्टर रचता, मास्टर सर्वशक्तिवान, विधाता, वरदाता, भाग्यवान प्राप्ति की किरणें नहीं फैला सकते हो? संकल्प शक्ति अर्थात् मन द्वारा एक स्थान पर होते हुए भी चारों ओर वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बना सकते हो। थोड़े समय, इस जन्म में मन द्वारा सेवा करने से 21 जन्म मन सदा सुख-शान्ति की मौज में होगा। लेकिन आधा कल्प भक्ति द्वारा, चित्रों द्वारा मन की शान्ति देने के निमित्त बनेंगे। चित्र भी इतना शान्ति का, शक्ति का देने वाला बनेगा। तो एक जन्म के मन की सेवा सारा कल्प चैतन्य स्वरूप से वा चित्र से शान्ति का स्वरूप बनेगा।

ऐसे धन द्वारा सेवा के निमित्त बनने वाले 21 जन्म अनगिनत धन के मालिक बन जाते हैं। साथ-साथ द्वापर से अब तक भी ऐसी आत्मा कभी धन की भिखारी नहीं बनेगी। 21 जन्म राज्य भाग्य पायेंगे, जो धन मिट्टी के समान होगा अर्थात् इतना सहज और अकीचार होगा। आपकी प्रजा की भी प्रजा अर्थात् प्रजा के सेवाधारी भी अनगिनत धन के मालिक होंगे। लेकिन 63 जन्मों में किसी जन्म में भी भिखारी नहीं होंगे। मजे से दाल-रोटी खाने वाले होंगे। तो एक जन्म दाता के प्रति धन लगाने से दाता भी क्या करेगा? सेवा में लगायेगा। तो सेवा अर्थ वा दाता अर्थ धन लगाना अर्थात् पूरे कल्प भिखारीपन से बचना। जितना लगाओ उतना द्वापर से कलियुग तक भी आराम से खाते रहेंगे तो तन-मन-धन और समय सफल करना है।

समय लगाने वाले एक तो सृष्टि चक्र के सबसे श्रेष्ठ समय – सतयुग में आते हैं। सतोप्रधान युग में आते हैं। जिस समय का भक्त लोग अब भी गायन करते हैं। स्वर्ग का गायन करते हैं ना। तो सतोप्रधान में भी वन-वन-वन ऐसे समय पर अर्थात् सतयुग के पहले जन्म में, ऐसे श्रेष्ठ समय का अधिकार पाने वाले, पहले नम्बर वाली आत्मा के साथ-साथ जीवन का समय बिताने वाले होंगे। उनके साथ पढ़ने वाले, खेलने वाले, घूमने वाले होंगे। तो जो संगम पर

अपना समय सफल करते हैं उसका श्रेष्ठ फल सम्पूर्ण सुनहरे, श्रेष्ठ समय का अधिकार प्राप्त होता है। अगर समय लगाने में अलबेले रहे तो पहले नम्बर वाली आत्मा अर्थात् श्रीकृष्ण स्वरूप में स्वर्ग के पहले वर्ष में न आकर पीछे-पीछे नम्बरवार आयेंगे। यह है समय देने का महत्त्व।

1.6 पदमों की कमाई का समय संगमयुग

संगमयुग के समय हर कदम में पद्मों की कमाई का चान्स - इस संगम पर ही पदमों की कमाई की खान मिलती है फिर सारे कल्प में यह चान्स नहीं मिलता। संगमयुग है जमा करने का युग, सतयुग को भी प्रालब्ध का युग कहेंगे, जमा का नहीं। अभी जमा करने का युग है जितना जमा करना चाहो उतना जमा कर सकते हो। एक सेकण्ड भी बिना जमा के न जाए अर्थात् व्यर्थ न हो, इतना अटेन्शन रहता है?

1.7 संगमयुगी सम्पन्न स्थिति के कारण ही भारत का गायन है

आज तक भी आध्यात्मिक खज़ाने के लिए सबकी नजर भारत के तरफ ही जाती है। स्थूल धन में गरीब माना जाता है लेकिन आध्यात्मिक खज़ाने अविनाशी सुख और शान्ति, शक्ति इन खज़ानों में भारत ही सबसे सम्पत्तिवान गाया जाता है। आपकी इस संगमयुगी सम्पन्न स्थिति के कारण ही स्थान का गायन है। इतने खज़ानों से सम्पन्न होते हो जो आधा कल्प वही प्राप्त खज़ाने चलते रहते हैं। ऐसा कभी कोई सारे कल्प में नहीं बन सकता। संगमयुग सर्व युगों में से छोटा युग होने के कारण इसकी बहुत थोड़ी आयु है, जितनी छोटी-सी जीवन है, छोटा-सा युग है इतनी कमाई सब युगों से श्रेष्ठ है। सदा अपने खज़ानों को स्मृति में रखते हो? क्या क्या खज़ाने मिले हैं, किस द्वारा मिले हैं और कितने समय तक चलने वाले हैं?

1.8 बाप की प्रापर्टी को कमाई द्वारा बढ़ाते रहो

संगमयुग पर वरदाता द्वारा ड्रामा अनुसार समय को वरदान मिला हुआ है, जो चाहे वह श्रेष्ठ भाग्यवान बन सकता है। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् जन्म से भाग्य ले ही आते हो। जन्मते ही भाग्य का सितारा सर्व के मस्तक पर चमकता हुआ है। यह तो जन्म-सिद्ध अधिकार हो गया। ब्राह्मण माना ही भाग्यवान। लेकिन प्राप्त हुए जन्म-सिद्ध अधिकार को वा चमकते हुए भाग्य के सितारे को कहां तक आगे बढ़ाते, कितना श्रेष्ठ बनाते जाते हैं वह हरेक के पुरुषार्थ पर है। मिले हुए भाग्य के अधिकार को जीवन में धारण कर कर्म में लाना अर्थात् मिली हुई बाप की प्रापर्टी को कमाई द्वारा बढ़ाते रहना वा खाके खत्म कर देना, वह हरेक के ऊपर है। जन्मते ही बापदादा सबको एक जैसा श्रेष्ठ भाग्यवान-भव का वरदान कहो वा भाग्य की प्रापर्टी कहो, एक जैसी ही देते हैं। सब बच्चों को एक जैसा ही टाइटिल देते हैं - सिकिलधे बच्चे, लाडले बच्चे, कोई को सिकिलधे और कोई को न सिकिलधे नहीं कहते हैं। लेकिन प्रापर्टी को संभालना और बढ़ाना इसमें नंबर बन जाते हैं।

1.9 नंबरवन सपूत बन, नंबरवन पद पाओ।

संगमयुग छोटा सा युग है लेकिन जितना छोटा है उतना महान है। सर्व महान कर्तव्य, महान स्थिति, महान प्राप्ति, महान अनुभव इस छोटे से युग में होते हैं। दीपमाला भी आपके डबल रूप, डबल समय का यादगार हो गया है जो दीपमाला में विधि रखते हैं, वह भिन्न-भिन्न विधियां भी मिक्स कर दी हैं। एक तरफ अपने पुराने खाते समाप्त कर नया बनाते हैं, दूसरे तरफ दीपमाला में नए वस्त्र भी विधिपूर्वक पहनते हैं। तो पुराना हिसाब किताब चुक्तु करना और नया खाता आरंभ करना - यह संगमयुग का यादगार है। पुराना सब भूल जाते हो, नया जन्म, नया संबंध, नया कर्म सब परिवर्तन करते हो। पुराना खाता है ही रावण का खाता। नया खाता है ब्रह्मा बाप का वा ब्राह्मणों का

खाता। अगर थोड़ा भी पुराना खाता रहा हुआ है तो वह रावण की अपनी चीज है। अपनी चीज को अधिकार से लेंगे। इसलिए माया रावण चक्र लगाती है। चीज ही नहीं होगी तो रावण आयेगा भी नहीं। जैसे किसी का उधार कर्ज होता है तो क्या करते हैं? बार-बार चक्र लगाते रहेंगे, छोड़ेंगे नहीं। कितना भी टालने की कोशिश करो लेकिन कर्जदार अपना कर्ज ज़रूर चुकायेगा। अगर कोई भी पुराने खाते में पुराने संस्कार अभी समाप्त नहीं किए हैं तो यह रावण का कर्जा है। इस कर्ज को मर्ज कहा जाता है। कहते हैं कर्ज जैसा कोई मर्ज नहीं। तो यह रावण का कर्ज - पुराने संकल्प, संस्कार-स्वभाव, पुरानी चाल-चलन यह कर्ज कमजोर बना देता है। कमजोरी ही मर्ज अर्थात् बीमारी बन जाती है। इसलिए इस कर्ज को एक सेकेंड में दृढ़ संकल्प से समाप्त करो। इसको जलाओ। ब्रह्माबाप को देखा, पुराना खाता खत्म किया ना, सबूत बन करके दिखाया, इसलिए नंबरवन सपूत बने और नंबरवन पद की प्राप्ति की। तो फ़ालो फ़ादर।

2. संगमयुग के श्रेष्ठ खज़ाने

2.1 हरेक अविनाशी खज़ाने से रिचेस्ट हैं

आज की सभा में हरेक बच्चा हाइएस्ट और अविनाशी खज़ानों से रिचेस्ट है। दुनिया वाले कितने भी रिचेस्ट हों लेकिन एक जन्म के लिए रिचेस्ट हैं। एक जन्म भी रिचेस्ट रहेगा या नहीं, यह भी निश्चित नहीं है। चाहे कितना भी रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो परन्तु एक जन्म के लिए और आप हो जो निश्चय और नशे से कहते हो कि हम अनेक जन्म रिचेस्ट हैं। क्योंकि आप सभी अविनाशी खज़ानों से सम्पन्न हो।

हरेक बच्चे को अनेक प्रकार के अविनाशी अखुट खज़ाने मिले हैं और ऐसे खज़ाने हैं, जो सर्व खज़ाने अब भी हैं और आगे भी अनेक जन्म खज़ानों के साथ रहेंगे। खज़ानों से सम्पन्न आत्मा सदा भरपूरता के नशे में रहती है।

सम्पन्नता की झलक उनके चेहरे में चमकती है और हर कर्म में सम्पन्नता की झलक स्वत: ही नजर आती है। दुनिया वाले कहते हैं खाली होकर जाना है आप कहते हो भरपूर होकर जाना है।

2.2 अविनाशी खज़ाने और उनसे प्राप्तियाँ

अपने खज़ानों को जानते हो ना, समय के खज़ाने को भी जानते हो कि इस संगमयुग का समय कितना श्रेष्ठ है? जो प्राप्ति चाहिए वह अधिकारी बन बाप से ले रहे हो। एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना बड़ा खज़ाना है। समय भी बड़ा खज़ाना है। संकल्प भी बड़ा खज़ाना है। सर्व शक्तियाँ बड़े से बड़ा खज़ाना है। एक-एक ज्ञान रत्न कितना बड़ा खज़ाना है। हर गुण कितना बड़ा खज़ाना है। दुनिया वाले भी मानते हैं कि श्वासों-श्वास याद से श्वास सफल होते हैं। तो आप सबके श्वास सफलता स्वरूप हैं, व्यर्थ नहीं। हर श्वास में सफलता का अधिकार समाया हुआ है।

सबसे श्रेष्ठ पहला खज़ाना है – ज्ञान रत्नों का खज़ाना। ज्ञान खज़ाने द्वारा इस समय भी मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति कर रहे हो। मुक्तिधाम में जायेंगे वा जीवनमुक्ति पद प्राप्त करेंगे – यह तो भविष्य की बात हुई। लेकिन अभी भी जो दु:ख-अशान्ति के कारण हैं, उनसे मुक्त हुए हो कि अभी मुक्त होना है? कोई विकार तो नहीं आता? अगर आता भी है तो विजयी बन जाते हो ना। लौकिक जीवन और अलौकिक जीवन – दोनों को साथ रखो तो कितना अन्तर दिखाई देता है। अनेक व्यर्थ और विकल्प, विकर्मों से मुक्त बनना – यही जीवनमुक्त अवस्था है। ज्ञान के खज़ाने से विशेष मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति का अनुभव कर रहे हो। दूसरा – याद अर्थात् योग द्वारा सर्व शक्तियों का खज़ाना अनुभव कर रहे हो। आठ शक्तियाँ तो एक सेम्पुल रूप में दिखाते हो, लेकिन सर्व शक्तियों के खज़ानों के मालिक बन गये हो। तीसरा – धारणा की सब्जेक्ट द्वारा सर्व दिव्य गुणों का खज़ाना मिलता

है। तो सर्व गुणों का खज़ाना, गुण की, हर शक्ति की विशेषता कितनी बड़ी है। हर ज्ञान रत्न की महिमा कितनी बड़ी है। चौथी बात – सेवा द्वारा सदा खुशी के खज़ाने की अनुभूति करते हो। जो सेवा करते हो उससे विशेष खुशी होती है ना। तो सबसे बड़ा खज़ाना है – अविनाशी खुशी। तो खुशी का खज़ाना सहज और स्वत: प्राप्त हो जाता है। पाँचवा – सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा ब्राह्मण परिवार के भी सम्पर्क में आते हो, सेवा के सम्बन्ध में आते हो। सर्व की दुआओं का खज़ाना मिलता है। दुआओं का खज़ाना बहुत बड़ा खज़ाना है। जो सर्व की दुआओं के खज़ाने से भरपूर है। सम्पन्न है, उसको कभी भी पुरुषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़ती। पहले है माता-पिता की दुआयें और साथ में सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व द्वारा दुआयें। साइन्स के रॉकेट से दुआओं का रॉकेट श्रेष्ठ है। विघ्न जरा भी स्पर्श नहीं करेगा, विघ्न प्रूफ बन जाते हैं। युद्ध नहीं करनी पड़ती। सहज योगयुक्त, युक्तियुक्त, हर कर्म, बोल, संकल्प स्वत: ही बन जाते हैं। सबसे बड़ा खज़ाना इस संगमयुग के समय का खज़ाना। जो खज़ाने सुनाये, सिर्फ इन खज़ानों को भी अपने अन्दर समाने की शक्ति धारण करो तो सदा ही सम्पन्न होने के कारण जरा भी हलचल नहीं होगी। हलचल तब होती जब खाली होते हैं। भरपूर आत्मा कभी हिलेगी नहीं।

3. समय का खज़ाना

3.1 सर्व खज़ानों को जमा करने का आधार – समय को सफल करो

ज्ञान का खज़ाना समय की पहचान के कारण अब नहीं तो कब नहीं दे सकते। अब देंगे तो भविष्य में अनेक जन्म प्राप्त होगा। इस आधार पर समय के महत्त्व के कारण सदा विश्व सेवाधारी बनने से सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी का खज़ाना अखुट बन जाता है। श्वासों का खज़ाना, समय के महत्त्व प्रमाण

एक का पद्म गुणा मिलता है। तो सर्व खज़ानों के जमा का आधार समय के श्रेष्ठ खज़ाने को सफल करो तो सदा और सर्व सफलतामूर्त सहज बन जायेंगे।

3.2 हर सेकण्ड का लाभ उठाओ – समय व्यर्थ नहीं गँवाओ

अलबेला अर्थात् करने के समय करते हुए भी उस समय जानते नहीं हो कि कर रहे हैं, पीछे पश्चाताप करते हो। इस कारण डबल, ट्रिपल समय एक बात में गँवा देते हो। एक करने का समय, दूसरा महसूस करने का समय, तीसरा पश्चाताप करने का समय, चौथा फिर उसको चैक करने के बाद चेन्ज करने का समय। और फिर बार-बार पश्चाताप करते रहने के कारण, कर्मों का फल संस्कार रूप में पश्चाताप के संस्कार बन जाते हैं। यह ब्राह्मणों की नेचुरल नेचर नहीं है। बहुत समय के संस्कार समय पर धोखा दे देते हैं। तो पहले स्वयं को स्वयं के धोखे से बचाओ तो समय के धोखे से भी बच जायेंगे। माया के अनेक प्रकार के धोखे से भी बच जायेंगे। दु:ख की अंश मात्र महसूसता से सदा बच जायेंगे, लेकिन सर्व का आधार 'समय को व्यर्थ नहीं गँवाओ।' हर सेकण्ड का लाभ उठाओ। समय के वरदानों को स्वयं प्रति और सर्व के प्रति कार्य में लगाओ।

4. संकल्प का खज़ाना

4.1 सबसे श्रेष्ठ खज़ाना – संकल्प का खज़ाना

मन का मौन है ही – ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभवों के रत्न लाना। जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खज़ाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है। संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ भावना, शुभ कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति – यह आपके पास ही है।

नाते हो। मैं बिन्दू हूँ, फरिश्ता हूँ, — यह स्थिति संकल्प से ही बनी, तो संकल्प कितना शक्तिशाली है।

4.3 ब्राह्मण जीवन का खज़ाना – संकल्प

ज्ञान का आधार भी संकल्प ही है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ... ये संकल्प करते हो। सारा दिन मन बुद्धि को शुभ संकल्प देते हो वा मनन में शुद्ध संकल्प करते हो तो मनन शक्ति का आधार संकल्प शक्ति है। धारणा करते हो, तो मन बुद्धि को संकल्प देते हो कि आज मुझे सहनशक्ति धारण करनी है तो धारणा का आधार भी संकल्प है। सेवा करते हो, प्लैन बनाते हो तो भी शुद्ध संकल्प ही चलते हैं ना। शुद्ध संकल्प द्वारा ही प्लैन बनता है। तो ब्राह्मण जीवन का विशेष श्रेष्ठ खज़ाना है संकल्प का खज़ाना। संकल्प के खज़ाने को सफल करते हो तो आपकी स्थिति, कर्म सारा दिन बहुत अच्छी रहती है।

4.4 समर्थ संकल्प का खज़ाना – ज्ञान मुरली

व्यर्थ संकल्प अब तक भी क्यों चलते है? इसका कारण? जो बापदादा ने समर्थ संकल्पों का खज़ाना दिया है - वह है ज्ञान की मुरली। मुरली का एक-एक महावाक्य समर्थ खज़ाना है। इस समर्थ संकल्प के खज़ाने का महत्त्व कम होने के कारण समर्थ संकल्प धारण नहीं होता तो व्यर्थ को चान्स मिल जाता है। हर समय एक-एक महावाक्य मनन करते रहें तो समर्थ बुद्धि में व्यर्थ आ नहीं सकता है। खाली बुद्धि रह जाती है इसलिए खाली स्थान होने के कारण व्यर्थ आ जाता है। जब मार्जिन ही नहीं होगी तो व्यर्थ आ कैसे सकता? समर्थ संकल्पों से बुद्धि को बिजी रखने का साधन नहीं आना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों का आह्वान करना। दिन-रात इन ज्ञान रत्नों के बिजनेसमैन बनो। न फुर्सत होगी, न व्यर्थ संकल्पों की मार्जिन होगी। तो विशेष बात 'बुद्धि को समर्थ संकल्पों से सदा भरपूर रखो।' उसका आधार है - रोज की मुरली सुनना, समाना और स्वरूप बनना। यह तीन स्टेजस हैं।

ऐसे श्रेष्ठ शुभ संकल्प में इतनी ताकत है जो आपकी कैचिंग पॉवर, वायब्रेशन कैच करने की पॉवर बहुत बढ़ सकती है। यह वायरलेस टेलीफोन... जैसे यह साइंस का साधन कार्य करता है वैसे शुद्ध संकल्प का खज़ाना ऐसा ही कार्य करेगा जो लण्डन में बैठे हुए कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा जैसे यह वायरलेस या टेलीफोन, टी. वी. यह जो भी साधन हैं कितने साधन निकल गये हैं इससे भी स्पष्ट आपकी कैचिंग पॉवर एकाग्रता की शक्ति से बढ़ेगी। इसलिए बापदादा फिर से अण्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा – यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे।

4.2 श्रेष्ठ व कमजोर स्थिति का आधार – संकल्प

आप सबका श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खज़ाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में परमधाम तक पहुँच सकते हो। संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो, चाहे बैठे हो, चाहे कोई कर्म कर रहे हो लेकिन संकल्प के खज़ाने से वा शक्ति से जिस आत्मा के पास पहुँचना चाहो उसके समीप अपने को अनुभव कर सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थिति को अपनाना चाहो, चाहे श्रेष्ठ, चाहे खुशी की हो, चाहे व्यर्थ हो, कमजोरी की हो, सेकण्ड के संकल्प से अपना सकते हो। संकल्प किया – मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी और संकल्प किया, मैं तो कमजोर आत्मा हूँ , मेरे में कोई शक्ति नहीं है तो सेकण्ड के संकल्प से खुशी गायब हो जायेगी। परेशानी के चिन्ह स्थिति में अनुभव होंगे। लेकिन दोनों स्थिति का आधार संकल्प है। याद में भी बैठते हो तो संकल्प के आधार से ही स्थिति

4.5 श्रेष्ठ संकल्प से सिद्धि

संकल्प के आधार पर बोल और कर्म आटोमेटिक चलते हैं। आज बोल को कन्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अन्टेशन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अन्टेशन से चेंज करो। अगर संकल्प शक्ति पॉवरफुल है तो यह सब स्वत: ही कन्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति के महत्त्व को जानो। यह श्रेष्ठ संकल्प शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प का खज़ाना है इसका विधिपूर्वक प्रयोग करने से सिद्धि का अनुभव होता है। आखिर आपके संकल्प की शक्ति इतनी महान हो जायेगी - जो सेवा में मुख द्वारा सन्देश देने से समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो... लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा।

5. बोल रूपी खज़ाना

5.1 वाचा शक्ति को जमा करो, बाप समान बनाओ

जब संगठन में आते, कर्म में आते, कारोबार में आते, परिवार में आते तो संगठन का बोल अर्थात् वाचा शक्ति इसमें व्यर्थ ज्यादा दिखाई देता है। वाणी की शक्ति व्यर्थ जाने के कारण वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर व शक्ति अनुभव करानी चाहिये वह कम होता है। बातें अच्छी लगती हैं, वह दूसरी बात है। बाप की बातें रिपीट करते हो तो वह ज़रूर अच्छी होंगी। लेकिन वाचा की शक्ति व्यर्थ जाने के कारण शक्ति जमा नहीं होती है, इसलिए बाप को प्रत्यक्ष करने की आवाज बुलन्द होने में अभी देरी हो रही है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा – फरिश्तों के बोल थे, कम बोल और मधुर बोल। जिस बोल का फल निकले वह है यथार्थ बोल और जिस बोल का कोई फल नहीं वह है व्यर्थ। चाहे कारोबार का फल हो, कारोबार के लिए भी बोलना तो

पड़ता है ना, वह भी लम्बा नहीं करो। जैसे याद से मनसा की शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो संकल्प शक्ति जमा करते हो। ऐसे वाणी की शक्ति भी जमा करो। तो वाचा और कर्मणा इन दोनों शक्तियों को जमा करने की स्कीम बनाओ।

5.2 व्यर्थ और डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त बनो, कम बोलो, धीरे बोलो।

बापदादा विशेष इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि व्यर्थ बोल जो किसको भी अच्छे नहीं लगते, आपको अच्छा लगता है लेकिन दूसरों को अच्छा नहीं लगता, तो सदा के लिए उस शब्द को समाप्त कर दो। यह अपशब्द, व्यर्थ शब्द, जोर से बोलना..... ये जोर से बोलना भी वास्तव में अनेकों को डिस्टर्ब करना है। ये नहीं बोलो - मेरा तो आवाज ही बड़ा है। मायाजीत बन सकते हो और आवाज जीत नहीं बन सकते। तो ऐसे किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले और व्यर्थ बोल नहीं बोलो। बात होती है दो शब्दों की लेकिन आधा घण्टा उस बात को बोलते रहेंगे। तो यह जो लम्बा बोल बोलते हो, जो चार शब्दों में काम हो सकता है वो 12-15 शब्दों में नहीं बोलो। आप लोगों का स्लोगन है - कम बोलो, धीरे बोलो। इसलिए आज का पाठ दे रहे हैं - व्यर्थ बोल या किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले बोल से अपने को मुक्त करो। व्यर्थ बोल मुक्त। फिर देखो, अव्यक्त फरिश्ता बनने में आपको बहुत मदद मिलेगी।

5.3 बोल की एकॉनामी करो, बोल की वेल्यू समझो

बोल की एकॉनोमी करो। अपने बोल की वेल्यू रखो। जैसे महात्माओं को कहते हैं ना - सत्य वचन महाराज, तो आपके बोल सदा सत् वचन अर्थात् कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले बोल (वचन) हों। किसको चलते-फिरते हँसी में कह देते हो - ये तो पागल है, ये तो बेसमझ है। ऐसे कई शब्द अभी

बापदादा भूल गये हैं लेकिन सुनते हैं तो ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द निकलना मानो आप सत् वचन महाराज वाले, किसी को श्राप देते हो। किसको श्रापित नहीं करो, सुख दो। युक्तियुक्त बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो। तो जब बोलना शुरू करते हो तो एक घण्टे में चेक करो कि कितने बोल व्यर्थ हुये और कितने सत् वचन हुये? आपको अपने बोल की वेल्यू का पता नहीं, तो बोल की वेल्यू समझो। अपशब्द नहीं बोलो, शुभ शब्द बोलो। हरेक अपने को देखो, यह शुरू नहीं करना कि बाबा ने वाणी चलाई फिर भी बोल रहा है, दूसरे को नहीं देखना है। अपने को देखो... मैंने बाप की श्रीमत को कितना अपनाया है? अभी तो एक-दो को देखते हैं... यह कर रहा है लेकिन अधिकार मिलने में वो नीचे पद में जायेगा तो उस समय आप साथ देंगे? उस समय देखेंगे? उस समय नहीं देखेंगे। फिर अभी क्यों देखते हो?

6. कर्म का खज़ाना

6.1 कर्मणा शक्ति जमा करने की विधि – एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा

सेवा में संगठित रूप से सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने का विशेष संकल्प – यह भी सदा साथ-साथ रहे। क्योंकि एक ही समय तीन प्रकार की सेवा साथ-साथ होती है। एक – अपनी सन्तुष्टता, यह है स्व सेवा। दूसरी – संगठन की सन्तुष्टता, यह है परिवार की सेवा। तीसरी – भाषा द्वारा वा किसी भी विधि द्वारा विश्व की आत्माओं की सेवा। एक ही समय पर तीन सेवायें होती हैं। कोई भी प्रोग्राम बनाते हो तो उसमें तीनों सेवायें समाई हुई हैं। जैसे विश्व की सेवा की रिजल्ट वा विधि अटेन्शन में रखते हो ऐसे दोनों सेवायें स्व और संगठन की तीनों ही निर्विघ्न हों तब कहेंगे सेवा की नम्बरवन सफलता। एक दो के सहयोगी बनो। दूसरे के बचाव में अपना बचाव अर्थात् बचत हो जायेगी।

7. ज्ञान का खज़ाना

7.1 ज्ञान का खज़ाना – जमा करने की विधि

ज्ञान का अर्थ यह नहीं कि प्वाइंट रिपीट करना या बुद्धि में रखना। ज्ञान अर्थात् समझ - त्रिकालदर्शी बनने की समझ, सत्य-असत्य की समझ, समय प्रमाण कर्म करने की समझ। इसको ज्ञान कहा जाता है। तो ज्ञान का खज़ाना धारण करना, जमा करना अर्थात् हर समय, हर कार्य, हर कर्म में समझ से चलना। चेक करो कि ऐसे ज्ञानी तू आत्मा कहाँ तक बने हैं – प्रैक्टिकल कर्म में, बोलने में... लक्ष्य और लक्षण समान हों।

8. दुआओं का खज़ाना

8.1 दुआओं का खाता बढ़ाने की विधि

सर्व खज़ानों से सम्पन्न बनो और विशेष वर्तमान समय यही सहज पुरुषार्थ करो कि सर्व से, बापदादा से हर समय दुआयें लेते रहें। दुआयें किसको मिलती हैं? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे। जहाँ सन्तुष्टता होगी वहाँ दुआयें होंगी। और कुछ भी न करो लेकिन दुआयें दो और दुआयें लो। इसमें सब आ जायेगा। दिव्य गुण, शक्तियाँ आपे ही आ जायेंगी। कोई आप को दुःख दे तो भी आपको दुआयें देनी हैं। तो सहनशक्ति, समाने की शक्ति होगी। सहनशीलता का गुण होगा ना। अण्डरस्टुट है। दुआयें देना और दुआयें लेना - यह है बीज, इसमें झाड़ स्वत: ही समाया हुआ है। इसकी विधि है - दो शब्द याद रखो। एक है - शिक्षा। दूसरी है - क्षमा, रहम। क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। क्षमा करेंगे तो शिक्षा स्वत: ही आ जायेगी। अभी से यह संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआयें दे सकेंगे। हर कदम बाप की श्रीमत पर चलो तो हर कदम में कितनी दुआयें मिलेंगी, दुआओं का खज़ाना

कितना भरपूर हो जायेगा। कोई भल क्या भी देवे लेकिन आप उसको दुआयें दो। चाहे कोई क्रोध भी करता है, उसमें भी दुआयें हैं। आपको याद दिलाता है कि मैं तो परवश हूँ लेकिन आप मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो दुआयें मिली ना। आज बापदादा सर्व बच्चों का पुण्य का खाता देख रहे थे। क्योंकि आप सभी पुण्य आत्मांए हो। पुण्य का खाता अनेक जन्मों के लिए जमा कर रहे हो। सारे दिन में पुण्य कितना जमा किया? यह स्वयं भी चेक कर सकते हो। एक है दान करना और दूसरा है पुण्य करना। दान से भी पुण्य का ज्यादा महत्त्व है। पुण्य कर्म निस्वार्थ सेवाभाव का कर्म है। पुण्य कर्म दिखावा नहीं होता है लेकिन दिल से होता है। दान दिखावा भी होता है दिल से भी होता है। पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यकता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना अर्थात् काम में आना। पुण्य कर्म करने वाली आत्मा को अनेक आत्माओं के दिल की दुआएँ प्राप्त होती हैं। सिर्फ मुख से शुक्रिया वा थैंक्स नहीं कहते लेकिन दिल की दुआएँ गुप्त प्राप्ति जमा होती जाती है। पुण्य आत्मा, परमात्म दुआएँ, आत्माओं की दुआएँ - इस प्राप्त हुए प्रत्यक्षफल से भरपूर होते हैं। पुण्य आत्मा की वृति, दृष्टि औरों को भी दुआएँ अनुभव कराती हैं। पुण्य आत्मा के चेहरे पर सदा प्रसन्नता, सन्तुष्टता की झलक दिखाई देती है। पुण्य आत्मा सदा प्राप्त हुए फल के कारण अभिमान और अपमान से परे रहती है। क्योंकि भरपूर बादशाह है। अभिमान और अपमान से बेफिकर बादशाह है। पुण्य आत्मा पुण्य की शक्ति द्वारा स्वयं के हर संकल्प, हर समय की हलचल को, हर कर्म को सफल करने वाले होती है। पुण्य का खाता जमा की निशानी है - व्यर्थ की समाप्ति। ऐसी पुण्य आत्मा विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनती है। तो अपने खाते को चेक करो कि ऐसे पुण्य आत्मा कहां तक बने हैं? ग्लानि को प्रशंसा समझो, तब कहेंगे पुण्य आत्मा। जगत अम्बा मां ने सदैव सभी बच्चों को यही पाठ पक्का कराया कि गाली देने वाले या दुःख देने वाली आत्मा को भी अपने रहमदिल स्वरूप से, रहम की दृष्टि से देखो। ग्लानि की

दृष्टि से नहीं। वह गाली देवे, आप फूल चढ़ाओ, तब कहेंगे पुण्य आत्मा। ग्लानि वाले को दिल से गले लगाओ। बाहर से गले नहीं लगाना लेकिन मन से, तो पुण्य के खाते में जमा होने में विघ्नरूप यही बात बनती है। संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्म द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य करेंगे। पुण्य का प्रत्यक्ष फल है हर आत्मा की दुआएँ। हर संकल्प में पुण्य जमा हो। बोल में दुआएँ जमा हों। सम्बंध-सम्पर्क से दिल से सहयोग की शुक्रिया निकले - इसको कहते हैं तपस्या। ऐसी तपस्या विश्वपरिवर्तन का आधार बनेगी।

9. शक्तियों का खज़ाना

9.1 आज्ञाकारी ही सर्व शक्तियों के अधिकारी हैं

सर्वशक्तिवान बाप ने सभी ब्राह्मण आत्माओं को समान सर्व शक्तियों का वर्सा दिया है। सभी को एक द्वारा, एक साथ, एक समान शक्तियाँ दी हैं। कोई सदा शक्ति स्वरूप बने, कोई कभी-कभी शक्ति स्वरूप बने हैं। क्यों? कोई ब्राह्मण आत्मायें अपनी सर्वशक्तिवान की अथॉरिटी से जिस समय, जिस शक्ति को आर्डर करती हैं वह शक्ति रचना के रूप में मास्टर रचता के सामने आती है। आर्डर किया और हाजिर हो जाती है। कोई आर्डर करते हैं लेकिन समय पर हाजिर नहीं होती, जी हाजिर नहीं होती। इसका कारण क्या? कारण है जो बच्चे सर्वशक्तिवान बाप के हर कदम की श्रीमत पर, हर समय जी हाजिर वा हर आज्ञा में जी हाजिर प्रैक्टिकल में करते हैं तो जी हाजिर करने वाले के आगे हर शक्ति भी जी हाजिर वा जी मास्टर हजूर करती है।

अगर कोई आत्मायें श्रीमत वा आज्ञा, जो सहज पालन कर सकते हैं वह करते हैं और जो मुश्किल लगती है वह नहीं कर सकते – कुछ किया, कुछ नहीं किया, कभी 'जी हाजिर' कभी 'हाजिर' इसका प्रत्यक्ष सबूत वा प्रत्यक्ष

तलवार चला न सके, तलवार काम में लगा नहीं सके या तलवार याद ही न आये या तलवार ने काम नहीं किया, तो ऐसे को क्या कहा जायेगा? शस्त्रधारी? शक्ति सेना हो, शस्त्र हैं सर्व शक्तियाँ।

9.2 सर्व शक्तियों का स्टॉक

जब विनाश की आग चारों ओर लगेगी, उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला-पहला कर्त्तव्य कौन-सा है? शान्ति का दान अर्थात् शीतलता का जल देना। उस समय हरेक को अलग-अलग शक्ति की आवश्यकता होगी। किसी को सहनशक्ति की आवश्यकता, किसी को समेटने की शक्ति की आवश्यकता, किसी को अपने आपको परखने की आवश्यकता, किसी को निर्णय करने की आवश्यकता होगी। किसी को मुक्ति के ठिकाने की आवश्यकता होगी। भिन्न-भिन्न शक्तियों की उन आत्माओं को उस समय आवश्यकता होगी। बाप के परिचय द्वारा एक सेकण्ड में अशान्त आत्माओं को शान्त कराने की शक्ति भी उस समय आवश्यक है। वह अभी से ही इकट्ठी करनी होगी। नहीं तो उस समय लगी हुई आग से कैसे बचा सकेंगे? जीयदान कैसे दे सकेंगे? यह अपने आपको, पहले से ही तैयारी करने के लिए देखना पड़ेगा। जैसे छः मास का स्टॉक रखते हो ना कि छः मास में इस-इस वस्तु की आवश्यकता होंगी। चैक करके फिर भर देते हो। इस प्रकार क्या यह स्टॉक भी चैक करते हो? सारे विश्व की सभी आत्माओं को शक्ति का दान देना पड़ेगा। इतना स्टॉक जमा किया है? जो स्वयं भी अपने को शक्ति के आधार से चला सकें और दूसरों को भी शक्ति दे सकें ताकि कोई भी वंचित न रहे। अगर अपने पास शक्तियाँ जमा नहीं हैं और एक भी आत्मा वंचित रह गई तो इसका बोझ किस पर होगा? जो निमित्त बनी हुई हैं। सदैव अपनी हर शक्ति का स्टॉक चेक करो। जिसके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा है वही मुख्य गाये जाते हैं। जिनके पास स्टॉक जमा है वही लकी स्टार्स के रूप में चमकते

प्रमाण रूप है कि ऐसी आत्माओं के आगे सर्व शक्तियाँ भी समय प्रमाण हाजिर नहीं होती हैं। जैसे कोई परिस्थिति प्रमाण समाने की शक्ति चाहिए तो संकल्प करेंगे कि हम अवश्य समाने की शक्ति द्वारा इस परिस्थिति को पार करेंगे, विजयी बनेंगे। लेकिन होता क्या है? कभी-कभी वाले समाने की शक्ति का प्रयोग करेंगे, दस बार समायेंगे लेकिन समाते हुये भी एक-दो बार समाने चाहते भी समा नहीं सकेंगे, तो इसको क्या कहेंगे? समाने की शक्ति ने आर्डर माना? जबकि अपनी शक्ति है, बाप ने वर्से में दिया है तो बाप का वर्सा सो बच्चों का वर्सा हो जाता। आज बापदादा ब्राह्मण आत्माओं को देख रहे थे कि कहाँ तक सर्व शक्तियों के अधिकारी बने हैं। अगर अधिकारी नहीं बने, तो उस समय परिस्थिति के अधीन बनना पड़े। बापदादा को सबसे ज्यादा रहम उस समय आता है जब बच्चे कोई भी शक्ति को समय पर कार्य में नहीं लगा सकते हैं। उस समय क्या करते हैं? भागते बाप के पास हैं, अधिकार बाप पर रखते हैं लेकिन रूप होता है रॉयल भक्त का। भक्ति का अंश रह जाता है वहाँ भक्ति का फल ज्ञान अर्थात् सर्व प्राप्ति नहीं हो सकती, सफलता नहीं मिल सकती। भक्ति अर्थात् मेहनत, ज्ञान अर्थात् मोहब्बत। यथार्थ शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाजिर हो जाये। याद का स्वरूप है सफलता। ऐसे नहीं, जिस समय याद में बैठते हैं उस समय खुशी भी अनुभव होती, शक्ति भी अनुभव होती और जब कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते उस समय सदा सफलता नहीं होती। तो उसको कर्मयोगी नहीं कहा जायेगा। शक्तियाँ शस्त्र हैं और शस्त्र किस समय के लिए होता है? शस्त्र सदा समय पर काम में लाया जाता है। यथार्थ याद अर्थात् सर्व शक्ति सम्पन्न। सदा शक्तिशाली शस्त्र हो। परिस्थिति रूपी दुश्मन आया और शस्त्र काम में नहीं आये, तो इसको क्या कहा जायेगा? शक्तिशाली शस्त्रधारी कहेंगे? ऐसे नहीं समझो कि बात ही ऐसी थी ना, सरकमस्टांश ही ऐसे थे, समस्या ही ऐसी थी, वायुमण्डल ऐसा था। यही तो दुश्मन हैं और उस समय कहो, दुश्मन आ गया, इसलिए

उस बना हूं? अगर स्वयं में ही किसी एक शक्ति की कमी होगी, तो दूसरों
सर्वशक्तिवान बाप के वर्से का अधिकारी वा मास्टर सर्वशक्तिवान कैसे
ा सकेंगे? अगर अपने पास सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा नहीं होगा, तो सर्व
त्माओं को सन्तुष्ट करने वाली सन्तुष्टमणियां नहीं बन सकेंगे, वा सर्व
त्मायें आपको दाता, सर्वशक्तिदाता नहीं मानेंगी। अगर विश्व की सर्व
त्माओं द्वारा विश्व कल्याणी माननीय नहीं बनेंगे, तो माननीय के बिना
ानीय भी नहीं बन सकेंगे।

निर्बल आत्माओं को सिर्फ ज्ञान दे दिया, उन्हें कोर्स करा दिया व योग में
ा दिया, वे इससे आगे नहीं बढ़ेंगी। अब तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को
योग देते हुए आगे बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिए अभी से ही अपने में सर्वशक्तियों
स्टॉक जमा करो। जैसे स्थूल भोजन का लंगर लगता है ऐसे ही आपके
स शक्ति लेने का दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा अर्थात् आप लोगों को
शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिए आप को अपने में पहले से
स्टॉक जमा करना पड़ेगा। कैसा भी समय हो, यदि शक्तियों का स्टॉक
ा होगा तो शक्तियां, प्रकृति को आपकी दासी ज़रूर बनावेंगी अर्थात्
धन स्वत: ज़रूर प्राप्त होंगे। पुरुषार्थ अब महीन बातों पर ही करना चाहिए।
ी को दुख तो नहीं दिया, हैंडलिंग करना आया अथवा नहीं। यह तो सब
टी-छोटी बातें हैं। मुरब्बी बच्चों का पुरुषार्थ अभी तक इन बातों का नहीं
ा चाहिए। अभी का पुरुषार्थ सर्वशक्तियों के स्टॉक के भरने का होना
हिए। मुरब्बी बच्चे अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान, मर्यादा पुरुषोत्तम।

9.3 एकाग्रता से सर्व शक्तियों की प्राप्ति

एक ही समय, एक ही संकल्प, यह एकाग्रता की शक्ति अति श्रेष्ठ है ।
संगठन की एक संकल्प की एकाग्रता की शक्ति जो चाहे वह कर सकती
। जहाँ एकाग्रता की शक्ति है वहाँ सर्वशक्तियाँ साथ हैं। इसलिए एकाग्रता

हुए विश्व की आत्माओं के बीच नजर आयेंगे। महारथियों का हर संकल्प पर पहले से ही अटेन्शन रहता है। महारथियों का चेकिंग का रूप भी यह है, सर्वशक्तियों में किस शक्ति का कितना स्टॉक जमा है? उस जमा किये हुए स्टॉक से कितनी आत्माओं का कल्याण कर सकते हैं? जैसे स्थूल की देख-रेख करना और जमा करना यह डयूटी है, वैसे ही सर्व शक्तियों के स्टॉक जमा करने की भी जिम्मेवारी है, यह होता है आलराउण्डर का। हर चीज़ के स्टॉक को आवश्यकता प्रमाण जमा करना। अमृतवेले उठकर अपने को अटेन्शन के पट्टे पर चलाना, तो पट्टे पर गाड़ी ठीक चलेगी। फिर नीचे-ऊपर होना सम्भव ही नहीं। सारे विश्व की जिम्मेवारी तुम बच्चों पर है। तो अभी यह स्टॉक जमा करने की चैकिंग रखनी है।

सर्वशक्तिवान का गायन है, वरदानी बन एक सेकेंड में भक्तों को वरदान देना। वरदान देने में मेहनत नहीं लगती। वर्सा पाने में मेहनत है। लास्ट स्टेज है ही वरदानीमूर्त। तो ऐसा अपना स्वरूप, सदा वरदानी अपने आप को साक्षात्कार होता है? इससे ही अंदाज लगा सकते हो। फिर वरदानीमूर्त शक्तियों के आगे सभी आयेंगे। इसके लिए एक तरफ वरदान का बीज पड़ेगा। तो अपने में सर्व शक्ति जमा करनी हैं। ऐसे वरदानीमूर्त बनो और बनाओ।

अपने को क्या लाइट हाउस और माइट हाउस समझकर चलते हो? सिर्फ लाइट और माइट समझकर नहीं लेकिन लाइट हाउस और माइट हाउस। अर्थात् लाइट और माइट देने वाले दाता, हाउस तब बन सकेंगे जब उनके अपने पास इतना स्टॉक जमा हो। अगर स्वयं सदा लाइट स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते जो वह अन्य आत्माओं को लाइट हाउस बन लाइट नहीं दे सकते। जो स्वयं ही मास्टर सर्वशक्तिवान होते हुए अपने प्रति भी सर्वशक्तियों को यूज नहीं कर सकते तो वे माइट हाउस बन अन्य आत्माओं को सर्वशक्तियों को दान कैसे दे सकते हैं? अब स्वयं से पूछो कि मैं क्या लाइट और माइट

ानना। पहले बाप को परखेंगे तब जानेंगे या पहचान सकेंगे। परखने की ाक्ति है नम्बर वन। परखना जिसको कामन शब्दों में पहचान कहा जाता है। हले-पहले ज्ञान का आधार है बाप को पहचानना अर्थात् परखना कि यह ाप का कर्त्तव्य चल रहा है। पहले परखने की शक्ति आवश्यक है। परखने ी शक्ति को नॉलेजफुल की स्टेज कहते हैं।

9.5 परखने की शक्ति को तीव्र बनाओ

परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए मुख्य कौन-सा साधन है? रखने का तरीका कौन-सा होना चाहिए? आत्मिक स्थिति। आत्मिक स्थिति के साथ-साथ यथार्थ रूप से वही परख सकता है जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ ंकल्प नहीं चलते होंगे। उनकी बुद्धि एक की ही याद में, एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में होगी। वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे, तो उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के समय भी आपने व्यर्थ संकल्प की मिक्सचरिटी होगी। इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं सकेंगे। तो मूल रहस्य निकला बुद्धि की सफाई, जितना बुद्धि की सफाई होगी उतना ही योगयुक्त अवस्था में रह सकेंगे। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। एक की याद को छोड़ अनेक तरफ बुद्धि जाने के कारण शक्तिशाली नहीं रहते। वैसे भी जब बुद्धि बहुत कार्य तरफ लगी हुई होती है, तो अनुभव किया होगा बुद्धि में विकनेस, थकावट महसूस होती है। और जो भी है यथार्थ रूप से निर्णय नहीं कर सकेंगे। इसी रीति व्यर्थ संकल्प, विकल्प जो चलते हैं यह भी बुद्धि को थकावट में लाते हैं। थकी हुई कोई भी आत्मा न परख सकेगी, न निर्णय कर सकेगी। कितना भी होशियार होगा तो थकावट में उनके परखने, निर्णय करने में फर्क पड़ जाता है। आप बुद्धि की सफाई से क्या से क्या कर सकते हो। वह हाथ की सफाई से झट से बदल देते हैं। देरी नहीं लगती। इसलिए कहते हैं

ही सहज सफलता की चाबी है। एक श्रेष्ठ आत्मा के एकाग्रता की शक्ति भी कमाल कर दिखा सकती है तो जहाँ अनेक श्रेष्ठ आत्माओं के एकाग्रता की शक्ति संगठित रूप में है वह क्या नहीं कर सकते। जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ श्रेष्ठता और स्पष्टता स्वत: होगी। किसी भी नवीनता की इन्वेन्शन के लिए एकाग्रता की आवश्यकता है। चाहे लौकिक दुनिया की इन्वेन्शन हो, चाहे आध्यात्मिक इन्वेन्शन हो। एकाग्रता अर्थात् एक ही संकल्प में टिक जाना। एक ही लगन में मगन हो जाना। एकाग्रता अनेक तरफ का भटकना सहज ही छुड़ा देती है। जितना समय एकाग्रता की स्थिति में स्थित होंगे उतना समय देह और देह की दुनिया सहज भूली हुई होगी। क्योंकि उस समय के लिए संसार ही वह होता है, जिसमें ही मगन होते। एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मैसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो, किसी भी आत्मा की आवाज को कैच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो। सिवाय एक बाप के और कोई भी संकल्प न हो। एक बाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो। एक ही एक हो। पुरुषार्थ द्वारा एकाग्र बनना वह अलग स्टेज है लेकिन एकाग्रता में स्थित हो जाना, वह स्थिति इतनी शक्तिशाली है। ऐसी श्रेष्ठ स्थिति का एक संकल्प भी बाप समान का बहुत अनुभव कराता है। अभी इस रूहानी शक्ति का प्रयोग करके देखो। इसमें एकान्त का साधन आवश्यक है।

9.4 सर्व श्रेष्ठ शक्ति परखने की शक्ति

जैसे पढ़ाई में अनेक सब्जेक्ट्स होते हैं लेकिन उनमें से एक विशेष होता है। वैसे ही सर्व शक्तियाँ आवश्यक तो हैं लेकिन इन शक्तियों में से सभी से श्रेष्ठ शक्ति कौन-सी है? जो आवश्यक है, जिसके बगैर महारथी वा महावीर बनना मुश्किल है। (परखने की शक्ति) सेल्फ रियलाइजेशन करना भी परखने की शक्ति है। सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ ही है अपने आपको परखना या

ोगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गंवायेंगे। एनर्जी वेस्ट न होकर जमा होती ायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की ाक्ति बढ़ेगी।

9.7 निर्णय शक्ति बढ़ाने की कसौटी – ब्रह्मा बाबा

समय की विशेषताओं को जानते हुए अपने में भी विशेषता धारण करो तो ्वत: ही श्रेष्ठ आत्मा बन जायेंगे। लक्ष्य तो सभी का श्रेष्ठ आत्मा बनने का है ा। लक्ष्य श्रेष्ठ बनने का होते हुए भी पुरुषार्थ साधारण क्यों चलता है? लक्ष्य को ही भूल जाते हो। कोई भी विघ्न का निवारण करने की शक्ति कम क्यों ै? निवारण न करने के कारण ही जो लक्ष्य रखा है उसको पा नहीं सकते हो। श्रीमत पर चलने वाले का तो जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण होंगे। अगर लक्ष्य श्रेष्ठ है और लक्षण साधारण हैं तो इसका कारण? क्योंकि विघ्नों को निवारण नहीं कर पाते हो। निवारण न करने का कारण क्या है? किस शक्ति की कमी है? निर्णय शक्ति, जब तक निर्णय नहीं कर पाते तब तक निवारण नहीं कर पाते। अगर निर्णय कर लो तो निवारण भी कर लो और निर्णय क्यों नहीं कर पाते हो, क्योंकि निर्विकल्प नहीं होते। व्यर्थ संकल्प, विकल्प बुद्धि में होने के कारण, बुद्धि क्लीयर न होने के कारण निर्णय नहीं कर पाते हो। निवारण नहीं तो आवरण अवश्य है। तो अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए सहज साधन कौन-सा दिया हुआ है? साकार बाप का हर कर्त्तव्य और हर चरित्र, यही कसौटी है। जो भी कर्म करते हो, जो भी संकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है, व्यर्थ है वा समर्थ है इस कसौटी पर देखने के बाद जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा। अगर यह कसौटी सदा साथ स्मृति में नहीं रखते हो तब मुश्किल अनुभव करते हो। है तो सहज। फिर मुश्किल क्यों हो जाता? क्योंकि युक्ति को यूज नहीं करते हो। युक्ति यूज करो तो मुक्ति ज़रूर हो जाये। चाहे संकल्पों के तूफान से,

जादूगर। आप में भी बदलने का जादू आ जायेगा। जादू चलाने के लिए जितना समय जिसको मंत्र याद रहता है, उतना उसका जादू सफल होता है। आपको भी अगर महामंत्र याद होगा तो जादू के समान कार्य होगा।

9.6 सफलता का आधार – परखने की शक्ति

अब समय ही ऐसा आ रहा है जो कि परखने की शक्ति की आपको अति आवश्यकता है, सर्विस में सफलता पाने का मुख्य साधन ही यह है। जैसे-जैसे परखने की शक्ति तीव्र हो जायेगी, वैसे-वैसे ही सफलता भी मिलती जायेगी। परख पूरी न होने के कारण जो उनको चाहिए, जिस रूप से उनकी तकदीर जग सकती है वो रूप उनको नहीं मिलता है। इसलिए ही सर्विस की सफलता कम मिलती है। वारिस कम निकलने का मतलब ही है कि उनकी रग को पूरा परख नहीं सकते हो। मरीज की पूरी परख होती है तभी तो ठीक औषधि मिलती है ना। फिर रोग भी खत्म हो जाता है। रोग खत्म हुआ, फिर क्या होगा? खास जो निमित्त बने हुये पाण्डव हैं उनको भविष्य में आने वाली बातों को परखने की शक्ति चाहिए और निर्णय करने की शक्ति भी चाहिए। निर्णय के बाद फिर निवारण की शक्ति चाहिए। तभी सामना कर सकेंगे। और सामना करने के बाद यज्ञ की प्रत्यक्षता की सफलता पाओगे।

अब इसमें सफलता तो तभी होगी जबकि परिस्थिति को परखने की शक्ति होगी। परिस्थिति को परखने से फिर परिणाम ठीक निकलता है। परखने की शक्ति बढ़ाने का क्या पुरुषार्थ है? दिल की सफाई से भी इस बात में बुद्धि की सफाई जास्ती चाहिए। संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने की पावर हो। मन का संकल्प वा बुद्धि की जजमेन्ट जो भी है। तो मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की शक्ति भी चाहिए। इन दोनों ही शक्तियों की बहुत ज़रूरत है। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। तो ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति

क्ति की अनुभूति नहीं है जिसके द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति प्त होने के कारण परिवर्तन तीव्रगति से होता है। ब्रेक देने और मोड़ने की क्ति होगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गवायेंगे। इनर्जी वेस्ट न होकर जमा ती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति ढ़ेगी। यह भी अभ्यास भट्ठी में करना चाहिए। तो अपने मन और बुद्धि को हां तक ब्रेक लगा सकते हो और मोड़ सकते हो – अपने को चेक करना है।

9.9 साइलेन्स की शक्ति की महानता

साइलेन्स की शक्ति – क्रोध अग्नि को शीतल कर देती है, व्यर्थ कल्पों की हलचल को समाप्त कर सकती है, कैसे भी पुराने संस्कार हों, ो पुराने संस्कार समाप्त कर देती है, अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज माप्त कर सकती है, तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान दे सकती है, ान्ति के सागर बाप से अनेक आत्माओं का मिलन करा सकती है, अनेक ामों से भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है, हान आत्मा, धर्मात्मा सब बना देती है, सेकण्ड में तीनों लोकों की सैर करा कती है, कम मेहनत, कम खर्चा बालानशीन करा सकती है, शान्ति की ाक्ति, समय के खज़ाने में भी एकॉनामी करा देती है अर्थात् कम समय में ादा सफलता पा सकते हैं, हाहाकार से जय-जयकार करा सकती है, सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेगी, वाणी से तीर चलाना आ गया अब शान्ति का तीर चलाओ, जिससे रेत में भी हरियाली कर सकते हो, कितना भी कड़ा पहाड़ हो लेकिन पानी निकाल सकते हैं। वर्तमान समय ान्ति की शक्ति प्रैक्टिकल में लाओ।

9.10 साइलेन्स पावर जमा करने का आधार – अन्तर्मुखी और एकांतवासी स्थिति

ाम रूहानी सेना है लेकिन विशेष साइलेन्स की शक्ति है। शान्ति देने

चाहे कोई भी सम्बन्ध द्वारा वा प्रकृति वा समस्याओं द्वारा कोई भी तूफान वा विघ्न आते हैं तो उससे मुक्ति न पाने का कारण युक्ति नहीं। युक्ति-युक्त नहीं बने हो। जितना योग-युक्त, युक्तियुक्त होंगे। उतना सर्व विघ्नों से मुक्त ज़रूर होंगे।

9.8 परखने और निर्णय शक्ति का आधार – साइलेन्स की शक्ति

साइलेन्स अर्थात् शान्त स्वरूप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। एक – परखने की शक्ति, दूसरी – निर्णय करने की शक्ति। यही विशेष दो शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं का सहज साधन हैं। परमार्थ मार्ग में विघ्न विनाशक बनने का साधन है – माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना। परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है। जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है। वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं में तीव्रगति का परिवर्तन कम है। क्योंकि माया के रॉयल ईश्वरीय रोल्ड-गोल्ड को रीयल गोल्ड समझ लेते हैं। जिस कारण वर्तमान न परखने के कारण बोल क्या बोलते हैं? मैंने जो किया वा कहा, वह ठीक बोला। मैं किसमें राँग हूँ। ऐसे ही तो चलना पड़ेगा। राँग होते भी अपने को राँग नहीं समझेंगे। कारण? परखने की शक्ति की कमी। परखने की शक्ति न होने के कारण यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकते। इसलिए परिवर्तन की तीव्रगति चाहिए। समय तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है लेकिन समय प्रमाण परिवर्तन होना और स्व के श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन होना, इसमें प्राप्ति की अनुभूति में रात-दिन का अन्तर है। जैसे एक होते हैं मालिक, दूसरे होते हैं थोड़े से शेयर्स लेने वाले। इसका कारण क्या हुआ? साइलेन्स की

र जितना जो महान शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो वाणी शुद्ध संकल्प सूक्ष्म हैं इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा। आपके क्त आपके जड़ चित्रों से शान्ति का अल्पकाल का अनुभव करते हैं। ज्यादा रके मांगते भी शान्ति हैं क्योंकि शान्ति में सुख समाया हुआ है। इसके लिए अन्तर्मुखता और एकान्तवासी' बनने की आवश्यकता है। कई बच्चे कहते - एकान्तवासी बनने का समय नहीं मिलता। अन्तर्मुखी स्थिति का अनुभव रने का समय नहीं मिलता लेकिन इसके लिए कोई इकट्ठा आधा व एक टा निकालने की आवश्यकता नहीं है। सेवा की प्रवृत्ति में रहते भी बीच-च में इतना समय मिल सकता है, जो एकान्तवासी बनने का अनुभव करो।

एकान्तवासी अर्थात् कोई भी एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित होना। ह बीज रूप स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे लाइट हाउस -माइट हाउस ाति में स्थित हो जाओ अर्थात् विश्व को लाइट-माइट देने वाले, इस ुभूति में स्थित हो जाओ। चाहे फरिश्तेपन की स्थिति द्वारा औरों को भी व्यक्त स्थिति का अनुभव कराओ। एक सेकण्ड वा एक मिनिट अगर इस ाति में एकाग्र हो स्थित हो जाओ तो यह एक मिनिट की स्थिति स्वयं ापको और औरों को भी बहुत लाभ दे सकती है। महत्त्व जानने वाले को मय स्वत: ही मिल जाता है, महत्त्व नहीं है तो समय भी नहीं मिलता। एक वरफुल स्थिति में अपने मन को, बुद्धि को स्थित करना ही एकान्तवासी ना है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा, सम्पूर्णता की समीपता की निशानी– ा में रहते, समाचार भी सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते थे। एक घण्टे समाचार को भी पाँच मिनिट में सार समझ बच्चों को भी खुश किया और ाथी अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का भी अनुभव कराया। सम्पूर्णता की शानी - अन्तर्मुखी एकान्तवासी स्थिति चलते-फिरते सुनते, करते अनुभव ना। सब सेवा के साधन होते हुये भी साइलेन्स की शक्ति की सेवा की ावश्यकता होगी। क्योंकि साइलेन्स की शक्ति अनुभूति कराने की शक्ति

वाली अहिंसक सेना है। यह शान्ति की शक्ति इस रूहानी सेना के विशेष शस्त्र हैं। शान्ति की शक्ति सारे विश्व को अशान्त से शान्त बनाने वाली है, न सिर्फ मनुष्य आत्माओं को लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाली है, वाणी की शक्ति वा स्थूल साधनों से ज्यादा साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। साइलेन्स की शक्ति के साधन भी श्रेष्ठ हैं। जैसे वाणी के सेवा के साधन चित्र, प्रोजेक्टर वा वीडियो आदि बनाते हो ऐसे शान्ति की शक्ति के साधन – शुभ संकल्प, शुभ भावना और नयनों की भाषा है। साइलेन्स की शक्ति के आधार पर नयनों की भाषा से नयनों द्वारा बाप का अनुभव करा सकते हो, आपके मस्तक के बीच चमकता हुआ आपका वा बाप का चित्र स्पष्ट दिखा सकते हो। ऐसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा आपका चेहरा, आप द्वारा भिन्न-भिन्न याद की स्टेजेस का स्वत: ही अनुभव करायेगा। अनुभव करने वालों को यह सहज महसूस होगा कि इस समय बीजरूप का अनुभव हो रहा है वा फरिश्ते रूप का अनुभव हो रहा है वा भिन्न-भिन्न गुणों का अनुभव आपके इस शक्तिशाली फेस से स्वत: ही होता रहेगा। जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को स्नेह की, सहयोग की भावना उत्पन्न कराते हो ऐसे आपकी शुभ भावना और स्नेह की भावना की स्थिति में स्वयं स्थित होंगे। आपकी शुभ भावना उन्हों की भावना को प्रज्वलित करेगी। जैसे वाणी द्वारा सारा स्थूल कार्य करते रहते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति के श्रेष्ठ साधन - शुभ संकल्प की शक्ति से स्थूल कार्य भी ऐसे ही सहज कर सकते हो वा करा सकते हो। यह शुभ संकल्प सम्मुख बात करने वा टेलीफोन, वायरलेस द्वारा कार्य कराने का अनुभव करायेगा। ऐसे साइलेन्स की शक्ति में विशेषतायें हैं। साइलेन्स की शक्ति कम नहीं है।

आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे। क्योंकि जितना जो महान शक्तिशाली शस्त्र होता है वह कम समय में कार्य ज्यादा करता है।

च्चे सदा शान्ति के महादानी-वरदानी आत्मायें हैं। शान्ति की किरणें विश्व
मास्टर ज्ञान सूर्य बन फैलाने वाले हैं। यही नशा है ना कि बाप के साथ-साथ
म भी मास्टर ज्ञान-सूर्य हैं वा शान्ति की किरणें फैलाने वाले मास्टर सूर्य हैं।
पनी वृत्ति द्वारा, इस आत्मा को भी अर्थात् हमारे इस भाई को भी बाप का
र्सा मिल जाए। इस शुभ-वृत्ति वा शुभ भावना से अनेक आत्माओं को
नुभव करा सकते हो, क्यों? भावना का फल अवश्य मिलता है। आप
बकी श्रेष्ठ भावना है, स्वार्थ रहित भावना है, रहम की भावना है। कल्याण
ी भावना है। ऐसी भावना का फल नहीं मिले यह हो नहीं सकता। जब बीज
ाक्तिशाली है तो फल ज़रूर मिलता है। सिर्फ इस श्रेष्ठ भावना के बीज को
दा स्मृति का पानी देते रहो। तो समर्थ फल, प्रत्यक्ष फल के रूप में अवश्य
ाप्त होना ही है। बापदादा ने भयभीत बच्चों को सदा काल की सुखमय,
ान्तिमय जीवन देने के लिए आप सभी बच्चों को शान्ति के अवतार के रूप
निमित्त बनाया है। शान्ति की शक्ति से बिना खर्चे कहाँ से कहाँ पहुँच सकते
ो? इस लोक से भी परे। अपने स्वीट होम में कितना सहज पहुँचते हो।
ेहनत लगती है? शान्ति की शक्ति से प्रकृतिजीत मायाजीत कितना सहज
नते हो। किस द्वारा? आत्मिक शक्ति द्वारा। एटामिक और आत्मिक दोनों
ाक्तियों का जब मेल हो जायेगा तो आत्मिक शक्ति से एटामिक शक्ति भी
तोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी। तब दोनों शक्तियों के मिलन
ारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी। क्योंकि शान्ति, सुखमय
र्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ हैं। तो सतोप्रधान बुद्धि अर्थात् सदा श्रेष्ठ,
ात्कर्म करने वाली बुद्धि। सत् अर्थात् अविनाशी भी है, हर कर्म, अविनाशी
ाप की स्मृति से अविनाशी प्राप्ति वाला होगा। इसलिए कहते हैं – सत् कर्म।
ो ऐसे सदा के लिए शान्ति देने वाले, शान्ति के अवतार हो।

है। वाणी की शक्ति का तीर बहुत करके दिमाग तक पहुँचता है और अनुभूति का तीर दिल तक पहुँचता है। साइलेन्स की शक्ति के साधनों द्वारा नजर से निहाल कर देंगे। शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे। शुभ भावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना उत्पन्न करा लेंगे। अपने मन की एकाग्रवृत्ति, शक्तिशाली वृत्ति चाहिए। वृत्ति से वायुमण्डल न बने यह हो नहीं सकता। शक्तिशाली वृत्ति चाहिए।

9.11 शान्ति की शक्ति का महत्त्व

आज के संसार में सबसे आवश्यक चीज शान्ति है। कितना भी कोई विनाशी धन, विनाशी साधन द्वारा शान्ति लेना चाहे तो सच्ची अविनाशी शान्ति मिल नहीं सकती। आज का संसार धनवान होते भी, सुख के साधन होते फिर भी सदाकाल की शान्ति का भिखारी है। ऐसे शान्ति की भिखारी आत्माओं को आप मास्टर शान्ति दाता, शान्ति के भण्डार, शान्ति स्वरूप आत्मायें अंचली दे सर्व की शान्ति की प्यास, शान्ति की इच्छा पूर्ण करो। जितना ही शान्ति के पीछे भाग-दौड़ करते हैं उतना ही अल्पकाल की शान्ति के बाद, परिणाम अशान्ति ही मिलती है। अविनाशी शान्ति सर्व आत्माओं का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। लेकिन जन्म-सिद्ध अधिकार के पीछे कितनी मेहनत करते हैं। सेकण्ड की प्राप्ति है लेकिन सेकण्ड की प्राप्ति के पीछे पूरा परिचय न होने के कारण कितने धक्के खाते हैं, पुकारते हैं, चिल्लाते हैं, परेशान होते हैं। ऐसे शान्ति के पीछे भटकने वाले अपने आत्मिक रूप के भाइयों को भाई-भाई की दृष्टि दो। इसी दृष्टि से उन्हों की सृष्टि बदल जायेगी।

कभी स्वप्न में भी अशान्ति न आये। स्वप्न भी शान्तिमय हो गये हैं ना। शान्ति दाता बाप है, शान्ति स्वरूप आप हो। धर्म भी शान्त, कर्म भी शान्त तो अशान्ति कहाँ से आयेगी। आप सबका कर्म क्या है? शान्ति देना। शान्ति देना

9.12 तन-मन-धन और सम्बन्ध की शक्ति

लौकिक जीवन में वा अलौकिक जीवन में सफलता का आधार शक्तियाँ ही हैं। जितनी शक्तियाँ, उतनी सफलता। मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारों ही आवश्यक हैं। अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग सूली से काँटा बनने के कारण, स्वस्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर कभी बीमारी का वर्णन नहीं होता, कर्मभोग के बदले कर्मयोग की स्थिति का वर्णन करते हैं। क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। और ही परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा। अर्थात् मास्टर सर्व शक्तिवान बन शक्तियों के वरदान में से समय प्रमाण सहन शक्ति, समाने की शक्ति और समय पर शक्तियों का वरदान वा वर्सा कार्य में लाना, यही उसके लिए वरदान अर्थात् दुआ-दवाई का काम कर देती है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप द्वारा जो सर्वशक्तियाँ प्राप्त हैं, वह जैसी परिस्थिति, जैसा समय और जिस विधि से आप कार्य में लगाना चाहो वैसे ही रूप में यह शक्तियाँ आपकी सहयोगी बन सकती हैं। शक्तिशाली माजून का भी काम कर सकती हैं। सिर्फ समय पर कार्य में लगाने की अथार्टी बनो। तो तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो अर्थात् सदा स्वस्थ रहने का अनुभव कर सकते हो।

मास्टर सर्वशक्तिवान, यह स्थिति कोई कम नहीं है। यह श्रेष्ठ स्थिति भी है साथ-साथ डायरेक्ट परमात्मा द्वारा परम टाइटल भी है। इसमें कितनी खुशी और शक्ति भरी हुई है। अगर इसी एक टाइटल की स्थिति रूपी सीट पर सेट रहो तो यह सर्व शक्तियाँ सेवा के लिए सदा हाजिर अनुभव होंगी,

आपके आर्डर के इन्तजार में होंगी। इसलिए मालिक बन, योगयुक्त बन युक्तियुक्त सेवा सेवाधारियों से लो तो सदा स्वस्थ का स्वत: ही अनुभव करेंगे। इसको कहते हैं तन की शक्ति की प्राप्ति।

ऐसे ही मन की शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति। मास्टर सर्वशक्तिवान के हर संकल्प में इतनी शक्ति है जो जिस समय जो चाहे वह कर सकता है और करा भी सकता है क्योंकि उनके संकल्प सदा शुभ, श्रेष्ठ और कल्याणकारी होंगे। तो यहाँ श्रेष्ठ कल्याण का संकल्प है वह सिद्ध ज़रूर होता है और मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण मन कभी मालिक को धोखा नहीं दे सकता है, दु:ख नहीं अनुभव करा सकता है। मन एकाग्र अर्थात् एक ठिकाने पर स्थित रहता है। जहाँ चाहो मन को वहाँ स्थित कर सकते हो। कभी मन उदास नहीं हो सकता है क्योंकि वह सेवाधारी दास बन जाता है। यह है मन की शक्ति जो अलौकिक जीवन में वर्से वा वरदान में प्राप्त है।

तीसरी है धन की शक्ति अर्थात् ज्ञान धन की शक्ति। ज्ञान धन स्थूल धन की प्राप्ति स्वत: कराता है। जहाँ ज्ञान धन है, वहाँ प्रकृति स्वत: ही दासी बन जाती है। यह स्थूल धन सुख के साधन के लिए है। ज्ञान-धन पदमापदम पति बनाने वाला है। परमार्थ व्यवहार को स्वत: ही सिद्ध करता है। तो परमात्म धन वाले परमार्थी बन जाते हैं। संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं, स्वत: ही सर्व आवश्यकतायें पूर्ण होती रहती हैं। धन की इतनी शक्ति है जो अनेक जन्म यह ज्ञान-धन राजाओं का राजा बना देता है। तो धन की भी शक्ति सहज प्राप्त हो जाती है।

इसी प्रकार सम्बन्ध की शक्ति। सम्बन्ध की शक्ति की प्राप्ति की शुभ इच्छा इसलिए होती है क्योंकि सम्बन्ध में स्नेह और सहयोग की प्राप्ति होती है। इस अलौकिक जीवन में सम्बन्ध की शक्ति डबल रूप में प्राप्त होती है। एक बाप द्वारा सर्व सम्बन्ध और दूसरा, दैवी परिवार द्वारा सम्बन्ध। तो सम्बन्ध द्वारा सदा नि:स्वार्थ स्नेह, अविनाशी स्नेह और अविनाशी सहयोग

सदा ही प्राप्त होता रहता है। तो सम्बन्ध की भी शक्ति है ना। वैसे भी बाप, बच्चा क्यों चाहता है? सहयोग के लिए, समय पर सहयोग मिले, तो इस अलौकिक जीवन में चारों शक्तियों की प्राप्ति वरदान रूप में, वर्से के रूप में है। जहाँ चारों प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं उसकी हर समय की स्थिति कैसी होगी? सदा मास्टर सर्वशक्तिवान। इसी को ही दूसरे शब्दों में स्व के राजे वा राजयोगी कहा जाता है।

9.13 तन-मन-धन और सम्बन्ध का श्रेष्ठ सौदा

परमात्म सौदा देने वाले और परमात्मा से सौदा करने वाली सूरतियाँ कितनी भोली हैं और सौदा कितना बड़ा किया है। दुनिया वालों ने जिन आत्माओं को ना उम्मीद, अति गरीब समझ असम्भव समझ किनारे कर दिया कि यह कन्यायें, मातायें परमात्म प्राप्ति के क्या अधिकारी बनेंगे? लेकिन बाप ने पहले माताओं, कन्याओं को ही इतने बड़े ते बड़ा सौदा करने वाली श्रेष्ठ आसामी बना दिया। ज्ञान का कलश पहले माताओं, कन्याओं के ऊपर रखा। यज्ञ माता जगदम्बा, निमित्त गरीब कन्या को बनाया। गरीब कुमारी से जगत अम्बा सो धन देवी लक्ष्मी बना दिया जो आज दिन तक भी भल कितने भी मल्टी मिलिनियर (करोड़पति) हों लेकिन लक्ष्मी से धन ज़रूर माँगेंगे, पूजा ज़रूर करेंगे। एक जन्म सौदा करने से अनेक जन्म सदा मालामाल भरपूर हो जाते हैं। और निमित्त सौदा करने वाला भल कितना भी बड़ा बिजनैसमेन हो लेकिन वह सिर्फ धन का सौदा, वस्तु का सौदा करेंगे। एक ही बेहद का बाप है जो धन का भी सौदा करते, मन का भी सौदा करते, तन का भी और सदा श्रेष्ठ सम्बन्ध का भी सौदा करते। ऐसा दाता कोई देखा? तन सदा तन्दुरुस्त रहेगा, मन सदा खुश, धन के भण्डार भरपूर और सम्बन्ध में नि:स्वार्थ स्नेह और गैरन्टी है, अनेक जन्मों की गैरन्टी देते हैं। चारों में एक की भी कमी नहीं हो सकती। चाहे प्रजा की भी प्रजा बने लेकिन उनको भी लास्ट जन्म तक

अर्थात् त्रेतायुग के अन्त तक भी यह चारों ही बातें प्राप्त होंगी। अगर सम्बन्ध की लिस्ट निकालो, कलियुग में तो कितनी लम्बी लिस्ट होगी। एक सम्बन्ध में दिल दे दिया, दूसरा वस्तुओं में भी दिल दे दी। तो दिल लगाने वाली वस्तुयें कितनी हैं, व्यक्ति कितने हैं? सबमें दिल लगाके दिल ही टुकड़ा-टुकड़ा कर दी। बाप ने अनेक टुकड़े वाली दिल को एक तरफ जोड़ दिया। तो दिया क्या और लिया क्या। और सौदा करने की विधि कितनी सहज है। सेकण्ड का सौदा है ना। ''बाबा'' शब्द ही विधि है एक शब्द की विधि है, इसमें कितना समय लगता? सिर्फ दिल से कहा ''बाबा'' तो सेकण्ड में सौदा हो गया। इतना सस्ता सौदा सिवाए इस संगमयुग के और किसी भी युग में नहीं कर सकते। आज के बड़े-बड़े नामीग्रामी धनवान, धन कमाने के बजाए धन को सम्भालने की उलझन में पड़े हुए हैं। उसी उलझन में बाप को पहचानने की फुर्सत नहीं है। अपने को बचाने में, धन को बचाने में ही समय चला जाता है। बादशाह भी हों लेकिन फिकर वाले बादशाह हैं। क्योंकि फिर भी काला धन है ना। इसलिए फिकर वाले बादशाह हैं। और आप बाहर से बिन कौड़ी ही हो लेकिन बेफिक्र बादशाह हो। बेगर होते भी बादशाह। अभी बादशाह और भविष्य में भी बादशाह हैं। आजकल के नम्बरवन धन के आसामी हो। लेकिन उनके सामने आपके त्रेता अन्त वाली प्रजा भी ज्यादा धनवान होगी। प्रजा को भी अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। तो बादशाह हुये ना। बादशाह का यह अर्थ नहीं कि तख्त पर बैठे। बादशाह अर्थात् भरपूर, कोई अप्राप्ति नहीं, कमी नहीं।

भगवान भक्ति का फल देने भी आ गये हैं लेकिन भक्त आत्मायें उलझन के कारण पत्ते-पत्ते को पानी देने में ही बिजी हैं। कितना भी आप सन्देश देते हो तो क्या कहते हैं? इतना ऊँचा भगवान इतना सहज आये – ऐसा हो ही नहीं सकता। इसलिए बाप मुस्करा रहे थे कि आजकल के चाहे भक्ति के नामीग्रामी, चाहे धन के नामीग्रामी, चाहे किसी भी आक्युपेशन के नामीग्रामी, अपने ही

कार्य में बिजी हैं। लेकिन आप साधारण आत्माओं ने बाप से सौदा कर लिया। जैसे आजकल की विनाशकारी आत्मायें कहती हैं कि विनाश की इतनी सामग्री तैयार की है जो ऐसी कई दुनियायें विनाश हो सकती हैं। बाप भी कहते, बाप के पास भी इतना खज़ाना है जो सारे विश्व की आत्मायें आप जैसे समझदार बन सौदा कर लो तो भी अखुट है। जितनी आप ब्राह्मणों की संख्या है उससे पदमगुणा भी आ जाएँ तो भी ले सकते हैं। इतना अथाह खज़ाना है। खुले दिल से सौदा करने वाले हिम्मतवान थोड़े ही निकलते हैं। इसलिए दो प्रकार की मालायें पूजी जाती हैं। कहाँ अष्ट रत्न और कहाँ 16 हज़ार का लास्ट। सौदा करने में तो एक जैसा ही है। लास्ट नम्बर भी कहता 'बाबा' और फर्स्ट नम्बर भी कहता 'बाबा।' शब्द में अन्तर नहीं है। सभी का टाइटल एक ही है – आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान को जानने वाले त्रिकालदर्शी, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। सभी को सर्वगुण सम्पन्न बनने वाली देव आत्मा कहते हैं, गुणमूर्ति कहते हैं। खज़ाना सभी के पास है। नम्बरवन सौदागर खज़ाने को स्व के प्रति मनन करने से कार्य में लगाते हैं। उसी अनुभव की अथार्टी से अनुभवी बन दूसरों को बाँटते। कार्य में लगाना अर्थात् खज़ाने को बढ़ाना। तो मनन करने वाले जिसको भी देते हैं वह स्वयं अनुभवी होने के कारण दूसरों को भी अनुभवी बना सकते हैं। इस खज़ाने की कन्डीशन (शर्त) यह है –जितना औरों को देंगे, जितना कार्य में लगायेंगे उतना बढ़ेगा। यह है – वृद्धि होने की विधि।

बाप आते ही तब हैं जब सब बच्चे बिल्कुल खाली हो जाते हैं। न तन की शक्ति, न मन की, न धन की। तन की शक्ति से खाली, इसका यादगार शिव की बरात कैसी दिखाई है? और मन की शक्ति की समाप्ति की निशानी, सदा की पुकार की यादगार है। रोज पुकारते हैं ना। धन से खाली की निशानी, अभी देखो जो थोड़ा बहुत सोना भी रहा है, उसके ऊपर भी सदा गर्वमैण्ट की आंख है। डर-डर के पहनते हैं। अगर धन है भी तो नाम क्या है? काला

धन। जितना बड़ा धनवान नाम का, उतना 90 प्रतिशत ब्लैकमनी होगी। तो नाम का धन रहा या काम का? तो जब सब तरफ से खाली हो जाते हो, सिर्फ सुदामे के सूखे चावल रह जाते हैं तब बाप आते हैं। तो सूखे चावल खाने से तो नुकसान हो जायेगा। सिर्फ चावल देते हो वह भी सूखे और लेते क्या हो? सर्वगुण, सर्वशक्तियां, सर्व खज़ाने। 36 प्रकार से भी ज्यादा वैराइटी, तो लेना हुआ या देना हुआ? सूखे चावल भी मिट्टी वाले लाते हो। मिट्टी की ही स्मृति रहती है ना। अब तो बदल गए लेकिन जब बाप के पास आए तब मिट्टी वाले ही थे। और अब रतनों से खेलते हो तो लेना और देना सदा ही चलता रहेगा।

9.14 शक्तियों को जमा करना सीखो

अपनी शक्ति को कभी भी कम नहीं करना। जब अपनी शक्ति को गंवा देते हो तो रावण भी देखता है कि यह अपनी शक्ति को गंवा बैठे हैं, तो वह खूब रुलाता है। शक्ति गंवाना अर्थात् रावण को बुलाना। इसलिए कभी भी अपनी शक्ति को कम नहीं होने देना। जमा करना सीखो। भविष्य 21 जन्मों के लिए शक्ति को जमा करना है। अभी से जमा करेंगे तो जमा होगा। इसलिए सदैव यही सोचो कि जमा कितना किया है? जैसे देवताओं के लिए गायन है, अप्राप्त कोई वस्तु नहीं देवताओं के खज़ाने में, वैसे आप ब्राह्मणों का गायन है कि अप्राप्त नहीं कोई शक्ति ब्राह्मणों के खज़ाने में क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। जब बाप का नाम ही सर्वशक्तिवान ऑलमाइटी अथॉरिटी है अर्थात् सर्वशक्तियों के खज़ाने के मालिक के बालक हो, तो ऐसे बालक जो बाप की सर्वशक्तियों के मालिक हैं तो क्या उनके पास कोई अप्राप्ति हो सकती है? खज़ाने के मालिक कभी भी यह संकल्प नहीं कर सकते कि हमारे पास सहनशक्ति नहीं है व माया को परखने की शक्ति नहीं है व ज्ञान के खज़ाने को संभालने की शक्ति नहीं है व संकल्पों को समाने की शक्ति नहीं है व खज़ाने को सुमिरण करने की शक्ति नहीं है? कितना भी कोई कार्य में बुद्धि विस्तार में

गई हुई हो लेकिन विस्तार को एक सेकण्ड में समाने की शक्ति नहीं है? ऐसे मालिक के क्या यह बोल व यह संकल्प हो सकते हैं? मालिक सदा मालिक ही होता है। अभी-अभी मालिक, अभी-अभी भिखारी, ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान होते हैं क्या? मालिक से बार-बार रॉयल भिखारी क्यों बनते हो?

10. सबसे बड़े-से-बड़ा खज़ाना

10.1 खुशी का खज़ाना

बाप ने तो खज़ाने सबको एक समान दिए हैं, किसको एक लाख, किसको हजार नहीं दिया है। सब बच्चों को अखुट खज़ाना बाप द्वारा मिला है। ऐसे अखुट खज़ाने से स्वयं को भरपूर तृप्त आत्मा समझते हो? तृप्त आत्मा को सदा बाप और खज़ाना ही सामने रहता है। सदा इसी नशे में झूमते रहते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना, जिस खज़ाने के लिए अनेक आत्मायें अनेक प्रकार के साधनों को अपनाती हैं फिर भी वचिंत हैं वह खज़ाना है – खुशी का खज़ाना। इस खुशी के लिए लोग तड़पते हैं और आप सब सदा खुशी में नाचने वाले हो। आप सबके यादगार चित्र याद हैं ना। अमृतवेले से लेकर इस खुशी के खज़ाने को यूज करो, सोचो वा अपने आप से बातें करो, आंख खुलते कौन सामने आता है। पहले-पहले संकल्प में किससे मिलन होता है? विश्व के रचता, सर्व खज़ानों के दाता, सर्व वरदानों के दाता बीज से मिलन होता है जिसमें सारा वृक्ष समाया हुआ है। सर्व आत्मायें भिखारी बन बाप की एक सेकेंड की झलक देखने की इच्छा से कितने कठिन मार्ग अपनाती हैं और आप श्रेष्ठ आत्मायें सर्व संबधों से मिलन मनाने के अनुभवों के श्रेष्ठ खज़ाने के अधिकारी हो। तो सबसे पहली खुशी की बात है – अमृतवेले सर्व सम्बन्ध से बाप से मिलन मनाना। दुनिया भिखारी है और आप बच्चे हो – इससे बड़ी खुशी और कोई हो सकती है क्या? तो अमृतवेले से इस खुशी के खज़ाने को यूज करो। यूज करना ही खज़ानों की चाबी है।

खुशी भी एक खज़ाना है जिस खज़ाने द्वारा अनेक आत्माओं को मालामाल बना सकते हो। आजकल विशेष इसी खज़ाने की आवश्यकता है। और सब हैं लेकिन खुशी नहीं है। आप सबको तो खुशियों की खान मिल गयी है। अनगिनत खज़ाना मिल गया है। खुशी के खज़ाने में भी वैराइटी है ना। कभी किस बात की खुशी, कभी किस बात की खुशी। कभी बालकपन की खुशी तो कभी मालिकपन की खुशी। कितने प्रकार के खुशी के खज़ाने मिले हैं। वो वर्णन करते हुए औरों को भी मालामाल बना सकते हो तो इन खज़ानों को सदा कायम रखो और सदा खज़ानों के मालिक बनो। सदा बाप द्वारा मिली हुई शक्तियों को कार्य में लगाते रहो। बाप ने तो शक्तियां दे दी हैं। अब सिर्फ उन्हें कार्य में लगाओ। सिर्फ मिल गया है, इसमें खुश नहीं रहो लेकिन जो मिला है वो स्वयं के प्रति और सर्व के प्रति यूज करो तो सदा मालामाल अनुभव करेंगे।

सबसे बड़ा खज़ाना है ही खुशी। अगर खुशी है तो सब कुछ है और खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। कभी-कभी धन्धेधोरी में नुकसान हो जाए तो उदास होते हो ना, उदास होगा तो हंसी नहीं आयेगी। अभी उदास नहीं हो सकते क्योंकि ये थोड़ा बहुत नुकसान होता भी है तो अखुट प्राप्तियों के आगे यह क्या बड़ी बात है। जब प्राप्तियों को भूल जाते हो तो उदास होते हैं। कुछ भी हो जाए लेकिन बाप का खज़ाना गंवाना नहीं। खुशी है बाप का खज़ाना। शरीर चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए।

ये भी नशा है कि हम दाता के बच्चे हैं, साधारण बाप के बच्चे नहीं, दाता के बच्चे हैं। तो जो स्वयं दाता है तो वो मास्टर दाता बनायेगा ना। तो क्या याद रखेंगे, कौन हो? मास्टर दाता हो। सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हो। जरा भी अप्राप्ति नहीं। कोई अप्राप्ति है? कोई-कोई रह गई है या कोई चीज चाहिए, नाम चाहिए, सेवा चाहिए, थोड़ा चांस मिल जाए, मेरा नाम हो जाए, मेरे को आगे रखा जाए, यह अप्राप्ति तो नहीं है। किसी को है तो बता दो। मकान

अच्छा मिल जाए, कार मिल जाए। कार हो तो सेवा अच्छी तरह से कर सकें। जितने साधन उतनी बुद्धि भी जाती है। जैसे हैं, जहां हैं, सदा राजी। जो थोड़े में सन्तुष्ट रहता है उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। सन्तुष्टता सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना है। जिसके पास सन्तुष्टता है, उसके पास सब कुछ है। जिसके पास सन्तुष्टता नहीं है तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होगी। एक इच्छा पूरी होगी और दस इच्छायें उत्पन्न होंगी। सदा यह गीत गाते रहो, पाना था सो पा लिया।

11. व्यर्थ और समर्थ में अन्तर

11.1 समर्थ

समर्थ अर्थात् व्यर्थ को समाप्त करने वाले। समर्थ संकल्प समर्थ बाप के मिलन का भी अनुभव कराता है। मायाजीत बनाता है। सफलता स्वरूप सेवाधारी भी बनाता है। समर्थ संकल्प वाले जो सोचेंगे वह करेंगे। सोचना, करना दोनों समान होगा। सदा धैर्यवत् गति से संकल्प और कर्म में सफल होंगे। समर्थ संकल्प सदाबहार के समान हरा-भरा बना देता है। समर्थ संकल्प सदा आत्मिक शक्ति, एनर्जी जमा करता है। समर्थ संकल्प से सदा श्रेष्ठ शान के स्मृति स्वरूप में रहते हैं। समर्थ आत्मायें कोई भी खज़ाने को व्यर्थ नहीं करेंगी। समर्थ अर्थात् व्यर्थ की समाप्ति। सबसे बड़ा खज़ाना है श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना। संगम का समय भी बड़े ते बड़ा खज़ाना है। सर्व शक्तियां यह भी खज़ाना है, सर्व गुण यह भी खज़ाना है। तो सभी खज़ानों को सफल करना ही समर्थ आत्मा की निशानी है। एक सेकण्ड, एक श्वास, एक गुण की भी कितनी वैल्यू है? अगर एक भी संकल्प वा सेकण्ड व्यर्थ जाता है तो सारा कल्प उसका नुकसान होता है। तो इतना याद रहता है? एक सेकण्ड अनेक जन्मों की कमाई या नुकसान का आधार है। गाया हुआ है, कदम में

पदमों की कमाई। एक कदम उठाने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड लगता है ना, सेकण्ड गंवाना अर्थात् पदम गंवाना। इस वैल्यू को सदा सामने रखते हुए सफल करने से सफलतामूर्त अनुभव करेंगे। सफलता, समर्थ आत्मा के लिए जन्म-सिद्ध अधिकार है। हर समय चेक करो, चाहे मनसा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से सफल ज़रूर करना है। सदा याद रखो कि जो भी अखुट खज़ाने मिले हैं वो देने ही हैं। दाता के बच्चे हो तो रोज देना ज़रूर है। जो महादानी होते हैं वो एक दिन भी देने के बिना नहीं रह सकते। अगर वाचा का चांस नहीं मिलता तो मनसा करो, मनसा का नहीं मिलता तो अपने कर्म वा प्रैक्टिकल लाइफ द्वारा सेवा करो। स्थूल सेवा करते भी मंसा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। कितना भी स्थूल कार्य हो लेकिन स्थूल कार्य करते हुए भी मनसा द्वारा वायब्रेशन फैलाने की सेवा कर सकते हो। क्योंकि जिसका जो कार्य होता है ना, वो कहां भी होगा, वह कभी अपना कार्य नहीं भूलेगा। तो आपका काम ही है विश्वकल्याण करना। वर्तमान समय की विशेष माया है - व्यर्थ सोचना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ समय गंवाना। तो माया भी कभी-कभी आ जाती है ना। तो इसका मतलब है फ्री रहते हो। सबसे बड़े ते बड़े बिजनेसमेन या इन्डस्ट्रियलिस्ट आप हो। कोई का कितना भी बड़ा व्यापार हो, धन्धा हो, फैक्टरी हो लेकिन वो अगर कमाई करेगा तो कितनी करेगा? एक दिन में एक करोड़ भी कमा ले लेकिन आपकी सारे दिन में कितनी कमाई है? माया आवे और उसको भगाओ - अभी वह समय गया। सदा बिजी रहो। फिर कोई कम्पलेन नहीं रहेगी। सबसे सहज साधन है बिजी रहो, इससे एक तो मायाजीत बन जायेंगे और दूसरा, सदा खुशी में नाचते रहेंगे।

11.2 व्यर्थ

व्यर्थ में टाइम नहीं गंवाओ। जितना-जितना श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ता

जाएगा तो विकर्मों का खाता खत्म होता जाएगा। इसलिए समय को नहीं गंवाओ। सबसे बड़े ते बड़ा मूल्य है समय का, क्योंकि इस समय का गायन है, अब नहीं तो कब नहीं। एक-एक सेकण्ड – अब नहीं तो कब नहीं। चलते-फिरते, रास्ते चलते दो बातें सुन ली, दो बातें कर ली – ये भी समय जाता है और जितना समय गंवाते हो ना तो व्यर्थ के संस्कार पक्के हो जाते हैं। कोई लंबी बात करे तो उसको शार्ट करो। सुनाया ना – व्यर्थ बात का वर्णन बहुत लंबा होता है। तो व्यर्थ को बचाओ। समझने में ऐसे होता है – मैंने तो कुछ नहीं किया, न सुना, न बोला लेकिन चलते-चलते दो शब्द उसने बोला, दो शब्द उससे बोला और व्यर्थ का खाता जमा हो जाता है। सुनने से भी व्यर्थ जमा होता है। अगर कोई व्यर्थ सुनाते भी हैं तो उसको शार्ट करो, उसको सिखाओ। यह है शुद्ध सेवा, रहम करना। रहमदिल हो ना।

12. सर्व खज़ानों से सम्पन्नता की निशानियाँ

सर्व खज़ानों के मालिक अपने खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सर्व खज़ानों से सम्पन्न है। जो सम्पन्न होता है उनकी निशानी सदा प्राप्ति स्वरूप तृप्त आत्मा दिखाई देगी। सदा खुश नजर आयेगी क्योंकि भरपूर है। यह अविनाशी खज़ाने अब भी प्राप्त हैं और भविष्य में अनेक जन्म साथ रहेंगे। यह खज़ाने खत्म नहीं होने वाले हैं। सबसे पहला खज़ाना है – ज्ञान का खज़ाना, जिस ज्ञान के खज़ाने से इस समय भी आप सभी मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हो। जीवन में रहते, पुरानी दुनिया में रहते, तमोगुणी वायुमण्डल में रहते ज्ञान के खज़ाने के आधार से इन सब वायुमण्डल, वायब्रेशन से न्यारे, मुक्त हो, कमल पुष्प समान न्यारे, मुक्त आत्मायें दुःख से, चिन्ताओं से, अशान्ति से मुक्त हो। जीवन में रहते बुराइयों के बन्धनों से मुक्त हो। व्यर्थ संकल्पों के तूफान से मुक्त हो। हैं मुक्त? तो मुक्ति और जीवनमुक्ति

इस ज्ञान खज़ाने का फल है, लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ है कि व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव का काम है आना और आप ज्ञानी तू आत्मा का काम है इनसे मुक्त, न्यारे और बाप के प्यारे रहना। तो चेक करो – ज्ञान का खज़ाना प्राप्त है? भरपूर है? सम्पन्न है? या कम है? अगर कम है तो उसको जमा करो, खाली नहीं रहना।

ऐसे ही योग का खज़ाना – जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। एक भी शक्ति अगर कम होगी तो समय पर धोखा दे देगी। आप सबका टाइटल है - मास्टर सर्वशक्तिवान, शक्तिवान नहीं सर्वशक्तिवान। अभी चान्स है। फिर सम्पन्न करने का समय समाप्त हो जायेगा तो कमी रह जायेगी। जब सूर्यवंशी बनना ही है, दृढ़ निश्चय है, बाप से और स्वयं से प्रतिज्ञा कर ली है तो अब से परसेन्टेज में किसी भी शक्ति की कमी नहीं हो। अगर कहेंगे सरकमस्टांश अनुसार, समस्याओं के अनुसार परसेन्टेज कम रह गई तो 14 कला बन जायेंगे। समय की रफ्तार अनुसार अभी नहीं तो कभी नहीं, कहो अब। कब हो जायेगा, कर लेंगे... होना तो है ही... यह नहीं सोचो, अभी-अभी करना ही है। समय की गति तीव्र हो रही है इसलिए जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, फुल पास होने का, 16 कला सम्पूर्ण बनने का तो लक्ष्य और प्रैक्टिकल में लक्षण समान हों। जब लक्ष्य और लक्षण समान होंगे तब ही बाप समान सहज बन जायेंगे।

धारणाओं का खज़ाना – धारणाओं से गुणों का खज़ाना जमा हो जाता है। गुणों में भी जैसे सर्व शक्तियाँ हैं, ऐसे ही सर्वगुण हैं, सिर्फ गुण नहीं हैं, सर्व गुण हैं। कौन से गुण की कमी है उसको चेक करके भरपूर हो जाओ।

चौथी बात है सेवा – जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई तो वह सेवा यथार्थ सेवा नहीं है। कोई ना कोई कमी है सेवा में, इसलिए खुशी नहीं मिलती। सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को

खुशनुमः, खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी। और आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं के पास का वायुमण्डल खुश हो जाये। यह है सेवा का खज़ाना, खुशी। और है सम्बन्ध-सम्पर्क, वह भी बहुत ज़रूरी है, क्यों? कई बच्चे समझते हैं बापदादा से तो सम्बन्ध है ही। परिवार में हुआ नहीं हुआ, क्या बात है। बीज से तो है ही, लेकिन आपको विश्व पर राज्य करना है ना। तो राज्य में सब सम्बन्ध में आना ही होगा। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में यथार्थ खज़ाना मिलता है दुआयें। बिना सम्बन्ध-सम्पर्क के आपका दुआओं का खज़ाना जमा नहीं होगा। माँ-बाप की दुआयें तो हैं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में भी दुआयें लेनी हैं। यथार्थ रीति अगर सम्बन्ध-सम्पर्क है तो दुआओं की अनुभूति होनी चाहिए। तो दुआओं के मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट होगा। हल्का होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट अनुभव करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इजी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊँ, नहीं आऊँ.... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इजी भी नहीं जो कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इजी भी नहीं लेकिन डबल लाइट रहेगा।

जमा किए हुए खाते वाले का विशेष गुण वा कर्तव्य क्या दिखाई देगा? जिसके पास खज़ाना जमा होगा उसकी सूरत से एक तो वर्तमान और भविष्य अर्थात् ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई देगा और उनके नयनों वा मस्तक से सर्व आत्माओं को स्पष्ट अपना नशा दिखाई देगा। उनकी सूरत ही सर्विसएबल होगी, सूरत ही सर्विस का काम करती रहेगी। जिसके पास जास्ती अथवा कम जमा होता है तो वह उनकी सूरत से दिखाई देता है। जब

तक अपनी चेकिंग का नेचरल अभ्यास हो जाये तब तक बार-बार चेकिंग करनी पड़ती है। धीरे-धीरे फिर ऐसे बन जायेंगे जो बार-बार देखने की भी दरकार नहीं पड़ेगी। सदैव सजे सजाये रहेंगे।

वर्से के अधिकारी की निशानी – अधिकारी बाप-समान सदा विश्व कल्याणकारी, रहमदिल, महाज्ञानी, गुणदानी, बाप का हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म द्वारा साक्षात्कार कराने वाला, साक्षात् बाप समान होगा। ऐसे अधिकारी का गायन है कि उसके जीवन में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। जो संपन्न होता है, उसकी आंख व बुद्धि किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नजर में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खज़ाने में सदा रमण करता रहता है। उनको दूसरा कोई अन्य संकल्प करने की भी फुर्सत नहीं रहती, क्योंकि बाप द्वारा मिले हुए खज़ाने को स्वयं के प्रति व सर्व आत्माओं के प्रति बांटने व धारण करने में वह बहुत बिजी रहता है। सबसे बड़े ते बड़ा धन्धा, सबसे बड़े ते बड़ा दान या सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य जो भी कहो, वह यही है। इतने श्रेष्ठ कार्य व श्रेष्ठ दान पुण्य को छोड़कर और क्या करेंगे? क्या फुर्सत मिलती है जो कि अन्य छोटे-छोटे व्यर्थ कार्य करने का संकल्प भी आवे या कार्य समाप्त कर लिया है क्या इसलिए फुर्सत है? समाप्त नहीं किया है तो फिर फुर्सत कहां से मिलती है? इतने बड़े कार्य में बिजी रहने वाले, फिर गुड़ियों के खेल में क्या कोई एम आब्जेक्ट होती है? क्या कोई रिजल्ट निकलता है? इतने बड़े आदमी होकर हर कदम में पदमों की कमाई करने वाले और ऐसी गुड़ियों का खेल खेलें,तो इनको महान समझदार कहेंगे? व्यर्थ संकल्प गुड़ियों का ही तो खेल है।

सहज पुरुषार्थी सदा वर्तमान और भविष्य प्रालब्ध पाने के अनुभवी होंगे। प्रालब्ध सदा ऐसे स्पष्ट दिखाई देगी जैसे स्थूल नेत्रों द्वारा स्थूल वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे बुद्धि के अनुभव के नेत्र द्वारा अर्थात् तीसरे दिव्य नेत्र द्वारा

प्रालब्ध दिखाई देगी। सहज पुरुषार्थी हर कदम में पदमों से भी ज्यादा कमाई का अनुभव करेंगे। ऐसा स्वयं को सदा संगमयुगी खज़ानों से भरपूर आत्मा अनुभव करेंगे। किसी भी शक्ति से, किसी भी गुण के खज़ाने से, ज्ञान के किसी भी पाइंट के खज़ाने से, खुशी से, नशे से कभी खाली नहीं होंगे। खाली होना गिरने का साधन है।

जमा की निशानी है - उनके चलने में, बैठने में, उठने में नशा दिखाई देता है और जितना नशा होगा उतनी खुशी होगी। तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि हम सदा जमा के नशे में रहने वाले, सदा खुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले हैं। कुछ भी हो जाए - खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आएगी और जाएगी लेकिन खुशी नहीं जाए। क्योंकि खुशी हमारी चीज है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ से आई हुई है। अपनी चीज को सदा रखते हैं। पराई चीज तो आएगी भी जाएगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है तो खुशी को खोना नहीं। चाहे यह शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। खुशी से शरीर भी जाएगा तो बढ़िया मिलेगा, पुराना जाएगा तो नया मिलेगा। डरना नहीं कि पता नहीं क्या बनेंगे। अच्छे ते अच्छा बनेंगे।

13. खज़ाने जमा करने की विधि – यूज करो।

13.1 मनसा, वाचा, कर्मणा में सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाओ

बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मनसा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। तो मनसा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क

सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मनसा को हल्का नहीं करना क्योंकि मनसा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मनसा धोखा बहुत देती है। ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है उसका अनुभव करने के लिए मनसा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना – यह भी अपने को धोखा देना है।

बापदादा देखते हैं, कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पॉवरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिजल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है – मनसा, वाचा, कर्मणा – पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है, सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ़ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता हो।

13.2 जमा की विधि यूज करो और कार्य में लगाओ।

अभी फाइनल समाप्ति का बिगुल नहीं बजा है। इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है, वेस्ट अर्थात् व्यर्थ से बचाओ और बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो। क्योंकि 63 जन्मों से बचत नहीं की है। लेकिन गँवाया है, श्वास का खज़ाना भी गँवाया, संकल्प का खज़ाना भी गँवाया, समय का खज़ाना भी गँवाया, गुणों का खज़ाना भी गँवाया, शक्तियों का खज़ाना भी गवांया तथा ज्ञान का खज़ाना भी गँवाया। कितने खाली हो गये? अभी इन सभी खातों को जमा करना है। जमा होने का समय भी अभी है और जमा करने की विधि भी बाप द्वारा सहज मिल रही है। विनाशी खज़ाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह खजानें जितना स्व के प्रति और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खज़ानों को कार्य में लगाना, यह जमा की विधि है। समय को स्वयं प्रति व औरों के प्रति शुभ कार्य में लगाओ तो जमा होता जायेगा।

ज्ञान को कार्य में लगाओ। ऐसे गुणों को, शक्तियों को जितना लगायेंगे उतना बढ़ेगा। जैसे वह लॉकर में रख देते हैं और समझते हैं, बहुत जमा है, ऐसे आप भी सोचो – मेरी बुद्धि में ज्ञान बहुत है, गुण भी मेरे में बहुत हैं, शक्तियाँ भी बहुत हैं। लॉकप करके नहीं रखो, यूज करो। जमा करने की विधि है कार्य में लगाना। स्वयं प्रति भी यूज करो, नहीं तो लूज हो जायेंगे। कई बच्चे कहते हैं कि सब खज़ाने मेरे अन्दर बहुत समाये हुये हैं, समाये हुए अर्थात् जमा हैं । तो उसकी निशानी है - स्व प्रति व औरों के प्रति समय पर काम में आये। इसलिए यथार्थ विधि नहीं होगी तो समय पर सम्पूर्णता की सिद्धि नहीं मिलेगी। धोखा मिल जायेगा। खज़ानों को कार्य में लगाओ तो बढ़ते जायेंगे फिर व्यर्थ का खाता स्वत: ही परिवर्तन हो सफल हो जायेगा।

जितना खज़ाने को स्व के कार्य में या अन्य की सेवा के कार्य में यूज करते

हो तो उतना खज़ाना बढ़ता है। खज़ाना बढ़ाने की चाबी है – यूज करना। पहले अपने प्रति। जैसे ज्ञान के एक-एक रत्न को समय पर अगर स्व प्रति यूज करते हो तो खज़ाने यूज करने से अनुभवी बन जाते हो तो अथॉर्टी का खज़ाना एड हो जाता है।

भगवान का बनना अर्थात् भाग्यवान बनना। भाग्यवान तो सभी हैं लेकिन बाप के बनने के बाद बाप द्वारा जो भिन्न भिन्न खज़ानों का वर्सा प्राप्त होता है उस श्रेष्ठ वर्से के अधिकार को प्राप्त कर अधिकारी जीवन में चलाना वा प्राप्त हुए अधिकार को सदा सहज विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करना इसमें नम्बरवार बन जाते हैं। कोई भाग्यवान रह जाते, कोई सौभाग्यवान बन जाते। कोई हज़ार, कोई लाख, कोई पद्मापद्म भाग्यवान बन जाते। क्योंकि खज़ाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि को पाना। चाहे स्वयं को सम्पन्न बनाने के कार्य में लगावें। विनाशी धन खर्चने से खुटता है, अविनाशी धन खर्चने से पद्मगुणा बढ़ता है। इसलिए कहावत है - खर्चो और खाओ। जितना खर्चेंगे-खायेंगे उतना शाहों का शाह बाप और मालामाल बनायेंगे। इसलिए जो प्राप्त हुए खज़ाने के भाग्य को सेवा अर्थ लगाते हैं वह आगे बढ़ते हैं। पद्मापद्म भाग्यवान अर्थात् हर कदम में पदमों की कमाई करने वाले और हर संकल्प से वा बोल, कर्म, सम्पर्क से पदमों को पदमगुणा सेवाधारी बन सेवा में लगाने वाले। पदमापदम भाग्यवान सदा फराखदिल, अविनाशी, अखण्ड महादानी, सर्व प्रति सर्व खज़ाने देने वाले दाता होंगे। समय वा प्रोगाम प्रमाण, साधनों प्रमाण सेवाधारी नहीं। अखण्ड महादानी। वाचा नहीं, तो मंसा वा कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा किसी-न-किसी विधि द्वारा अखुट खज़ाने के निरंतर सेवाधारी। सेवा के भिन्न-भिन्न रूप होंगे लेकिन सेवा का लंगर सदा चलता रहेगा। जैसे निरंतर योगी हो वैसे निरंतर सेवाधारी। निरंतर सेवाधारी सेवा का सदा फल निरंतर खाते और खिलाते रहते अर्थात् स्वयं ही सदा का फल खाते हुए प्रत्यक्ष स्वरूप बन जाते हैं।

13.3 जमा करने की भिन्न-भिन्न विधियाँ

खज़ाने को कितना जमा करते हैं या गंवाते हैं यह हरेक के ऊपर है। रेक को चेक करना है कि हम सारे दिन में कितना जमा करते हैं या गंवाते ? चेक ज़रूर करना है क्योंकि एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन हर जन्म लिए है। जमा करने की विधि बहुत सहज है सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। न्दी याद है तो जमा होता जायेगा। जैसे स्थूल खज़ाने में भी एक के साथ न्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना। ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी न्दी और ड्रामा में जो भी बीत चुका वह भी फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी। अगर र खज़ाने को बिन्दी रूप से याद करो तो जमा होता जाता है। बिन्दी लगाई ौर व्यर्थ से जमा होता जाता है। तो जमा का खाता बढ़ाने की विधि है बिन्दी'। और गंवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चन मार्क लगाना, ाश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या है? बिन्दी है ना! तो विधि बहुत सहज स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टॉप लगाना।

समय, संकल्प, बोल व्यर्थ भी जाता है। चलते-चलते कभी समय का हत्त्व इमर्ज रूप में कम होता है। अगर समय का महत्त्व सदा याद रहे, मर्ज रहे तो समय को और ज्यादा सफल बना सकते हो। सारे दिन में ाधारण रूप से समय चला जाता है। गलत नहीं लेकिन साधारण। ऐसे ही कल्प भी बुरे नहीं चलते लेकिन व्यर्थ चले जाते हैं। एक घण्टे की चेकिंग रो, हर घण्टे में समय या संकल्प कितने साधारण जाते हैं? जमा नहीं होते । बापदादा ने बार-बार कह दिया है कि जमा बहुत समय का चाहिए। ऐसे ी, जमा का खाता अन्त में सम्पन्न करेंगे, समय आने पर बन जायेंगे। बहुत मय का जमा हुआ बहुत समय चलता है। अगर बहुत समय का जमा का ाता होगा तो पूरा वर्सा मिलेगा इसलिए सर्व खज़ानों को जितना जमा कर कते हो उतना अभी से जमा करो। हो जायेगा, आ जायेंगे,... गे-गे नहीं रो। 'करना ही है' – यह है दृढता।

सभी पुण्य आत्मायें बने हो? सबसे बड़ा पुण्य है दूसरों को शक्ति देना। तो सदा सर्व आत्माओं के प्रति पुण्य आत्मा अर्थात् अपने मिले हुए खज़ाने के महादानी बनो। ऐसे दान करने वाले जितना दूसरों को देते हैं उतना पदमगुणा बढ़ता है। तो यह देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे उमंग रहता है? इस उमंग का प्रैक्टिकल स्वरूप है सेवा में सदा आगे बढ़ते रहो। जितना भी तन-मन-धन सेवा में लगाते उतना वर्तमान भी महादानी पुण्य आत्मा बनते और भविष्य भी सदाकाल का जमा करते। यह ड्रामा में भाग्य है जो चांस मिलता है अपना सब कुछ जमा करने का। तो यह गोल्डन चांस लेने वाले हो ना। सोचकर किया तो सिल्वर चांस, फराखदिल होकर किया तो गोल्डन चांस, तो सब नंबरवन चांसलर बनो।

कोई भी अमूल्य वस्तु को सिर्फ अपने पास स्टाक में जमा कर लिया लेकिन सिर्फ जमा करने और यूज करने की अनुभूति में अंतर है। जितना कार्य में लगाते हैं उतनी शक्ति और बढ़ती है, वह सदा नहीं करते, कभी-कभी करते हैं इसलिए सदा वालों में और कभी-कभी वालों में अंतर पड़ जाता है। आप आत्माएँ बाप द्वारा नालेजफुल बनने के कारण बहुत होशियार हो लेकिन माया भी कम नहीं है। वो भी शक्तिशाली बन सामना करती है तो सर्व खज़ाने सदा भरपूर रहें और दूसरा जिस समय जिस खज़ाने की आवश्यकता हो उस समय वो खज़ाना कार्य में लगा सको। खज़ाना है लेकिन समय पर अगर कार्य में नहीं लगा सके तो होते हुए भी क्या करेंगे? जो समय पर हर खज़ाने को काम में लगाता है उसका खज़ाना सदा और बढ़ता जाता है। तो चेक करो कि खज़ाना बढ़ता जाता है कि सिर्फ सोच करके खुश हो कि बहुत खज़ाने हैं। फिर ऐसे कभी नहीं कहो कि चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया। ज्ञानी की विशेषता है – पहले सोचे फिर कर्म करें। ज्ञानी-योगी तू आत्मा का समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकेंड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।

अमृतवेले जब बैठते हैं, अच्छी स्थिति में बैठते हैं तो दिल ही दिल में बहुत वायदे करते हैं। सिर्फ वायदे नहीं करो लेकिन जो भी वायदे करते हो वह मन-वचन और कर्म में लाओ। वायदा करना बहुत सहज है लेकिन कर्म में करना माना वायदा निभाना। तो संकल्प और कर्म को, प्लान और प्रैक्टिकल दोनों को समान बनाओ। बिजनेस वाले तो बिजनेस करना जानते हैं ना, जमा करना जानते हैं ना।

ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक। ब्राह्मण जीवन का महत्त्व बहुत बड़ा है। प्राप्तियाँ बहुत बड़ी हैं। स्वमान बहुत बड़ा है और संगम के समय बाप का बनना तो यह बड़े-से-बड़ा भाग्य है इसलिए बापदादा कहते हैं, हर खज़ाने का महत्त्व रखो। जैसे दूसरों को भाषण में संगमयुग की महिमा कितनी सुनाते हो तो जैसे दूसरों को महत्त्व सुनाते हो, महत्त्व जानते बहुत अच्छा हो। बापदादा ऐसे नहीं कहेगा कि जानते नहीं हैं। जब सुना सकते हैं तो जानते हैं तब तो सुनाते हैं। सिर्फ है क्या कि मर्ज हो जाता है। इमर्ज रूप में स्मृति रहे – वह कभी कम हो जाता है, कभी ज्यादा। तो अपना ईश्वरीय नशा इमर्ज रखो। हाँ, मैं तो हो गई, हो गया,.... नहीं। प्रैक्टिकल में हूँ – यह इमर्ज रूप में हो। निश्चय है लेकिन निश्चय की निशानी है – रूहानी नशा। तो सारा समय नशा रहे। रूहानी नशा – मैं कौन? यह नशा इमर्ज रूप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा।

तकदीर की तस्वीर को देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह! के गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है। ऐसे नहीं, यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा-सा ऐसा है, नहीं। वाह मेरा परिवार, वाह मेरा भाग्य! वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक बीमारी में भी हाय-हाय नहीं। यह भी बोझ उतरता है। अगर 10 मण से आपका 3-4 मण बोझ उतर जाये तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ उतरा। हाय

मेरा पार्ट ही ऐसा है। हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है। आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, जिसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है। प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियाँ सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी-सी चीज लगेगी। मतलब 'ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो, पॉजिटिव रूप में देखो'। कोई भी हिसाब-किताब योग अग्नि में भस्म करो। जमा का खाता बढ़ाओ।

यह चेक करो कि हर संकल्प से पदमों की कमाई जमा की? नहीं तो यह कहावत किसलिए है, हर कदम में पदम हैं? पदम कमलपुष्प को भी कहते हैं ना। तो पदम समान बनकर चलने से हर संकल्प और हर कदम में पदमों की कमाई कर सकेंगे। एक संकल्प भी बिना कमाई के नहीं होगा। अब तो ऐसा अटेन्शन रखने का समय है, एक कदम भी बिना पदम की कमाई के न हो।

सभी अपने को हर कदम में याद और सेवा द्वारा पदमों की कमाई जमा करने वाले पदमापदम भाग्यवान समझते हो? कमाई का कितना सहज तरीका मिला है। आराम से बैठे-बैठे बाप को याद करो और कमाई जमा करते जाओ। मंसा द्वारा बहुत कमाई कर सकते हो, लेकिन बीच-बीच में जो सेवा के साधनों में भाग-दौड़ करनी पड़ती है, यह तो एक मनोरंजन है। वैसे भी जीवन में चेंज चाहते हैं तो यह चेंज हो जाती है। वैसे कमाई का साधन बहुत ही सहज है, सेकेंड में पदम जमा हो जाते हैं, याद किया और बिन्दी बढ़ गई। ही सहज अविनाशी कमाई में बिजी रहो।

यह वर्ष विशेष एक्सट्रा का है इसलिए खूब उड़ती कला के अनुभवी बन आगे बढ़ते, औरों को भी आगे बढ़ाओ। बाप सभी बच्चों के गले में बांहों की माला डाल देते हैं। दिल बड़ी करेंगे तो साकार में पहुंचना भी सहज हो

जाएगा। जहां दिल है वहां धन आ ही जाता है। दिल, धन को कहां न कहां से लाता है। इसलिए दिल है और धन नहीं है यह बापदादा नहीं मानते हैं। दिल वाले को किसी न किसी प्रकार से टचिंग होती है और पहुंच जाते हैं। मेहनत का पैसा हो, मेहनत का धन पदमगुणा लाभ देता है। याद करते करते कमाते हैं ना। तो याद के खाते में जमा हो जाता है और पहुंच भी जाते हैं।

बापदादा को और कोई हीरे-मोती तो चाहिएँ नहीं। बाप को स्नेह की छोटी वस्तु ही हीरे-रत्न हैं इसलिए सुदामा के कच्चे चावल गाये हुए हैं। इसका भावार्थ यही है कि स्नेह ही छोटी-सी सूई में भी मधुबन याद आता है। तो वह भी बहुत अमूल्य रत्न है क्योंकि स्नेह का दाम है। वैल्यू स्नेह की है, चीज़ की नहीं। अगर कोई वैसे ही भल कितना भी दे देवे लेकिन स्नेह नहीं तो उसका जमा नहीं होता। और स्नेह से थोड़ा भी जमा करे तो उनका पदम जमा हो जाता है।

सेवाधारी तो सब हैं। कई अपने निमित्त स्थानों पर रहकर सेवा का चांस लेते, वह भी सेवा की स्टेज पर हैं। सेवा के सिवाए अपने समय को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। सेवा का भी खाता बहुत जमा होता है। सच्ची दिल से सेवा करने वाले अपना खाता बहुत अच्छी तरह से जमा कर रहे हैं। बापदादा के पास हरेक बच्चे का आदि से अन्त तक सेवा का खाता है। और आटोमेटिकली उसमें जमा होता रहता है। एक-एक का एकाउन्ट नहीं रखना पड़ता है। ऐसे कभी नहीं समझना, हमको तो कोई नहीं देखता, नहीं समझता। बापदादा के पास जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है, सब जमा होता है। फाइल नहीं है लेकिन फाइनल है।

13.4 सर्व खज़ानों की चाबी और उसको यूज करने की विधि

मैं कौन हूँ – इस एक शब्द के उत्तर में सारा ज्ञान समाया हुआ है। यह एक शब्द ही खुशी के खज़ाने, ज्ञान धन के खज़ाने, श्वास और समय के

खज़ाने की चाबी है। उसको सदा यूज करते रहो, तो सर्व खज़ानों से सम्पन्न सदा के लिए बन सकते हो। ऐसे सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्मा के दिल के खुशी के उमंगों में हर समय, मुख का आवाज नहीं, दिल का आवाज निकलता है – 'वाह रे मैं,' यह स्वमान के शब्द हैं, न कि देह-अभिमान के। इसलिए सदा स्वमान में रहो।

अमृतवेले स्वयं को ही स्वयं यह पाठ पक्का कराओ अर्थात् रिवाईज कराओ कि ''मैं कौन हूँ?'' अमृतवेले से ही इस चाबी को अपने कार्य में लगाओ। और अनेक प्रकार के खज़ाने सुनाये हैं उनको बार-बार देखो कि क्या-क्या खज़ाना मिला है और समय प्रमाण इन सब खज़ानों को अपने जीवन में यूज करो। तो सहज ही जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जायेगी।

13.5 जमा का खाता बढ़ाने का सहज साधन

आपकी कमाई वा जमा का खाता बढ़ाने का सबसे सहज साधन है – बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना और कोई मात्रा है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे – ये क्वेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा किसी की आवश्यकता नहीं क्योंकि मास्टर नालेजफुल बन गये तो 'कैसे' शब्द 'ऐसे' में बदल गया। बिन्दी लगाने में कितना समय लगता है? सेकण्ड से भी कम। हर समय अपना जमा का खाता बढ़ाते चलो।

13.6 स्व चेकिंग करो, चार्ट रखो, वेस्ट से बचो, जमा करो

बापदादा ने देखा, समय के खज़ाने का महत्त्व जितना रखना चाहिए उतना कई बच्चे नहीं रखते हैं। एक दिन का भी चार्ट चेक करें तो मैजारिटी का समय वेस्ट के खाते में जाता दिखाई देता है। द्वापर काल से व्यर्थ सुनने, देखने और फिर सोचने की आदत न चाहते भी आकर्षित कर लेती है और इसी कारण समय का खज़ाना वेस्ट के खाते में चला जाता है। पहले भी सुना

था कि एक सेकण्ड का भी कितना महत्त्व है। दूसरी बात, मैजारिटी व्यर्थ बोल में भी समय वेस्ट करते हैं। एक घण्टे के अन्दर भी चेक करो कि जो भी बोल बोला, हर बोल में आत्मिक भाव एवं शुभ भावना है? बोल से भाव और भावना दोनों अनुभव होती हैं। अगर बोल में शुभ भावना, श्रेष्ठ भावना नहीं है तो अवश्य माया की भावनायें हैं। वो तो अनेक हैं, ईर्ष्या, हषद, घृणा ये भावनायें चाहे किसी भी परसेन्ट में समाई हुई होती हैं। समर्थ बोल का अर्थ ही है, जिस बोल में किसी आत्मा को प्राप्ति का भाव वा सार अनुभव हो। अगर सार नहीं तो खाता जमा तो नहीं होगा ना।

हर समय चेक करो कि बाप से कितने खज़ाने मिले हैं? सभी से बड़े से बड़ा खज़ाना तो बाप मिला। पहले नंबर का खज़ाना तो ये है ना? जैसे किसी को चाबी मिल जाए तो गोया सब मिल गया। बाप मिल गया अर्थात् सभी कुछ मिल गया। और क्या मिला? ज्ञान भी है और अष्ट शक्तियां भी हैं। एक-एक शक्ति को अलग-अलग वर्णन करो तो शक्ति भी खज़ाने के रूप में है। इस प्रकार जो बाप के गुण वर्णन करते हो, वह गुण भी खज़ाने रूप में वर्णन कर सकते हो। इस रीति संगमयुग का एक-एक सेकेंड भी खज़ाना है। अगर अनेक पद्म इकट्ठे करो और संगमयुग का एक सेकेंड दूसरी तरफ रखो तो भी संगम का ही एक सेकण्ड श्रेष्ठ गिना जायेगा। क्योंकि इस एक सेकेंड में ही सदाकाल के प्रारब्ध की प्राप्ति होती है। इतने सभी खज़ाने चेक करो कि हम इन खज़ानों को अपने अंदर कहां तक धारण कर सके हैं। जो भी खज़ाने मिले हैं उनके महादानी बने हैं या अपने प्रति ही रख लिया है? महादानी जो होते हैं वह अपना भी दूसरों को देते हैं, यह भी देखो कि पवित्रता का खज़ाना कहां तक अनेक आत्माओं को दान दिया है? अतीन्द्रिय सुख का खज़ाना भी देखना है कि ज्यादा अपने प्रति लगाते हो या विश्व की सेवा अर्थ लगाते हो?

सदा पुण्य आत्मा समझते हुए हर कर्म पुण्य का करते रहो। पाप का खाता खत्म। पिछला पाप का खाता भी खत्म। क्योंकि पुण्य करते-करते पुण्य

का तरफ ऊंचा हो जाएगा तो पाप नीचे दब जाएगा। पुण्य करते रहो तो पुण्य का बैलेन्स बढ़ता रहेगा और पाप नीचे हो जाएगा। चेक करो - हर संकल्प पुण्य का संकल्प हुआ, हर बोल पुण्य के बोल हुए, व्यर्थ बोल नहीं। व्यर्थ से पाप नहीं कटेगा और पुण्य भी नहीं मिलेगा। ब्राह्मणों का काम है पुण्य करना। जितना पुण्य का काम करते हो उतना ही खुशी भी होती है। चलते-फिंरते किसको संदेश देते हो तो उसकी खुशी कितना समय रहती है। तो पुण्य कर्म सदा खुशी का खज़ाना बढ़ाता है और पाप कर्म खुशी गंवाता है। अगर कभी खुशी गुम होती है तो समझो कोई न कोई बड़ा पाप नहीं तो छोटा अंश मात्र भी ज़रूर किया होगा। देह अभिमान में आना यह भी पाप है क्योंकि बाप याद नहीं रहा तो पाप ही होगा ना। इसलिए सदा पुण्य आत्मा भव।

13.7 सदा के लिए पद्मा-पद्मपति बनने के लिए – सस्ता सौदा

इतना बड़ा सौदा एक जन्म का, जो 21 जन्म सदा मालामाल हो जाते। देना क्या और लेना क्या है। अनगिनत पद्मों की कमाई वा पदमों का सौदा कितना सहज करते हो। सौदा करने में समय भी वास्तव में एक सेकण्ड लगता है और कितना सस्ता सौदा किया? एक सेकण्ड में और एक बोल में सौदा कर लिया। दिल से माना ''मेरा बाबा'' इस एक बोल से इतना बड़ा अनगिनत खज़ाने का सौदा कर लेते हो। सस्ता सौदा है ना। न मेहनत है, न महंगा है। न समय देना पड़ता है। आप सभी सदा के लिए पद्मापति बन जाते हो।

13.8 सर्व शक्तियों का बजट बनाओ और चेकिंग करो – विश्व सेवा के लिए

आप सब भी बचत का खाता सदा स्मृति में रखो बजट बनाओ। संकल्प शक्ति, वाणी की शक्ति, कर्म की शक्ति, समय की शक्ति कैसे और कहाँ कार्य में लगानी है। ऐसे न हो यह सब शक्तियाँ व्यर्थ चली जायें। संकल्प भी

अगर साधारण हैं, व्यर्थ हैं तो व्यर्थ और साधारण दोनों बचत नहीं हुई लेकिन गंवाया। सारे दिन में अपना चार्ट बनाओ। इन शक्तियों को कार्य में कितना लगाया, कितना बढ़ाया? क्योंकि जितना कार्य में लगायेंगे उतना शक्ति बढ़ेगी। साधारण सेवा की दिनचर्या वा साधारण प्रवृत्ति की दिनचर्या इसको बजट का खाता जमा होना नहीं कहेगे। सिर्फ यह नहीं चेक करो कि यथाशक्ति सेवा भी की, पढ़ाई भी की, किसको दु:ख नहीं दिया। जितनी और जैसी शक्तिशाली सेवा करनी चाहिए उतनी की? जैसे बापदादा डायरेक्शन देते हैं कि मैं-पन का, मेरेपन का त्याग ही सच्ची सेवा है, ऐसे सेवा की? उल्टा बोल नहीं बोला लेकिन ऐसा बोल बोला जो किसी नाउम्मीद को उम्मीदवार बना दिया। हिम्मतहीन को हिम्मतवान बना दिया। खुशी के उमंग-उत्साह में किसको लाया? वह है जमा करना। ऐसे ही दो घण्टा, चार घण्टा बीत गया, वह बचत नहीं हुई। हर शक्ति को कर्म में कैसे लगावें यह प्लैन बनाओ। ईश्वरीय बजट ऐसा बनाओ जो विश्व की हर आत्मा कुछ न कुछ प्राप्त करके ही आपके गुणगान करे। सभी को कुछ न कुछ देना ही है। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवनमुक्ति दो, मनुष्य आत्मायें तो क्या प्रकृति को भी पावन बनाने की सेवा कर रहे हो। ईश्वरीय बजट अर्थात् सर्व आत्मायें प्रकृति सहित सुखी वा शान्त बन जायें।

13.9 बचत (एकॉनामी) की स्कीम बनाओ – वेस्ट मत करो, वेट कम करो

एक वेस्ट मत करो और दूसरा वेट कम करो। इन दो बातों पर विशेष अटेन्शन चाहिए। अपनी शक्तियाँ वा समय वेस्ट करने से जमा नहीं होती और जमा न होने के कारण, जो खुशी वा शक्तिशाली स्टेज का अनुभव होना चाहिए वह चाहते हुये भी नहीं कर सकते। जैसा आप श्रेष्ठ आत्माओं का विश्व कल्याणकारी बनने का कार्य है – उसी प्रमाण समय वा शक्तियाँ न सिर्फ अपने प्रति लेकिन अनेक आत्माओं की सेवा प्रति भी स्टाक जमा होना

चाहिए। क्योंकि विश्व की सर्व आत्मायें आप श्रेष्ठ आत्माओं का परिवार है। जितना बड़ा परिवार होता है उतना ही एकॉनोमी का ख्याल रखा जाता है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी का कार्य उठाने वाली आत्मायें अगर जमा न होगा तो कार्य कैसे सफल कर सकेंगे? ड्रामानुसार होना ही है। यह हुई नालेज की बात। लेकिन ड्रामा में मुझे भी निमित्त बन सेवा द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति करनी है, यह लक्ष्य रखते हुये हर खज़ाने का बजट बनाओ। बजट में क्या लक्ष्य रखना है? स्लोगन याद है – ''कम खर्च बाला नशीन''। हर खज़ाने को चेक करो कि कितना जमा है? हर सब्जेक्ट में फुल पास होना है, हर खज़ाने की बचत करो और बजट बनाओ। हर सेकण्ड, संकल्प वा स्वयं के प्रति शक्तिशाली बनाने अर्थ वा सर्व आत्माओं की सेवा अर्थ कार्य में लगाओ। दूसरी बात, वेट कम करो, एक तो पिछले जन्मों का रहा हुआ हिसाब-किताब का बोझ समाप्त करने में लगे रहो लेकिन यह बोझ बड़ी बात नहीं है। ब्राह्मण बन कर वा ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाकर विश्व-कल्याणकारी वा विश्व सेवाधारी कहलाकर फिर भी अगर ऐसा कोई विकल्प वा विकर्म करते हैं तो वह बोझ उस बोझ से सौ गुणा है। सदैव ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा कहलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित्त न बनें जिससे सर्विस के बजाए डिस-सर्विस हो। वैसे एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते खत्म कर देती है। तीसरा - नाम विघ्न विनाशक है लेकिन विघ्न रूप बनते हैं, ऐसी आत्माओं के ऊपर समय प्रति समय के बोझ बढ़ने के कारण अनेक प्रकार के मानसिक व्यर्थ चिन्तन वा मानसिक अशान्ति, ऐसे अनेक रोग पैदा कर लेते हैं। वेट होने के कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो सकती और बाप को अर्पण किया हुआ अपना तन-मन वा ईश्वरीय सेवा अर्थ मिला हुआ धन, अपने विघ्नों के कारण वेस्ट करना अर्थात् सफलता नहीं पाते। उसके वेस्ट करने का भी बोझ चढ़ता है।

13.10 बचत की स्कीम को प्रैक्टिकल में लाओ

अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में बिन्दू रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दू रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी इविल स्प्रिट वा इविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा। और आप लोगों का शक्ति रूप ही उन्हों को मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। इविल स्प्रिट को भी मुक्त करना है। क्योंकि अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो इविल स्प्रिट वा इविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हों का अन्त होगा। किचड़ा बाहर निकलकर भस्म होगा। इसलिए उन्हों का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्या से ही मुक्त नहीं हुये होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे। इसलिए कहते हैं बचत की स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे।

13.11 सर्व खज़ानों को बढ़ाने का आधार – महादानी बनो

समाने की शक्ति अपनी परसेन्टेज में है। इस कारण से (सेंट-परसेंट) सम्पूर्ण नहीं बन पाते अर्थात सर्व बाप समान नहीं बन सकते। संकल्प सभी का है लेकिन स्वरूप में ला नहीं सकते। हर एक को अपने खज़ानों की परसेन्टेज चैक करनी चाहिए कि सभी से ज्यादा कौन-सा खज़ाना है जिसको व्यर्थ करने से कमी हो जाती है। और वह मैजारिटी व्यर्थ करते हैं। वह है समय का खज़ाना। मगर समय के खज़ाने को सदा स्वयं के वा सर्व के कल्याण के प्रति लगाते रहो तो अन्य सर्व खज़ाने स्वत: ही जमा हो जायेंगे। संकल्प के खज़ाने में सदा कल्याणकारी भावना के आधार पर, हर सेकण्ड में अनेक पदमों की कमाई जमा कर सकते हो। सर्व शक्तियों के खज़ाने को कल्याण करने के कार्य में लगाते रहने से, महादानी बनने के आधार से एक का पद्मगुणा सर्व शक्तियों का खज़ाना बढ़ता जायेगा। 'एक देना दस पाना' नहीं लेकिन 'एक देना पद्म पाना।'

13.12 सफलता की चाबी – सफल करना माना बचाना, बढ़ाना

जमा करने की विधि क्या है? कार्य में लगाना। सफल करो, अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे। ईश्वरीय संस्कारों को कार्य में नहीं लगाते हो तो वह लॉकर में रहते और पुराना काम करते रहते। तो यह चार्ट रखो कि सफल कितना किया? सफल करना माना बचाना या बढ़ाना। मंसा से सफल करो, वाणी से सफल करो। सम्बन्ध-सम्पर्क से, कर्म से, अपने श्रेष्ठ संग से, अपनी अति शक्तिशाली वृत्ति से सफल करो। ऐसे नहीं, मेरी वृत्ति तो अच्छी रहती है लेकिन सफल कितना किया? मेरे संस्कार तो है ही शान्त लेकिन सफल कितना किया? कार्य में लगाया? तो यह विधि अपनाने से सम्पूर्णता की सिद्धि सहज अनुभव करते रहेंगे। सफल करना ही सफलता की चाबी है। सहज विधि है, कार्य में लगाओ और बढ़ाओ।

यही याद रखना कि सदा सफलता का विशेष साधन है – हर सेंकेड को, हर श्वास को, हर खज़ाने को सफल करना। सफल करना ही सफलता का आधार है। किसी भी प्रकार की सफलता, चाहे संकल्प में, बोल में, कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सर्व प्रकार की सफलता अनुभव करने चाहते हो तो सफल करते जाओ, व्यर्थ नहीं जाए। चाहे स्व के प्रति सफल करो, चाहे और आत्माओं के प्रति सफल करो। तो आटोमेटिकली सफलता की खुशी की अनुभूति करते रहेंगे क्योंकि सफल करना अर्थात् वर्तमान के लिए सफलता और भविष्य के लिए जमा करना है। जितना इस जीवन में समय सफल करते हो तो समय की सफलता के फलस्वरूप राज्य भाग्य का फुल समय राज्य अधिकारी बनते हो। हर श्वास सफल करते हो, इसके फलस्वरूप अनेक जन्म सदा स्वस्थ रहते हो। कभी चलते-चलते श्वास बंद नहीं होगा, हार्ट

फेल नहीं होगा। ज्ञान के खज़ाने को सफल करने से समझदार बन जाते हो जो भविष्य में अनेक वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ती। शक्तियों के खज़ाने को सफल करने से भविष्य में किसी भी शक्ति की कमी नहीं होती। गुणों का खज़ाना सफल करने के फलस्वरूप ऐसे गुणमूर्त बनते हो जो आज लास्ट समय में भी आपके जड़ चित्र का गायन सर्व गुण सम्पन्न देवता के रूप में हो रहा है। ऐसे हर एक खज़ाने की सफलता के फलस्वरूप का मनन करो।

13.13 विशेष ध्यान से जमा करो, विशेष बनो

वर्तमान समय सभी क्या विशेष पुरुषार्थ कर रहे हैं? संदेश देना यह तो साधारण बात है। विशेष आत्मा बनने के लिए विशेष कार्य भी करना पड़ेगा। आजकल दुनिया की जो विशेष आत्मायें हैं उन पर विशेष ध्यान देना है। एक विशेष आत्मा के ऊपर ध्यान देने से अनेकों का ध्यान स्वत: ही खिंच जायेगा। विशेष आत्मा पर ध्यान देने से वह विशेष नहीं, तुम विशेष बनेंगे। विशेष ध्यान से कोई भी व्यर्थ संकल्प, कर्म वा समय नहीं जायेगा। शक्ति अगर जमा हो जाती है तो विशेष सर्विस भी सहज हो जाती है। तो अब पुराने हिसाब-किताब के चौपड़े को खत्म कर नया चौपड़ा बनाना है। जो जितना क्वालिफाइड होता है उतना ही उसकी वैल्यू होती है। वैल्यूएबुल चीज को भी साधारण स्थान पर नहीं रखा जाता है। उसको विशेष स्थान दिया जाता है। तो क्वालिफिकेशन्स को सामने रख फिर नोट करते जाओ कि कितने परसेन्ट बने हैं। बापदादा के पास बच्चों के मन के संकल्पों की हर सेकंड की रेखायें स्पष्ट दिखाई देती हैं, रेखाओं को देख बापदादा ने मुस्कराते हुए बच्चों के विशेष दो प्रकार के लक्षण देखे। एक सदा अन्तर्मुखी, जिस कारण स्वयं भी सदा सुख के सागर में समाये हुए और अन्य आत्माओं को भी सदा सुख के संकल्प और वायब्रेशन द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, संबंध और सम्पर्क द्वारा, सुख की अनुभूति कराते हैं। दूसरे- बाह्यमुखी, जो सदा बाह्यमुखता के कारण व्यक्त भाव,

व्यक्ति के भाव-स्वभाव और व्यक्त भाव के वायब्रेशन, संकल्प, बोल और संबंध, सम्पर्क द्वारा एक दो को व्यर्थ की तरफ उकसाने वाले, सदा अल्पकाल के मुख के लड्डू खाने और औरों को भी यही खिलाने वाले, सदा किसी न किसी प्रकार के चिंतन में रहने वाले, आन्तरिक सुख, शान्ति और शक्ति से दूर रहने वाले , कभी-कभी थोड़ी-सी झलक अनुभव करने वाले, ऐसे बाह्यमुखी भी देखे। बाप हर बच्चे के पुराने खाते कहां तक समाप्त हुए हैं, नये खाते में क्या-क्या जमा किया है, यही चौपड़े देखते हैं।

13.14 अन्तर्मुखी बनो, अविनाशी प्रोग्राम सेट करो

जितना अंडरग्राउंड अर्थात् अन्तर्मुखी रहेंगे उतना ही नई-नई इन्वेशन वा योजनायें निकाल सकेंगे। अन्तर्मुखी रहने से एक तो वायुमंडल से बचाब हो जायेगा, दूसरा, एकांत प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ती है, तीसरा, कोई भी माया के विघ्नों से सेफटी का साधन बन जाता है। अपने को सदैव अंडरग्राउंड अर्थात् अन्तर्मुखी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। अन्तर्मुखी होने से समय और संकल्पों का बचाब वा बचत भी हो जायेगी। बाहरमुखता में आते भी अन्तर्मुख, हर्षितमुख, आकर्षणमूर्त भी रहेंगे, कर्म करते हुए यह प्रैक्टिस करनी है। जब प्रोग्राम सेट करेंगे तब ही समय की बचत और सफलता अधिक हो सकेगी। यह प्रोग्राम बीच-बीच में बनाते रहो लेकिन सदाकाल के लिए।

13.15 अपना रजिस्टर साफ रखो

रोज रात को अपना रजिस्टर साफ होना चाहिए। जो हुआ वह योग की अग्नि से भस्म करो। जैसे कांटों को भस्म कर नाम-निशान गुम कर देते हो ना। इस रीति अपने नालेज की शक्ति और याद की शक्ति, विल-पॉवर और कन्ट्रोलिंग पॉवर से अपने रजिस्टर को रोज साफ रखना चाहिए। जमा न हो। एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की दूसरे दिन भी लकीर न

रहे अर्थात् कर्जा नहीं रहना चाहिए। बीती सो बीती, फुल स्टॉप। ऐसे रजिस्टर साफ रखने वाले वा हिसाब को चुक्तू करने वाले सफलतामूर्त सहज बन सकते हैं।

13.16 स्नेह देना ही भविष्य के लिए जमा करना है

सभी आत्माओं के ऊपर अब से ही स्नेह का राज्य करना है। आर्डर नहीं चलाना है। अभी से विश्व-महाराजन नहीं बन जाना है। अभी तो विश्व सेवाधारी बनना है। स्नेह देना ही भविष्य के लिए जमा करना है। यह भी देखना है कि अपने भविष्य के खाते में यह स्नेह कितना जमा किया है। ज्ञान देना सरल है लेकिन विश्व महाराजन बनने के लिए सिर्फ ज्ञानदाता नहीं बनना है, इसके लिए स्नेह देना अर्थात् सहयोग देना है। जहां स्नेह होगा वहां सहयोग अवश्य होगा। अगर यह हाईजम्प दे दिया तो सभी बातों में श्रेष्ठ सहज ही बन जायेंगे।

13.17 डबल जमा करने की विधि – डबल लॉक लगाओ

संगमयुग पर बाप द्वारा जो खज़ाने मिले हैं उन सभी खज़ानों को अच्छी तरह से जमा किया है। माया खज़ाने को लूट तो नहीं लेती। डबल लॉक लगा दो, एक बाप की याद और दूसरा सेवा, यह डबल लॉक लगाने से कभी भी माया खज़ाना लूट नहीं सकती। सदा भरपूर रहेंगे। मनसा से विश्व की सेवा करो, विश्व सेवाधारी एक काम नहीं, डबल काम करते हैं। स्थूल में हाथ चलते रहें और मनसा से शक्तियों का दान देते रहो। सदैव सेवा के समय यह ध्यान रखो कि गुणमूर्त होकर सेवा करें तो डबल जमा हो जाएगा, सदैव डबल सेवा करो।

13.18 कोई भी सेवा में विधिपूर्वक बिजी रहते हो तो सेवा की सब्जेक्ट में मार्क्स जमा हो जाएँगी

कई बच्चे शरीर के कारण वा समय न मिलने के कारण समझते हैं कि हम तो सेवा कर नहीं सकते हैं लेकिन अगर चार ही सेवाओं स्व सेवा, विश्व सेवा, यज्ञ सेवा और मनसा सेवा में से कोई भी सेवा में विधिपूर्वक बिजी रहते हो तो सेवा की सब्जेक्ट में मार्क्स जमा होती जाती हैं और यह मिले हुए नंबर फाइनल रिजल्ट में जमा हो जायेंगे। जैसे वाणी द्वारा सेवा करने वालों के मार्क्स जमा होते हैं, वैसे यज्ञ सेवा वा स्व की सेवा वा मनसा सेवा इनका भी इतना ही महत्त्व है, इसके भी इतने नंबर जमा होंगे। लेकिन जो चारों ही प्रकार की सेवा करते उसके उतने नंबर जमा होते। जो एक वा दो प्रकार की सेवा करते , उसके नंबर उस अनुसार जमा होते। फिर भी अगर चार प्रकार की नहीं कर सकते, दो प्रकार की ही कर सकते हैं तो भी निरंतर सेवाधारी हैं तो निरंतर के कारण नंबर बढ़ जाते हैं।

13.19 चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी

हर समय याद रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं'। जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आएगी। संगमयुग बड़े ते बड़ा कमाई के सीजन का युग है तो सीजन के समय क्या किया जाता है? इतना अटेन्शन रखते हो? एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गए? पदम व्यर्थ गए। जो समय के महत्त्व को जानते हैं वह स्वत: ही महान बनते हैं। स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है। नालेजफुल आत्मा कभी भी समर्थ को छोड़ व्यर्थ तरफ नहीं जा सकती। और जितना स्वयं समर्थ बनेंगे उतना औरों को समर्थ बना सकेंगे। अमृतवेले से रात्रि तक अपनी दिनचर्या को चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह

व्यर्थ के खाते में ही हो जाएगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्राफिक कंट्रोल का टाइम फिक्स किया है। ट्राफिक कन्ट्रोल करते हो या बिजी रहते हो? अपना नियम बना लेना चाहिए। चाहे टाइम कुछ बदली हो जाए लेकिन अगर अटेन्शन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घंटे के बाद करो लेकिन कर तो सकते हो। घड़ी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी है, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज़ है जो न चाहते भी अपनी तरफ खींचेगी। जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी।

14. जमा न होने के भिन्न-भिन्न कारण

योग की स्टेज की परसेन्टेज साधारण होने के कारण जमा का खाता साधारण ही है। योग का लक्ष्य अच्छी तरह से है लेकिन योग की रिजल्ट है योगयुक्त, युक्तियुक्त बोल और चलन। उसमें कमी होने के कारण योग लगाने के समय योग में अच्छे हैं लेकिन योगी अर्थात् योगी का जीवन में प्रभाव। इसलिए जमा का खाता, कोई-कोई समय जमा होता है लेकिन सारा समय जमा नहीं होता। चलते-चलते याद की परसेन्टेज साधारण हो जाती है। सेवा तो सब कर रहे हैं, अपने को बिजी रखने का पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हैं। सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की सन्तुष्टता और फल है सर्व की सन्तुष्टता। अगर सेवा की, मेहनत और समय लगाया तो दिल की सन्तुष्टता और सर्व की सन्तुष्टता, चाहे साथी, चाहे जिन्हों की सेवा की, दिल में सन्तुष्टता अनुभव करें। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा करके चले जायें नहीं। दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो। कुछ मिला, बहुत अच्छा सुना वह अलग बात है। कुछ मिला, कुछ पाया जिसको बापदादा

ने पहले भी सुनाया, एक है दिमाग तक तीर लगना और दूसरा है दिल पर तीर लगना। अगर सेवा की और स्व की सन्तुष्टता, अपने को खुश करने की सन्तुष्टता, नहीं, बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ, नहीं। दिल माने स्व की भी और सर्व की भी।

दूसरी बात है कि सेवा की और उसकी रिजल्ट अपनी मेहनत या मैंने किया यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। जमा नहीं हुआ। बापदादा ने कराया, बापदादा के तरफ अटेन्शन दिलाया, अपनी आत्मा के तरफ नहीं। यह बहन बहुत अच्छी, यह भाई बहुत अच्छा नहीं। बापदादा इन्हों का बहुत अच्छा, यह अनुभव कराना। यह है जमा का खाता बढ़ाना। इसलिए देखा गया, टोटल रिजल्ट में मेहनत ज्यादा, समय एनर्जी ज्यादा और थोड़ा-थोड़ा शो ज्यादा। इसलिए जमा का खाता कम हो जाता है। जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है - निमित्त भाव और निर्माण भाव। सेवा के समय, आगे-पीछे नहीं, सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्मान भाव, नि:स्वार्थ, शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा। सेकण्ड में अनेक घण्टों का जमा खाता, जमा हो जाता है। तो यह चेक करो कि श्रेष्ठ संकल्प द्वारा सेवा का खाता कितना जमा हुआ? कितनी आत्माओं को, किसी भी कार्य से सुख कितनों को दिया? योग लगाया लेकिन योग की परसेन्टेज किस प्रकार की रही? आज के दिन दुआओं का खज़ाना कितना जमा किया? कोई भी बात में फील करना फेल की निशानी है। कोई भी बात में फील होता है, कोई के संस्कारों में, सम्पर्क में,कोई की सर्विस में फील किया माना फेल। वह फिर फेल का जमा होता है।

बापदादा वतन में बैठकर वर्कर्स ग्रुप की सर्कस देखते हैं। पुरुषार्थी बहुत अच्छे हैं लेकिन पुरुषार्थ करते-करते कहां-कहां पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध यहां ही भोगने की इच्छा रखते हैं। तो इच्छा भी है, अच्छा भी है। लेकिन प्रालब्ध जमा करनी है। लेकिन कहां-कहां अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध

को यहां ही भोगने की इच्छा से जमा होने में कमी कर देते हैं। प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। इच्छा के बजाए अच्छा शब्द याद रखना।

वरदानीमूर्त बनने के लिए इतना जमा करना पड़े जो दूसरों को दे सकें। इतना जमा का खाता है? वा कमाया और खाया, यह रिजल्ट है? एक होता है कमाया और खाया, दूसरा होता है जमा करना और तीसरा होता है जो इतना भी नहीं कमा सकते कि स्वयं को भी चला सकें, दूसरे की मदद ले अपने को चलाना पड़ता। तो तीसरी स्टेज वा दूसरी स्टेज से पार हुए हो? वह है कमाया और खाया। और पहली स्टेज है जमा करना। तो रोज अपना बैंक, बैलेंस देखते हो? बहुत भिखारी भीख मांगने के लिए आयेंगे। तो इतना जमा करना पड़े जो सभी को दे सको। कई ऐसे भी होते हैं जो निकालकर खाते जाते हैं, मालूम नहीं पड़ता है। फिर अचानक जब खाता देखते हैं तो समझते हैं कि यह क्या हो गया। कमाया और खाया, यह तो 63 जन्मों से करते आये। अब जमा करने का समय है,गंवाने का नहीं।

आत्माओं को सिद्धि प्राप्त कराने की लगन में मगन बनो। फिर यह छोटी-छोटी बातें, जिसमें अपना समय और जमा की हुई शक्तियां गंवाते हो, वह बच जायेंगी वा जमा होती जायेंगी। जब एक सेकण्ड में अपनी पावरफुल वृत्ति से बेहद के आत्माओं की सर्विस कर सकते हो, तो अपने हद की छोटी-छोटी बातों में समय क्यों गंवाते हो? बेहद में रहो तो हद की बातें स्वत: ही खत्म हो जायेंगी। आप लोग हद की बातों में समय व्यर्थ कर और फिर बेहद में टिकने चाहते हो लेकिन अब वह समय गया। अभी तो बेहद की सर्विस पर सदा तत्पर रहो तो हद की बातें आपेही छूट जायेंगी।

अपना स्लोगन याद रखो, कम खर्चा बाला नशीन। वो लोग तो स्थूल धन में कम खर्चा बाला नशीन बनने का प्रयत्न करते हैं लेकिन आप लोगों के लिए संगमयुग में कितने प्रकार के खज़ाने हैं, समय, संकल्प, श्वास तो हैं ही

खज़ाना लेकिन उसके साथ अविनाशी ज्ञान-रत्न का खज़ाना भी है और पांचवा स्थूल खज़ाने से भी इसका संबंध है। एक-एक सेकण्ड में अनेक जन्मों की कमाई जमा कर सकते हो, हर श्वास में बाप की स्मृति रहे, अगर एक भी श्वास में बाप की याद नहीं तो समझो व्यर्थ गया। ऐसे ही ज्ञान का खज़ाना जो है उसमें भी अगर खज़ाने को संभालना नहीं आता, मिला और खत्म कर दिया तो व्यर्थ चला गया। मनन नहीं किया, मनन के बाद उस खज़ाने से जो खुशी प्राप्त होती है, उस खुशी में स्थित रहने का अभ्यास नहीं किया तो व्यर्थ चला गया ना। ऐसे ही स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना।क्योंकि ईश्वरीय कार्य में लगाते हो तो यह स्थूल धन एक का लाख गुणा बनकर प्राप्त होता है और एक व्यर्थ गंवा दिया तो एक व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन लाख व्यर्थ गंवाया। यज्ञ निवासी भी अगर यज्ञ की स्थूल वस्तु कम खर्च बाला नशीन बनकर यूज करते हैं, अपने प्रति वा दूसरों प्रति उनका भी हिसाब से भविष्य बहुत ऊंचा बनता है। ऐसे नहीं कि स्थूल धन तो प्रवृत्ति वालों के लिए साधन है लेकिन यज्ञ निवासियों के यज्ञ की सेवा भी, यज्ञ की वस्तु की एकॉनोमी रूपी धन, स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है।

अभी तो मास्टर रचयिता बन अपने भविष्य की प्रजा और भक्तों, दोनों को अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों द्वारा वरदान देने का समय आ पहुंचा है। अभी देने का समय है, न कि स्वयं लेने का समय है। अगर देने के समय भी कोई लेते रहे तो देंगे कब? क्या सतयुग में? वहां आवश्यकता होगी क्या? तो अभी ही अपनी रचना को भरपूर करने का समय है। अभी अपने प्रति समय गंवाना व अपने प्रति सर्व शक्तियों का प्रयोग करना, उसी में सर्व शक्तियों को समाप्त कर देना अर्थात् जो कमाया वह खाया ऐसा करने का समय अभी नहीं है। पहले समय था कि कमाया और खाया। लेकिन अभी सर्व आत्माओं

को देने का समय है। नहीं तो आपकी प्रजा और भक्त इन प्राप्तियों से वंचित रह जायेंगे और वे भिखारी के भिखारी ही रह जायेंगे। तो क्या दाता और वरदाता के बच्चे, वरदाता व दाता नहीं बनेंगे? जिस समय सर्व आत्माएं आपके सामने भिखारी बन लेने आयेंगी तो क्या रहमदिल बाप के बच्चे सर्व आत्माओं के प्रति रहम नहीं करेंगे?क्या उस समय उन पर तरस नहीं आयेगा? क्या उसे तड़पता हुआ देख सकेंगे? उस समय उन्हें कुछ देना पड़ेगा। अगर अभी से स्टॉक इकट्ठा नहीं करेंगे और जो कमाया, उसे खाते और खत्म करते रहेंगे तो उन्हें देंगे क्या? सदा यही सोचो कि सर्व खज़ानों के मालिक के बालक हैं। अभी बचत की स्कीम बनाओ।

अपने अनेक प्रकार के बोझ को चैक करो। एक-एक मर्यादा के ऊपर प्राप्ति के मार्क्स भी हैं और साथ-साथ सिर पर बोझ का भी हिसाब है और जिन मर्यादाओं को साधारण समझते हो उन्हों में भी उनकी प्राप्ति और बोझ का हिसाब है। संकल्प, बोल, समय और शक्तियों का खज़ाना इन सबको व्यर्थ करने से व्यर्थ का बोझ चढ़ता है। जैसे यज्ञ की स्थूल वस्तु, भोजन व अन्न अगर व्यर्थ गंवाते हो तो बोझ चढ़ता है ना? ऐसे ही जब यह मरजीवा जीवन का समय, बाप ने विश्व की सेवा अर्थ दिया है तो सर्वशक्तियां स्वयं के व विश्व के कल्याण अर्थ दी हैं, मन शुद्ध संकल्प करने के लिए दिया है और यह तन विश्व कल्याण की सेवा के लिए दिया है। बापदादा को भी रहम पड़ता है कि सभी को अभी से सम्पूर्ण बना देवें लेकिन रचयिता भी मर्यादाओं व ईश्वरीय नियमों में बंधा हुआ है। बाप भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं कर सकते। जो करेगा सो पायेगा। यह मर्यादा बाप को पूर्ण करनी पड़ती है। हाँ, इतनी मार्जिन है कि जो एक का सौ गुणा दे देते हैं। हिम्मत करने पर मदद कर सकते हैं। बाकि और कुछ नहीं कर सकते हैं।

अब का जो समय मिला है वह ब्राह्मणों के स्वयं के स्वयं के पुरुषार्थ के लिए नहीं है लेकिन हर संकल्प, हर बोल द्वारा दाता के बच्चे, विश्व की

आत्माओं प्रति प्राप्त हुए खज़ानों को देने अर्थ है। बाप ने जिस कार्य के लिए समय और खज़ाना दिया है अगर उसके बदले स्वयं प्रति समय और सम्पति लगाते हो तो यह भी अमानत में ख्यानत होती है। यह विशेष वर्ष ब्राह्मण आत्माओं के प्रति विशेष योग का प्रोग्राम होगा, दूसरे मास विशेष सेवा का होगा। वैसे ड्रामा प्लैन अनुसार यह एक्स्ट्रा समय महादानी बनने के लिए मिला है। अपना समय और सर्व प्राप्तियां, ज्ञान, गुण और शक्तियां विश्व की सेवा अर्थ समर्पण करो। ऐसे सेवा प्रति समर्पण करने से स्वयं सहज ही संपन्न हो जायेंगे।

पाप और पुण्य की गति को जानो – संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार की, पाप के खाते में जमा होती है लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ऐसे ही कर्म अर्थात् संबंध और संपर्क द्वारा किसी के प्रति शुभ भावना के बजाए और कोई भी भावना है तो यह भी पाप के खाते में जमा होता है क्योंकि यह भी दु:ख देना है। शुभ भावना पुण्य का खाता बढ़ाती है। व्यर्थ भावना वा घृणा की भावना वा ईष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है इसलिए बाप के बच्चे बने, वर्से के अधिकारी बने अर्थात् पुण्य आत्मा बने, यह निश्चय और नशा रहे तो बहुत अच्छा। लेकिन नशा और ईर्ष्या मिक्स नहीं करना। बाप के बनने के बाद प्राप्ति अनगिनत हैं लेकिन पुण्य आत्मा के साथ पाप का बोझ भी सौ गुणा के हिसाब से है। इसलिए इतने अलबेले मत बनना। बाप को जाना और वर्से को जाना, ब्रह्माकुमार कहलाया, इसलिए अब तो पुण्य ही पुण्य है, पाप तो खत्म हो गया वा सम्पूर्ण बन गए, ऐसी बात न सोचना, ब्रह्माकुमार जीवन के नियमों को भी ध्यान में रखो। मर्यादायें सदा सामने रखो। पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान बुद्धि में रखो। चैक करो, पुण्य आत्मा कहलाते हुए मनसा-वाचा-कर्मणा कोई पाप तो नहीं किया, कौन-सा खाता जमा हुआ। किसी भी प्रकार

संकल्प आत्मा के तकदीर की लकीर खींचने वाला साधन है। आपका एक संकल्प एक स्विच है जिसको ऑन कर सेकण्ड में अंधकार मिटा सकते हो।

गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। कोई भी बात बोल दी ना, समझो, अच्छा किया और बोल दिया तो आधा खत्म हो जाता है, आधा फल खत्म हो गया, आधा जमा हो गया। और जो गम्भीर होता है उसका फुल जमा होता है। कहते हैं ना, देखो जगदम्बा गम्भीर रही, चाहे सेवा स्थूल में आप लोगों से कम की, आप लोग ज्यादा कर रहे हो लेकिन ये गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। जगदम्बा की विशेषता – गम्भीरता की देवी है। बापदादा सभी को कहते हैं कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती हैं। हरेक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है। अभी बोलने की आदत बहुत हो गई है क्योंकि भाषण करते हैं ना तो जो भी आएगा वो बोल देंगे। लेकिन प्रभाव जितना गम्भीरता का पड़ता है इतना वाणी का नहीं पड़ता।

15. जमा की प्रालब्ध

बापदादा ने एक रिजल्ट सभी बच्चों की देखी। सिर्फ यहाँ वालों की नहीं, चारों ओर के बच्चों की एक बात की रिजल्ट देखी, जमा का खाता किसने कितना जमा किया है? चाहे मनसा में, चाहे वाचा से, चाहे कर्मणा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से आप सभी का चैलेन्ज है, अपने को ही नहीं लेकिन विश्व के आगे बोलते हो कि एक जन्म में 21 जन्म का जमा करना है। तो कितना जमा करना पड़े? अभी मनसा में जो जमा करते हो उससे एक तो आधा कल्प आपको मनसा से वृत्ति या वायेब्रशन फैलाने की आवश्यकता नहीं है। 21जन्म यह पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है और दूसरा द्वापर से लेकर जो आपके चित्र भिन्न -भिन्न रूप में पूजे जाते हैं, आपको पता नहीं कि

की चलन द्वारा बाप वा नालेज का नाम बदनाम तो नहीं किया। बाप के पास तो हरेक का खाता स्पष्ट है लेकिन स्वयं के आगे भी स्पष्ट करो। अपने आपको चलाओ मत अर्थात् धोखा मत दो। यह तो होता ही है, वह तो सब में है, भले सब में हो लेकिन मैं सेफ हूँ, ऐसी शुभ कामना रखो, तब विश्व सेवाधारी बन सकेंगे। संगठित रूप में एकरस एकमत स्थिति का अनुभव करा सकेंगे। अब तक भी पाप का खाता जमा होगा तो चुक्तू कब करेंगे, अन्य आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने के निमित कैसे बनेंगे? इसलिए अलबेलेपन में भी पाप का खाता बंद करो। सदा पुण्य आत्मा भव का वरदान लो। स्वयं का परिवर्तन का सोचो न कि अन्य के परिवर्तन का सोचो। स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है। इसमें पहले मैं, ऐसा सोचो, इस मरजीवा बनने में ही मजा है। खुशी से मरो, घबराओ नहीं, इसी मरने में मजा है, यह मरना तो जीना ही है, यही सच्चा जीवनदान है। वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट, इसी स्मृति से विश्व वाह-वाह करेगा।

कोई भी सत्ता को सारी हिस्ट्री में अगर यूज नहीं किया है, उसका विशेष कारण है अपनी सत्ता को मिसयूज करना। राजाओं ने राजाई गंवाई, नेताओं ने अपनी कुर्सी गंवाई, डिक्टेटर्स अपनी सत्ता खो बैठे, कारण? अपने निजी कार्य को छोड़ ऐशो-आराम में व्यस्त हो जाते हैं। कोई न कोई बात की तरफ स्वयं अधीन होते हैं इसलिए अधिकार छूट जाता है। वशीभूत होते हैं इसलिए अपना अधिकार मिसयूज कर लेते। ऐसे बाप द्वारा आप पुण्य आत्माओं को जो हर सेकेंड और हर संकल्प में सत्ता मिली हुई है, अथार्टी मिली हुई है, सर्व अधिकार मिले हुए हैं उसको, यथार्थ रीति से सत्ता की वैल्यू को जानते हुए उसी प्रमाण यूज नहीं करते। छोटी-छोटी बातों में अपने अलबेलेपन के ऐशो आराम में या व्यर्थ सोचने और बोलने में मिसयूज करने से जमा हुई पुण्य की पूँजी व प्राप्त हुई ईश्वरीय सत्ता को जैसे यूज करना चाहिए वैसे नहीं कर पाते। नहीं तो आपका एक संकल्प ही बहुत शक्तिशाली है। श्रेष्ठ ब्राह्मणों का

हम किस रूप में पूजे जाते हैं लेकिन पूज्य तो हो ना। 33 करोड़ देवताओं की मान्यता है तो आधाकल्प माननीय और पूजनीय बनते हो। उन जड़ चित्रों द्वारा भी आपकी मनसा सेवा आटोमेटिक होती रहेगी। कोई भी भगत आपके जड़ चित्रों के सामने आयेंगे तो उनको मनसा वायब्रेशन से शान्ति, खुशी, शक्ति की अनुभूति होगी, यह मनसा के जमा का प्रभाव होगा। और जो वाणी से जमा करते हैं, खाता अच्छा है, उन्हों का फिर वाणी द्वारा गायन और पूजन ज्यादा होता है। वाणी द्वारा उन्हों की महिमा और पूजा युक्तियुक्त होती है। क्योंकि वाणी द्वारा आप सभी उन्हों को सुख देते हो, शान्ति देते हो तो आधाकल्प आपका वाणी से बहुत युक्तियुक्त गायन होगा। एक गायन होगा और दूसरा युक्तियुक्त पूज्य बनेंगे। और कर्म द्वारा जो सदा हर कर्म में सेवा करने वाली आत्मायें हैं, आधा दिन किया, आधा दिन नहीं किया, कभी किया, कभी नहीं किया, नहीं। लेकिन सदा हर कर्म में अगर आपने जमा किया है तो आपके हर कर्म की पूजा होगी। बहुत थोड़े देवताओं की हर कर्म की पूजा होती है। कभी-कभी वालों की सारे दिन में कभी-कभी होगी। और स्नेह, सहयोग वाली जो आत्मायें हैं, स्नेह से, सहयोग से जो जमा करते हैं उन्हों की चाहे छोटी-सी मूर्ति भी हो, मन्दिर भले छोटा हो लेकिन उस मूर्ति से स्नेह और सहयोग का वरदान प्रैक्टिकल में अनुभव होगा। इन चारों ही बातों में जमा का खाता बढ़ाओ। कम खर्च बाला नशीन बनो। वाणी से भी ज्यादा व्यर्थ जाता है, जो ज़रूरत भी नहीं होगी उसमें भी टाइम लगा देते हैं। मनसा में जो सोचने की बात नहीं है, वह भी सोचने लग जाते हैं तो जमा का खाता कम हो जाता है। वेस्ट जाता है, जमा नहीं होता। तो विनाश के पहले जमा का खाता बढ़ाओ।

डबल पार्टधारियों की एक यह विशेषता है कि कई ऐसे अनासक्त बच्चे भी हैं जो कमाते हैं, सुख के साधन जितने जुटाने चाहें इतना जुटा सकते हैं लेकिन साधारण चलते, साधारण रहते हैं। पहले अलौकिक सेवा का विशेष

हिस्सा निकालते हैं। लौकिक कार्य, लौकिक प्रवृत्ति, लौकिक संबंध, सम्पर्क निभाते भी हैं लेकिन अपनी विशाल बुद्धि के कारण नाराज भी नहीं करते और ईश्वरीय कमाई के जमा का राज़ जानते हुए विशेष हिस्सा राज़युक्त हो निकाल भी लेते। इस विशेषता में गोपिकायें भी कम नहीं। ऐसी-ऐसी गोपिकाएँ भी हैं, जो लौकिक में हाफ पार्टनर कहलाती हैं लेकिन बाप के साथ सौदा करने में फुल पार्टनर हैं। ऐसी सच्ची दिल वाली फराखदिल गोपिकाएँ भी है तो पाण्डव भी हैं। ऐसे भी एकनामी और एकानामी वाले बच्चे माला के देखे जो अपने सर्व खज़ानों को जैसे समय, शक्तियां और स्थूल धन लौकिक में एकानामी कर अलौकिक कार्य में फराखदिली से लगाते हैं। अपने आराम का समय भी अपने आराम के लिए नहीं, धन का हिस्सा होते हुए भी 75 प्रतिशत अलौकिक कार्य में लगाते हैं और निमित मात्र लौकिक कार्य को निभाते हैं। ऐसे त्यागवान बच्चे सदा अविनाशी भाग्यवान हैं।

यहां भी कई राजे नहीं बने हैं लेकिन साहूकार बने हैं क्योंकि ज्ञान-रतनों का खजना बहुत है, सेवा कर पुण्य का खाता भी जमा बहुत है लेकिन समय आने पर स्वयं को अधिकारी बनाकर सफलतामूर्त बन जाएँ, वह कन्ट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर नहीं है अर्थात् नालेजफुल हैं लेकिन पावरफुल नहीं हैं। शस्त्रधारी हैं लेकिन समय पर कार्य में नहीं ला सकते हैं। स्टाक है लेकिन समय पर न स्वयं यूज कर सकते और न औरों को यूज करा सकते हैं। विधान आता है लेकिन विधि नहीं आती। ऐसे भी संस्कार वाली आत्माएँ हैं अर्थात् साहूकार संस्कार वाली हैं जो राज्य अधिकारी आत्माओं के सदा समीप के साथी ज़रूर होते हैं लेकिन स्व अधिकारी नहीं होते।

16. सर्व खज़ानों का खाता भरपूर हो –तब कहेंगे पास विद् ऑनर

सर्व खज़ानों का खाता भरपूर हो तब कहेंगे फुल मार्क्स अर्थात् पास विद् ऑनर। ऐसे नहीं सोचना, एक खज़ाना अगर कम जमा है तो क्या हर्जा है

लेकिन पास विद् ऑनर बनने के लिए सर्व खज़ानों में खाता भरपूर हो। शुभ-भावना के बोल हीरे-मोती के समान हैं क्योंकि बापदादा ने कई बार यह इशारा दे दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा-सा समय है सर्व खज़ाने जमा करने का, योग की शक्तियों का खज़ाना, संकल्प का खज़ाना, बोल का खज़ाना, ज्ञान-धन का खज़ाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खज़ाने का एकाउण्ट चेक करो। जैसे स्थूल धन का एकाउण्ट चेक करते हो ना, इतना जमा है। ऐसे हर खज़ाने का एकाउण्ट जमा करो। चेक करो। सर्व खज़ाने जमा चाहिएँ। अगर पास विद् ऑनर बनना चाहते हो तो हर खज़ाने का खाता इतना ही भरपूर चाहिए जो 21 जन्म जमा हुए खाते से प्रालब्ध भोग सको। अभी समय के टू लेट की घण्टी नहीं बजी है लेकिन बजने वाली है। दिन और डेट नहीं बतायेंगे। अचानक ही आउट होगा – टू लेट। फिर क्या करेंगे? उस समय जमा करेंगे? कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है – जमा करो, जमा करो, जमा करो। क्योंकि आपका अभी ही टाइटल है - सर्वशक्तिवान, शक्तिवान नहीं है, सर्वशक्तिवान। भविष्य का भी है सर्व गुण सम्पन्न, सिर्फ गुण सम्पन्न नहीं हैं। यह सब खज़ाने जमा करना अर्थात् गुण और शक्तियाँ जमा हो रही हैं। एक-एक खज़ाने का गुण और शक्ति से सम्बन्ध है। जैसे साधारण बोल नहीं तो मधुर भाषी, यह गुण है। ऐसे हरेक खज़ाने का कनेक्शन है। विश्व कल्याणकारी आत्मायें सदा हर समय चाहे मनसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, हर समय सेवा में बिजी रहती हैं। सर्व खज़ानों से भरपूर रहने वाला ही विश्व कल्याणकारी है। सर्व खज़ानों से भरपूर आत्मा ही औरों को दे सकेगी।

17. अभी भी चांस है – बचत का खाता जमा करो

सेवा भी की तो अपनी रूहानियत से सेवा में सफलता प्राप्त की वा

सफलता जमा की? सेवा में 8 घण्टा लगाया लेकिन 8 ही घण्टे सेवा में जमा हुए? समय जमा हुआ कि आधा में जमा हुआ? आधा भागदौड़ में, सोचने में गया? श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प जमा होते हैं। तो सारे दिन में जमा का खाता नोट करो। अभी भी संकल्प ना अच्छे में, ना बुरे में होते हैं। बुरे में नहीं हुए, ये तो बच गये लेकिन अच्छे में जमा हुए? अगर मानो आपका आज के दिन का खाता बहुत कम हुआ तो कम देख करके दिलशिकस्त नहीं होना। और ही समझो अभी भी हमको चांस है जमा करने का। अपने को उमंग-उत्साह में लाओ। अपने आपसे रेस करो दूसरे से नहीं। अपने आप से रेस करो कि अगर आज 8 घण्टे जमा हुए तो कल 10 घण्टे जमा हों। दिलशिकस्त नहीं होना। क्योंकि अभी फिर भी जमा करने का चांस (समय) है, अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है।

अपनी बुद्धि रूपी टंकी में ज्ञान का पेट्रोल जमा रखो। माइनस और प्लस का हिसाब सीखे हो? और बैलेन्स निकालना भी सीखे हो? ऐसे नहीं सिर्फ जोड़ किया, कट किया लेकिन जमा करना भी सीखो। अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे, न अपने को आगे बढ़ा सकेंगे। जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये। तो यह भी देखना है, कितना जमा किया है? तीव्र पुरुषार्थी कभी विनाश की डेट का नहीं सोचते। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर अन्त में बनेंगे तो फिर बापदादा भी अन्त में थोड़ा दे देंगे।

अपने को जहां चाहो, जैसे चाहो, वैसे सैट कर सको, तो एयर कण्डीशन की सीट ले सकते हो। इसके लिए सर्व खज़ाने जमा हैं? खज़ाने सुनाने में तो सब होशियार हो, ऐसे ही जमा करने में भी होशियार हो जाओ। सर्व खज़ाने जमा चाहिएँ। अगर एक भी कम है तो एयरकण्डीशन सीट नहीं मिलेगी, फिर तो फर्स्ट डिविजन में आ सकते हो। अभी अपनी बुकिंग देखो। अभी तो

आपको फिर भी चान्स है। लेकिन जब चान्स समाप्त हो जाएगा तो फिर क्या करेंगे? इसलिए अब मुख्य पुरुषार्थ चाहिए। हर समय, हर बात में, हर सब्जेक्ट में और हर संबंध की विशेषता में, स्वयं को चैक करना है।

बाप का तो सभी बच्चों के प्रति एक ही शुभ संकल्प है कि हर एक आत्मा रूपी बच्चा सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न अनेक जन्मों के लिए सम्पूर्ण वर्से का अधिकारी बन जाए। ऐसे प्राप्ति करने के उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं।

पीछे आने वाले को और आगे जाना है। थोड़े समय में बहुत कमाई कर सकते हो। फिर भी आप लोगों को पुरुषार्थ का समय मिला है। आगे चल करके तो इतना समय भी नहीं मिलेगा। अभी लेट का बोर्ड तो लग गया है लेकिन टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। तो आप सभी लक्की हो। सिर्फ अपने भाग्य को स्मृति में रखते हुए आगे बढ़ते चलना। कोई बातों में नहीं जाना। बापदादा देख रहे थे कि बच्चों का समय वेस्ट क्यों जाता है? चाहता कोई नहीं है, सब चाहते हैं कि हमारा समय सफल हो लेकिन बीच-बीच में कहां आधा घंटा, कहां 15 मिनट, कहां 5 मिनट वेस्ट चला जाता है। बापदादा ने देखा कि मैजारिटी का विशेष पुरुषार्थ जो कम या ढीला होता है उसके तीन कारण हैं - परमत, परचिंतन और परदर्शन।

18 जमा के लिए बापदादा की आशाएँ और शिक्षाएँ

विश्व सेवा में संकल्प, वाणी और कर्म से दिन-रात सच्चे सेवाधारी बन संगठित रूप में सदा तत्पर हो जाओ तो विश्व-सेवा में स्वयं की चढ़ती कला स्वत: होती जाएगी। पुण्य आत्मा बन, पुण्य का फल प्राप्त कर रहे हैं, सदा ऐसे अनुभव करेंगे। क्योंकि समय की समीपता प्रमाण हर श्रेष्ठ कर्म का फल सदा सन्तुष्टता के रूप में वर्तमान और भविष्य दोनों ही काल में प्राप्त होंगे। अभी प्राप्ति की मशीनरी तीव्रगति से अनुभव करेंगे। लाख गुणा जमा करने का

समय अब बाकी थोड़ा-सा रह गया है। अब का जमा होना, जन्म-जन्मांतर की प्रालब्ध बनाना है। इसके लिए विशेष दो बातें याद रखो, एक सदा अपने को विशेष आत्मा समझ संकल्प करो और दूसरी बात, सदा हरेक में विशेषताओं को देखो। हर आत्मा में विशेष आत्मा की भावना रखो। साथ-साथ विशेष बनाने की, शुभ कल्याण की कामना रखो।

हर सेकण्ड में पदमों की कमाई का वरदान ड्रामा में संगम के समय को ही मिला हुआ है, ऐसे वरदान को स्वयं प्रति भी जमा नहीं किया, औरों के प्रति भी दान न किया तो इसको भी व्यर्थ कहा जाएगा। ऐसे नहीं समझो कि कोई पाप तो किया नहीं वा कोई भूल तो की नहीं लेकिन समय का लाभ न लेना भी व्यर्थ है। मिले हुए वरदान को न स्वयं प्राप्त किया, न कराया तो इसको भी वेस्ट अर्थात् व्यर्थ कहेंगे।

संगमयुग के दिन बहुत अमूल्य हैं, बापदादा भी बच्चों का मेला संगम पर ही साकार रूप में देखते हैं। संगमयुग की विशेषता अपनी है और नई दुनिया की विशेषता अपनी है। जब नई दुनिया में जायेंगे तो बाप को भी भूल जायेंगे, उस समय याद होगा? बाप को भी खुशी है कि बच्चे इतने श्रेष्ठ पद को प्राप्त कर लेते हैं। सदैव बाप यही चाहते हैं कि बच्चे बाप से भी आगे रहें। बच्चों का श्रेष्ठ भाग्य देख बाप खुश होते हैं। थोड़े ही टाइम में कितना भाग्य बना लेते हो? हर संकल्प, अपना भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना भाग्य ऊंचे से ऊंचा बना सकते हो, तो चैक करो कि कितना भाग्य बनाने का चांस है उतना ही पूरा चांस ले रहे हैं? प्राप्ति का समय अभी ज्यादा नहीं है इसलिए जितना चाहो उतना अभी कर लो, नहीं तो यह प्राप्ति का समय याद आयेगा कि करना चाहिए था लेकिन किया नहीं। अपने याद की यात्रा को पावरफुल बनाते जाओ। संकल्प में सर्व शक्तियों का सार भरते जाओ। हर संकल्प में शक्ति भरते रहो। संकल्प की शक्ति से भी बहुत सेवा कर सकते हो।

अभी तो बाप समान बनना है। मास्टर हैं ना। मास्टर तो बड़ा होना

चाहिए। कम्पलेंटस सब खत्म हुई?वास्तव में बात होती है छोटी लेकिन सोच-सोच कर छोटी बात को बड़ा कर देते हो। सोचने की खातिरी से वह बात छोटी से मोटी बन जाती है। सोचने की खातिरी नहीं करो। यह क्यों आया, यह क्यों हुआ, पेपर आया है तो उसको करना है। पेपर क्यों आया, यह क्वेश्चन होता है क्या? वेस्ट और बैस्ट, सेकण्ड में जज करो और सेकण्ड में समाप्त करो। वेस्ट है तो आधाकल्प के लिए वेस्ट पेपर बाक्स में डाल दो। जज बनो, वकील नहीं। एक सेकण्ड की जजमेंट। यह बाप का गुण है वा नहीं। नहीं है तो वेस्ट पेपर बाक्स में डाल दो। अगर बाप का गुण है तो बैस्ट के खाते में जमा करो।

अन्त की कमजोर आत्माओं को महादानी, वरदानी बन अनुभव का दान और पुण्य करो। यही सेकण्ड का शक्तिशाली स्थिति द्वारा किया हुआ पुण्य आधाकल्प के लिए पूजनीय और गायन योग्य बना देगा। क्योंकि अन्तिम काल में आत्माओं के अन्तिम समय में आप सम्पूर्ण आत्माओं द्वारा प्राप्ति के अनुभव और सम्पूर्ण स्वरूप के प्रत्यक्षता का सम्पन्न स्वरूप, यही अन्तिम अनुभव का संस्कार लेकर आत्माएँ आधाकल्प के लिए अपने घर में विश्रामी होंगी। कुछ प्रजा बनेंगी, कुछ भक्त बनेंगी। इसलिए अन्तकाल, अन्त मति सो द्वापर में भक्तपन की गति में अर्थात् श्रेष्ठ भक्त माला के शिरोमणि आत्मायें बन जायेंगी। कोई विश्व अधिकारी के रूप में देखेंगे, कोई प्रजा बनने के संस्कार कारण आपके राज्य में प्रजा बन जायेंगी। कोई अति पूज्य स्वरूप में देखेंगे तो भक्त आत्मायें बन जायेंगे। ऐसी श्रेष्ठ स्थिति जिस स्थिति द्वारा इतनी सिद्धि को पायेंगे, ऐसी श्रेष्ठता का अनुभव कर रहे हो? संकल्प के खज़ाने के महत्त्व को जानते हुए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति जमा कर रहे हो?

बापदादा सभी के मस्तक पर चमकती हुई मणि को देख रहे हैं। अपने को सदा पदमापदम भाग्यशाली आत्मायें समझते हो? हर समय कितनी कमाई जमा करते हो? हिसाब निकाल सकते हो? सारे कल्प के अन्दर ऐसा

कोई बिजनेसमैन होगा जो इतनी कमाई करे? सदा यह खुशी की याद रहती है कि हम ही कल्प-कल्प ऐसे श्रेष्ठ आत्मा बने हैं? तो सदा यही समझो कि हम इतने बड़े बिजनेसमैन हैं और इतनी ही कमाई में बिजी रहो। सदा बिजी रहने से किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी क्योंकि बिजी होंगे तो माया बिजी देखकर लौट जाएगी, वार नहीं करेगी। सहज मायाजीत बनने का यही साधन है कि सदा कमाई करते रहो और कराते रहो।

सेवाधारियों को मधुबन से क्या सौगात मिली? प्रत्यक्षफल भी मिला और भविष्य प्रालब्ध भी जमा हुई। तो डबल सौगात हो गई। खुशी मिली, निरंतर योग के अभ्यासी बने, यहां रहते सहजयोगी, कर्मयोगी, निरंतर योगी का अभ्यास हो गया है। यही संस्कार अब ऐसे पक्के करके जाओ जो वहां भी यही संस्कार रहें। जैसे पुराने संस्कार न चाहते भी कर्म में आ जाते हैं ऐसे यह संस्कार भी पक्के करो जो संस्कारों के कारण यह अभ्यास चलता रहेगा। फिर माया विघ्न नहीं डालेगी क्योंकि संस्कार बन गए। इसलिए सदा इन संस्कारों को अंडरलाइन करते रहना, फ्रेश करते रहना।

इस मरजीवे जन्म का खज़ाना कहो वा विशेष एनर्जी कहो, वह है ही - संकल्प। मरजीवे बनने का आधार ही शुद्ध संकल्प है। मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ, इस संकल्प ने कौड़ी से हीरे तुल्य बना दिया ना। मैं कल्प पहले वाला बाप का बच्चा हूँ, वारिस हूँ, अधिकारी हूँ। इस संकल्प ने मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया, तो खज़ाना भी यही है, एनर्जी भी यही तो संकल्प भी यही है। विशेष खज़ानों को कैसे यूज किया जाता है, ऐसे अपने संकल्प के खज़ाने वा एनर्जी को पहचान कार्य में लगाओ तब ही सर्व संकल्प सिद्ध होंगे और सिद्धि स्वरूप बन जाएंगे। कम सोचो अर्थात् सिद्धि स्वरूप संकल्प करो। ऐसी रेखा वाले सदा बेगमपुर के बादशाह होंगे। मुख से सदैव महावाक्य बोलो। महावाक्य गिनती के होते हैं। जैसे महान आत्मायें गिनती की होती, आत्मायें अनेक होतीं और परमात्मा एक होता है। तो दोनों एनर्जी, संकल्प की और वाणी की, व्यर्थ

कारण कर्मातीत बनने के बजाए कर्मों का बंधन बंध जाता है। एक ने दिया, दूसरे ने लिया तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? उस समय अनुभव ऐसे करेंगे जैसे कि हम आगे बढ़ रहे हैं लेकिन वह आगे बढ़ना, बढ़ना नहीं, लेकिन कर्मबंधन के हिसाब का खाता जमा किया। कर्मबंधनी आत्मा, बाप से संबंध का अनुभव कर नहीं सकेगी। कर्मबंधन के बोझ वाली आत्मा याद की यात्रा में संपूर्ण स्थिति का अनुभव कर नहीं सकेगी। वह याद के सब्जेक्ट में सदा कमजोर होगी। नालेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी लेकिन इसेंसफुल नहीं होगी। सर्विसएबल होगी लेकिन विघ्नविनाशक नहीं होगी। सेवा की वृद्धि कर लेंगे लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्मायें कर्मबंधन के बोझ के कारण स्पीकर बन सकती हैं लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती अर्थात् उड़ती कला की स्पीड का अनुभव नहीं कर सकती।

अमृतवेले से लेकर हर कर्म चेक करो कि सुकर्म किया वा व्यर्थ कर्म किया वा कोई विकर्म भी किया? सुकर्म अर्थात् श्रीमत के आधार पर कर्म करना। श्रीमत के आधार पर किया हुआ कर्म स्वत: ही सुकर्म के खाते में जमा होता है। तो सुकर्म और विकर्म को चेक करने की विधि यह सहज है। इस विधि के प्रमाण सदा करते चलो। अमृतवेले के उठने के कर्म से लेकर रात के सोने तक हर कर्म के लिए श्रीमत मिली हुई है। उठना कैसे है, बैठना कैसे है, सब बताया हुआ है ना। अगर वैसे नहीं उठते तो अमृतवेले से श्रेष्ठ कर्म की श्रेष्ठ प्रालब्ध बना नहीं सकते अर्थात् व्यर्थ और विकर्म के त्यागी नहीं बन सकते तो इस संबंध का भी त्याग। व्यर्थ का भी त्याग करना पड़े।

कई बच्चे बड़े होशियार हैं। अपने पुराने लोकलाज की लाज भी रखने चाहते और ब्राह्मण लोक में भी श्रेष्ठ बनना चाहते हैं। बापदादा कहते, लौकिक कुल की लोकलाज भल निभाओ, उसकी मना नहीं है लेकिन धर्म, कर्म को छोड़ करके लोकलाज रखना, यह रांग है। और फिर होशियारी क्या करते

खर्च नहीं करो। महावीर महारथी अर्थात् मुख द्वारा महावाक्य बोलने वाले, बुद्धि द्वारा सिद्धि स्वरूप संकल्प करने वाले, यह निशानी है महावीर वा महारथी की। ऐसे महारथी बनो जो कोई भी सामने आए तो यही इच्छा रखे कि यह महान आत्मा मेरे प्रति श्रेष्ठ संकल्प सुनाए, आशीर्वाद के दो बोल बोले। आशीर्वाद के बोल सदा कम होते हैं जो आप महारथी महावीर देवात्मायें, भक्तों की पूज्य आत्मायें हो। सदा संकल्प और बोल से आशीर्वाद के संकल्प और बोल बोलो। अमृतवाणी बोलो, लौकिक वाणी नहीं। समय कम है और प्राप्ति करने चाहते हो सबसे ज्यादा। इसके कारण तन भी लगे, मन भी लगे और धन भी लगे, इसलिए तीनों प्रकार की सर्विस करनी पड़े। थोड़े समय में आपका तीनों प्रकार का लाभ जमा होता है क्योंकि धन की भी मार्क्स हैं। वे मार्क्स जमा होने के कारण नंबर आगे ले लेते हो। तो आप लोगों के फायदे के लिए कहा जाता है कि अपना धन लगाना, तो धन की सब्जेक्ट में भी एक का पदम मिलता है। सब तरफ से अगर एक ही समय में लाभ हो सकता है तो क्यों न करो। बाकि जब निमित्त बनी हुई आत्मायें देखेंगी, समय ही नहीं है, इसे फुर्सत ही नहीं है, अपने खाने का भी समय नहीं मिलता, यह इतना बिजी हो गए हैं तो आटोमेटिकली उससे फ्री कर देंगी। लेकिन जब तक इतने बिजी हो जाओ तब तक यह ज़रूरी है। यह व्यर्थ नहीं जाता है, इसकी भी मार्क्स जमा हो रही हैं। बिजी हो जायेंगे तो ड्रामा ही आपको वह नौकरी करने नहीं देगा। कोई न कोई कारण ऐसा बनेगा जो चाहो भी लेकिन कर नहीं सकेंगे। इसीलिए जैसे अभी चल रहे हो उसमें ही कल्याण है। ऐसे नहीं समझो हम सरेंडर नहीं हैं। सरेंडर हो, डायरेक्शन प्रमाण कर रहे हो।

सर्वशक्तिवान को छोड़ यथाशक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो? यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है, इसको जानो। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव होने के

हैं? समझते हैं किसको क्या पता? बाप तो कहते ही हैं कि मैं जानी जाननहार नहीं हूँ। निमित्त आत्माओं को भी क्या पता? ऐसे तो चलता है और चल करके मधुबन में पहुंच भी जाते हैं। सेवाकेंद्रों पर भी अपने आप को छिपाकर सेवा में नामीग्रामी भी बन जाते हैं। ज़रा-सा सहयोग देकर सहयोग के आधार पर बहुत अच्छे सेवाधारी का टाइटल भी खरीद कर लेते हैं। लेकिन जन्म-जन्म का श्रेष्ठ टाइटल सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी ... यह अविनाशी टाइटल गंवा देते हैं। तो सहयोग दिया नहीं लेकिन अंदर एक बाहर दूसरा, इस धोखे द्वारा बोझ उठाया। सहयोगी आत्मा के बजाए बोझ उठाने वाले बन गए। कितना भी होशियारी से स्वयं को चलाओ लेकिन यह होशियारी का चलाना, चलाना नहीं लेकिन चिल्लाना है। ऐसे नहीं समझना, ये सेवाकेंद्र कोई निमित्त आत्माओं के स्थान हैं। आत्माओं को तो चला लेते लेकिन परमात्मा के आगे एक का लाख गुणा हिसाब हर आत्मा के कर्म के खाते में जमा हो ही जाता है। उस खाते को चला नहीं सकते। इसलिए बापदादा को ऐसे होशियार बच्चों पर भी तरस पड़ता है। फिर भी एक बार बाप कहा तो बाप भी बच्चों के कल्याण के लिए सदा शिक्षा देते ही रहेंगे। तो ऐसे होशियार मत बनना। सदा ब्राह्मण लोक की लाज रखना।

दिलतख्तनशीन बनने के लिए दिल का सौदा करना पड़ता है। इसलिए बाप का नाम दिलवाला पड़ा है। तो दिल लेता भी है, दिल देता भी है। जब सौदा होने लगता है तो चतुराई बहुत करते हैं। पूरा सौदा नहीं करते, थोड़ा रख लेते हैं फिर क्या कहते हैं? धीरे-धीरे करके देते जायेंगे। किश्तों में सौदा करना पसंद करते हैं। एक धक से सौदा करने वाले, एक के होने कारण सदा एकरस रहते हैं और सबमें नंबर एक बन जाते हैं। बाकि जो थोड़ा-थोड़ा करके सौदा करते हैं, एक के बजाए दो नाव में पांव रखने वाले, सदा कोई-न-कोई उलझन की हलचल में, एकरस नहीं बन सकते हैं। इसलिए सौदा करना है तो सेकेंड में करो। दिल के टुकड़े-टुकड़े नहीं करो। आज अपने से

दिल हटाकर बाप से लगाई, एक टुकड़ा दिया अर्थात् एक किश्त दी। फिर कल संबंधियों से दिल हटाकर बाप को दी, दूसरी किश्त दी, दूसरा टुकड़ा दिया, इससे क्या होगा? बाप की प्रापर्टी के अधिकार के भी टुकड़े के हकदार बनेंगे। प्राप्ति के अनुभव में सर्व अनुभूतियों के अनुभव को पा नहीं सकेंगे। थोड़ा-थोड़ा अनुभव किया इससे सदा संपन्न, सदा सन्तुष्ट नहीं होंगे। इसलिए कई बच्चे अब तक भी ऐसे ही वर्णन करते हैं कि जितना, जैसा होना चाहिए वह इतना नहीं है। कोई कहते पूरा अनुभव नहीं होता, थोड़ा होता है। और कोई कहते - होता है लेकिन सदा नहीं होता। क्योंकि पूरा फुल सौदा नहीं किया तो अनुभव भी फुल नहीं होता है। एक साथ सौदे का संकल्प नहीं किया। कभी कभी करके करते हैं तो अनुभव भी कभी-कभी होता है। सदा नहीं होता है। वैसे तो सौदा है कितना श्रेष्ठ प्राप्ति वाला! भटकी हुई दिल देना और दिलाराम बाप के दिलतख्त पर आराम से अधिकार पाना। फिर भी सौदा करने की हिम्मत नहीं। जानते भी हैं, कहते भी हैं लेकिन फिर भी हिम्मतहीन भाग्य पा नहीं सकते हैं। है तो सस्ता सौदा ना, या मुश्किल लगता है? कहने में सब कहते कि सस्ता है। जब करने लगते हैं तो मुश्किल बना देते हैं। वास्तव में तो देना, देना नहीं है। लोहा दे करके हीरा लेना, तो यह देना हुआ वा लेना हुआ? तो लेने की भी हिम्मत नहीं है क्या? इसलिए कहा कि बेहद का बाप देता सबको एक जैसा है लेकिन लेने वाले खुला चांस होते भी नंबरवार बन जाते हैं। चांस लेने चाहो तो ले लो फिर यह उलहना कोई नहीं सुनेगा कि मैं कर सकता था लेकिन यह कारण हुआ। पहले आता तो आगे चला जाता था। यह परिस्थितियां नहीं होती तो आगे चला जाता। ये उलहने स्वयं की कमजोरी की बातें हैं। स्व-स्थिति के आगे परिस्थिति कुछ कर नहीं सकती। विघ्न-विनाशक आत्माओं के आगे पुरुषार्थ में विघ्न डाल नहीं सकता। समय के हिसाब से रफ्तार का हिसाब नहीं। दो साल वाला आगे जा सकता, दो मास वाला नहीं जा सकता, यह हिसाब नहीं। यहां तो सेकण्ड का सौदा है।

ाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है? वा स्वयं की ाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत हुल्लास होते भी परवश अनुभव करते हैं, कहते हैं, सा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है वयं के पुराने स्वभाव-संस्कार के परवश वा किसी संगदोष के परवश वा किसी वायुमण्डल वायब्रेशन के परवश। ये तीनों प्रकार के परवश स्थितियां, न ाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी है पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो, किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे ो नहीं ले आता। हिसाब चुक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इस विधि से अपने आपको चेक करो। दु:खमय दुनिया में तो दु:ख की घटनाओं के पहाड़ फटने ी हैं, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है ही बाप की छत्रछाया।

आज की मनुष्य आत्माओं के दिल के दर्द भी अनेक प्रकार के हैं। कभी न के कर्म भोग का दर्द, कभी सम्बन्ध-सम्पर्क से दु:खी होने का दर्द, कभी न ज्यादा आया वा कम हो गया, दोनों की चिंता का दर्द और कभी प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त हुए दु:ख का दर्द। कभी अल्पकाल की इच्छाओं की प्राप्ति के दु:ख-दर्द, ऐसे एक दर्द से अनेक दर्द पैदा होते रहते हैं। विश्व ही ु:ख-दर्द की पुकार करने वाला बन गया है। ऐसे समय पर आप सुखस्वरूप, ुखदायी बच्चों का फर्ज क्या है? जन्म-जन्म के दु:ख-दर्द के कर्ज से सभी ो छुड़ाओ। यह पुराना कर्ज दु:ख दर्द का मर्ज बन गया है। ऐसे समय पर आप सभी का फर्ज है, दाता बन जिस आत्मा को जिस प्रकार के कर्ज का मर्ज ागा हुआ है उनको उस प्राप्ति से भरपूर करो। जैसे तन के कर्मभोग की ु:ख-दर्द वाली आत्मा को कर्मयोगी बन कर्मयोग से कर्मभोग समाप्त करो, ैसे कर्मयोगी बनने की शक्ति की प्राप्ति महादान के रूप में दो। वरदान के प में दो, स्वयं तो कर्जदार हैं अर्थात् शक्तिहीन ही हैं, खाली हैं। ऐसे को

दो मास तो कितना बड़ा है लेकिन जब से आए तब से तीव्रगति है? तो सदा तीव्रगति वाले, कई अलबेली आत्माओं से आगे जा सकते हैं। इसलिए वर्तमान समय को और मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को यह वरदान है, जो अपने लिए चाहो, जितना चाहो, आगे बढ़ना चाहो, जितना अधिकारी बनने चाहो उतना सहज बन सकते हो क्योंकि वरदानी समय है। वरदानी बाप की वरदानी आत्मायें हो, समझा। वरदानी बनना है तो अभी बनो, फिर वरदान का समय भी समाप्त हो जाएगा। फिर मेहनत से भी कुछ पा नहीं सकेंगे। इसलिए जो पाना है वह अभी पा लो। जो करना है अभी कर लो। सोचो नहीं लेकिन जो करना है वह दृढ़ संकल्प से कर लो और सफलता पा लो।

पता नहीं, होगा या नहीं होगा, मैं कर सकूंगा या नहीं, यह संकल्प करना, माया का आह्वान करना है। जब आह्वान किया तो माया क्यों नहीं आएगी? यह संकल्प आना अर्थात् माया को रास्ता देना। जब आप रास्ता ही खोल देते हो तो क्यों नहीं आएगी? इसलिए सदा उमंग-उत्साह में रहने वाली हिम्मतवान आत्मा बनो। विधाता और वरदाता बाप के संबन्ध से बालक सो मालिक बन गए। सर्व खज़ानों के मालिक, जिस खज़ाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, ऐसे मालिक उमंग-उत्साह में न रहेंगे तो कौन रहेगा! यह सलोगन सदा मस्तक में स्मृति रूप में रहे – हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे। याद है ना! इसी स्मृति ने यहां तक लाया है। सदा इसी स्मृति भव।

अब अपने आप को चेक करो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा के तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू हुए हैं वा अभी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता अभी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते हैं, जितना सोचते हैं उतना नहीं कर पाते हैं और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न

अपने कर्मयोगी की शक्ति का हिस्सा दो। कुछ न कुछ अपने खाते से उनके खाते में जमा करो तब वह कर्ज के मर्ज से मुक्त हो सकते हैं। इतना समय जो डायरेक्ट बाप के वारिस बन सर्व शक्तियों का वर्सा जमा किया है उस जमा किए हुए खाते से फराखदिली से दान करो, तब दिल के दर्द की समाप्ति कर सकेंगे।

सारा संगठन देख बापदादा भाग्यवान बच्चों के भाग्य बनाने की महिमा गा रहे थे। दूर वाले नजदीक के हो गए और नजदीक आबू में रहने वाले कितने दूर हो गए हैं। पास रहते भी दूर हैं और आप दूर रहते भी पास हैं। वह देखने वाले और आप दिलतख्त पर सदा रहने वाले। कितने स्नेह से मधुबन आने का साधन बनाते हैं। हर मास यही गीत गाते हैं – बाप से मिलना है, जाना है, जमा करना है। तो यह लगन भी मायाजीत बनने का सहज साधन बन जाती है। अगर सहज टिकट मिल जाए तो इतनी लगन में विघ्न ज्यादा पड़ें। लेकिन फुरी - फुरी तालाब करते हैं इसलिए बूँद-बूँद जमा करने में बाप की याद समाई हुई होती है। इसलिए यह भी ड्रामा में जो होता है कल्याणकारी है। अगर ज्यादा पैसे मिल जाएँ तो फिर माया आ जाए, फिर सेवा भूल जाएगी। इसलिए धनवान, बाप के अधिकारी बच्चे नहीं बनते हैं। कमाया और जमा किया। अपनी सच्ची कमाई का जमा करना, इसी में बल है। सच्ची कमाई का धन, बाप के कार्य में सफल हो रहा है। अगर ऐसे ही धन आ जाए तो तन नहीं लगेगा और तन नहीं लगेगा तो मन भी नीचे-ऊपर होगा। इसलिए तन,मन,धन तीनों ही लग रहे हैं। इसलिए संगमयुग पर कमाया और ईश्वरीय बैंक में जमा किया, यह जीवन ही नम्बरवन जीवन है। कमाया और लौकिक बैंकों में जमा किया तो वह सफल नहीं होता। कमाया और अविनाशी बैंक में जमा किया तो एक का पद्मगुणा बनता, 21 जन्मों के लिए जमा हो जाता। दिल से किया हुआ दिलाराम के पास पहुंचता है। अगर कोई दिखावे की रीति से करते तो दिखावे में ही खत्म हो जाता है। दिलाराम तक नहीं

पहुंचता। इसलिए आप दिल से करने वाले अच्छे हो। दिल से दो करने वाले भी पद्मापद्मपति बन जाते हैं और दिखावा से हजार करने वाले भी पद्मापद्मपति नहीं बनते। दिल की कमाई, स्नेह की कमाई, सच्ची कमाई है।

शक्तिशाली संकल्प का सहयोग विशेष आज की आवश्यकता है। स्वयं का पुरुषार्थ अलग चीज है लेकिन श्रेष्ठ संकल्प का सहयोग इसकी विशेष आवश्यकता है। यही सेवा आप विशेष आत्माओं की है। संकल्प से सहयोग देना, इस सेवा को बढ़ाना है। वाणी से सेवा देने का समय बीत गया। अभी श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन करना है। श्रेष्ठ भावना से परिवर्तन करना, इसी सेवा की आवश्यकता है। यही बल सभी को आवश्यक है। तो जितना जो स्वयं शक्तिशाली है उतना औरों के भी संकल्प में बल भर सकते हैं। जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमा कर कई कार्य सफल करते हैं ना। यह भी संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई, उससे औरों को भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। वह साफ कहते हैं कि हमारे में हिम्मत नहीं है तो उन्हें हिम्मत देनी है। वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज्यादा कार्य करती है। जितना जो सूक्ष्म चीज होती है वह ज्यादा सफलता दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म हैं ना। तो आज इसी बात की आवश्यकता है। यह संकल्प शक्ति बहुत सूक्ष्म है। जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं ना। ऐसे संकल्प एक इन्जेक्शन का काम करता है जो अन्दर वृत्ति में, संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाती है। अभी यह सेवा बहुत आवश्यक है।

इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य, तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं के शरीरों का विनाश किसी भी विधि से होगा लेकिन अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने-कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूनी

नाहक वायुमण्डल के वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना - क्या इस विशाल कार्य के लिए तैयारी कर रहे हो? या सिर्फ कोई आया, समझाया और खाया, इसी में तो समय नहीं जा रहा है? मनसा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। उस समय मनसा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर नहीं होगी तो अपनी कमजोरियां पश्चाताप के रूप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी। क्योंकि स्मृति में कमजोरी आने से भय भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला देते हो लेकिन अन्त में भय अनुभव होगा इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए स्वयं की सेफ्टी के लिए मनसा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे।

विनाश को अन्तकाल कहा जाएगा। उस समय बहुत काल का चांस तो समाप्त है ही लेकिन थोड़े समय का भी चांस समाप्त हो जाएगा। इसलिए बापदादा बहुत काल की समाप्ति का इशारा दे रहे हैं। फिर बहुत काल की गिनती का चांस समाप्त हो थोड़ा समय पुरुषार्थ, थोड़ा समय प्रालब्ध, यही कहा जाएगा। कर्मों के खाते में अब बहुत काल खत्म हो, थोड़ा समय वा अल्पकाल आरंभ हो रहा है। इसलिए यह वर्ष परिवर्तन काल का वर्ष है। फिर उलहना नहीं देना कि हम तो अलबेले होकर चल रहे थे। आज नहीं तो कल बदल ही जायेंगे। इसलिए कर्मों की गति को जानने वाले बनो। नालेजफुल बन तीव्रगति से आगे बढ़ो। नहीं तो बहुत काल के पुराने संस्कार अगर रह गए तो इस बहुत काल की गिनती धर्मराजपुरी के खाते में जमा हो जाएगी। कोई-कोई का बहुत काल के व्यर्थ, अयथार्थ कर्म-विकर्म का खाता अभी भी है, बापदादा जानते हैं, सिर्फ आउट नहीं करते हैं, थोड़ा-सा पर्दा डाले हैं लेकिन व्यर्थ और अयथार्थ यह खाता अभी भी बहुत है। यह वर्ष एक्स्ट्रा गोल्डन चांस का वर्ष है।

बहुतकाल की शक्तिशाली आत्मा, निर्विघ्न आत्मा अन्त में भी निर्विघ्न बन पास विद ऑनर बन जाती है या फर्स्ट डिविजन में आ जाती है। तो सदा यही लक्ष्य रखो कि बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति का अनुभव अवश्य करना है। ऐसे नहीं समझो, विघ्न आया, मिट तो गया ना, कोई हर्जा नहीं लेकिन बार-बार विघ्न आना और मिटाना इसमें टाइम वेस्ट हो जाता है। एनर्जी वेस्ट जाती है, वह टाइम और एनर्जी सेवा में लगाओ तो एक का पद्म जमा हो जाएगा। इसलिए बहुतकाल की निर्विघ्न आत्मायें, विघ्न-विनाशक रूप से पूजी जाती हैं। विघ्न-विनाशक टाइटल पूज्य आत्माओं का है। मैं विघ्न विनाशक पूज्य आत्मा हूँ, इस स्मृति से सदा विघ्न विनाश तो किए लेकिन औरों के लिए विघ्नविनाशक बनना है।

आप सभी को भी थोड़े समय में आगे बढ़ने वाले बच्चों को अपने संबंध और संपर्क का सहयोग देना ही है जिससे उन्हों को सहज आगे बढ़ने का उमंग और हिम्मत हो। अभी यह सेवा बहुत होनी है। सिर्फ अपने लिए शक्तियां जमा करने का समय नहीं है लेकिन अपने साथ औरों के प्रति भी शक्तियां इतनी जमा करनी हैं जो औरों को भी सहयोग दे सको। सिर्फ सहयोग लेने वाले नहीं लेकिन देने वाले बनना है। जिन्हों को दो वर्ष भी हो गया उन्हों के लिए दो वर्ष भी कम नहीं हैं। थोड़े टाइम में सब अनुभव करना है।

शुद्ध संकल्प के शक्ति की स्वयं के प्रति भी स्टाक जमा करने की बहुत आवश्यकता है। मुरली सुनना यह लगन तो बहुत अच्छी है। मुरली अर्थात् खज़ाना। मुरली की हर प्वांइट को शक्ति के रूप में जमा करना, यह है शुद्ध संकल्प की शक्ति को बढ़ाना। शक्ति के रूप में हर समय कार्य में लगाना। अभी इस विशेषता का विशेष अटेन्शन रखना है। शुद्ध संकल्प की शक्ति के महत्त्व को अभी जितना अनुभव करते जायेंगे उतना मनसा सेवा के भी सहज अनुभवी बनते जायेंगे। पहले तो स्वयं के प्रति शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा चाहिए और फिर साथ-साथ आप सभी बाप के साथ विश्वकल्याणकारी

आत्मायें, विश्व परिवर्तक आत्मायें हो तो विश्व के प्रति भी यह शुद्ध संकल्पों की शक्ति द्वारा परिवर्तन करने का कार्य अभी बहुत रहा हुआ है। जैसे वर्तमान समय ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन शुद्ध संकल्प की शक्ति से आप सबकी पालना कर रहे हैं। सेवा की वृद्धि कर के सहयोगी बन आगे बढ़ा रहे हैं। यह विशेष सेवा, शुद्ध संकल्प की चल रही है। तो ब्रह्मा बाप समान अभी इस विशेषता को अपने में बढ़ाने का, तपस्या के रूप में अभ्यास करना है। तपस्या अर्थात् दृढ़ता संपन्न अभ्यास। साधारण को तपस्या नहीं कहेंगे तो अभी तपस्या के लिए समय दे रहे हैं। अभी ही क्यों दे रहे हैं? क्योंकि यह समय आपके बहुतकाल में जमा हो जाएगा। बापदादा सभी को बहुतकाल की प्राप्ति कराने के निमित्त हैं। बापदादा सभी बच्चों को बहुतकाल के राज्य भाग्य अधिकारी बनाना चाहते हैं। तो बहुत काल का समय बहुत थोड़ा है इसलिए हर बात के अभ्यास को तपस्या के रूप में करने के लिए यह विशेष समय दे रहे हैं। क्योंकि ऐसा समय आएगा जिसमें आप सभी को दाता और वरदाता बन थोड़े समय में अनेकों को देना पड़ेगा। तो सर्व खज़ानों के जमा का खाता संपन्न बनाने के लिए समय दे रहे हैं। अभी संगठन में विधातापन की लहर फैलाओ। जो खज़ाने जमा किए हैं वह जितना मास्टर विधाता बन देते जायेंगे उतना भरता जायेगा। कितना सुना है। अभी करने का समय है। तपस्वीमूर्त का अर्थ है, तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आवें। सिर्फ स्वयं के प्रति याद स्वरूप बन शक्ति सेना का मिलन मनाना वह अलग बात है लेकिन तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है, ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ। ऐसे नहीं, याद से वा ज्ञान के मनन से स्वयं को श्रेष्ठ बनाया, मायाजीत विजयी बनाया, इसी में सिर्फ खुश नहीं रहना लेकिन सर्व खज़ानों में सारे दिन में कितनों के प्रति विधाता बने? सभी

खज़ाने हर रोज कार्य में लगाये वा सिर्फ जमा को देख खुश हो रहे हैं? अभी यह चार्ट रखो कि खुशी का खज़ाना, शान्ति का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, सहयोग देने का खज़ाना कितना बांटा अर्थात् कितना बढ़ाया। इससे कामन चार्ट स्वत: ही श्रेष्ठ हो जाएगा। यह तपस्वी स्वरूप का चार्ट है विश्व कल्याणकारी बनना।

मन, वाणी, कर्म और स्वप्न में भी पवित्रता, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण पवित्रता। कई बच्चे अलबेलेपन में आने के कारण, चाहे बड़ों को, चाहे छोटों को, इस बात में चलाने की कोशिश करते हैं कि मेरा भाव बहुत अच्छा है लेकिन बोल निकल गया, वा मेरी एम ऐसे नहीं थी लेकिन हो गया, या कहते हैं कि हंसी मजाक में कह दिया अथवा कर लिया। यह भी चलाना है। इसलिए पूजा भी चलाने जैसी होती है। यह अलबेलापन सम्पूर्ण पूज्य स्थिति को नंबरवार में ले आता है। यह भी अपवित्रता के खाते में जमा होता है। पवित्र आत्माओं की निशानी यही है कि उन्हों की चारों प्रकार की पवित्रता स्वाभाविक, सहज और सदा होगी। उनको सोचना नहीं पड़ेगा लेकिन पवित्रता की धारणा स्वत: ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है।

हर कार्य में, हर समय यह याद रखो कि अब नहीं तो कब नहीं। जिसको यह स्मृति में रहता है वह कभी भी समय, संकल्प दा कर्म वेस्ट होने नहीं देंगे, सदा जमा करते रहेंगे। विकर्म की तो बात ही नहीं है लेकिन व्यर्थ कर्म भी धोखा दे देते हैं तो हर सेकेंड के हर संकल्प का महत्त्व जानते हो ना। जमा का खाता सदा भरता रहे। अगर हर सेकेंड वा हर संकल्प श्रेष्ठ जमा करते हो, व्यर्थ नहीं गंवाते हो तो 21 जन्म के लिए अपना खाता श्रेष्ठ बना लेते हो तो जितना जमा करना चाहिए उतना कर रहे हो? इस बात पर और अंडरलाइन करना, एक सेकण्ड भी, संकल्प भी व्यर्थ न जाए। व्यर्थ खत्म हो जाएगा तो सदा समर्थ बन जाएगा।

कभी-कभी कई बच्चे बाप के आगे अपने दिल का हालचाल सुनाते क्या

कहते हैं, ना मालूम क्यों आज अपने को खाली-खाली समझते हैं, कोई बात भी नहीं हुई है लेकिन सम्पन्नता वा सुख की अनुभूति नहीं हो रही है। कई बार उस समय कोई उल्टा कार्य या कोई छोटी-मोटी भूल नहीं होती है लेकिन चलते-चलते अन्जान वा अलबेलेपन में समय प्रति समय आज्ञा के प्रमाण काम नहीं करते हैं। पहले समय की अवज्ञा का बोझ किसी समय अपने तरफ खींचता है। जैसे पिछले जन्मों के कड़े संस्कार, स्वभाव कभी-कभी न चाहते भी अपने तरफ खींच लेते हैं, ऐसे समय प्रति समय की हुई अवज्ञाओं का बोझ कभी-कभी अपने तरफ खींच लेता है। वह है पिछला हिसाब-किताब, चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। अग्नि स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति सदा न होने के कारण हिसाब-किताब को भस्म नहीं कर सकते हैं। इसलिए रहा हुआ हिसाब अपने तरफ खींचता है। उस समय कोई गलती नहीं करते हो कि पता नहीं क्या हुआ, कभी मन नहीं लगेगा याद में, सेवा में वा कभी उदासी की लहर होगी। एक होता है ज्ञान द्वारा शान्ति का अनुभव, दूसरा होता है बिना खुशी, बिना आनन्द के सन्नाटे की शान्ति। वह बिना रस के शान्ति होती है। सिर्फ दिल करेगा, कहां अकेले चले जाएँ, बैठ जाएं। यह सब निशानियां हैं कोई-न-कोई अवज्ञा की। कर्म का बोझ खींचता है। अवज्ञा एक होती है पाप कर्म करना वा कोई बड़ी भूल करना और दूसरी छोटी-छोटी अवज्ञाएं भी होती हैं। जैसे बाप की आज्ञा है – अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो। तो अमृतवेले अगर इस आज्ञा प्रमाण नहीं चलते तो उसको क्या कहेंगे? हर कर्म कर्मयोगी बनकर के करो, निमित्त भाव से करो, निर्माण बनके करो, यह आज्ञाएं हैं। ऐसे तो बहुत बड़ी लिस्ट है लेकिन दृष्टान्त की रीति सुना रहे हैं। दृष्टि, वृत्ति सबके लिए आज्ञा है। इन सब आज्ञाओं में से कोई भी आज्ञा विधिपूर्वक पालन नहीं करते तो इसको कहते हैं, छोटी-मोटी अवज्ञाएं। यह खाता अगर जमा

होता रहता है तो ज़रूर अपनी तरफ खींचेगा ना, इसलिए कहते हैं कि जितना जमा होना चाहिए, उतना नहीं होता। जब पूछते हैं, ठीक चल रहे हैं तो सब कहेंगे, हां। और जब कहते हैं कि जितना होना चाहिए उतना है तो फिर सोचते हैं। इतने इशारे मिलते, नालेजफुल होते, फिर भी जितना होना चाहिए उतना नहीं होता, कारण? पिछला वा वर्तमान बोझ डबल लाइट बनने नहीं देता है। कभी डबल लाइट बन जाते, कभी बोझ नीचे ले आता। सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शांत स्थिति अनुभव नहीं करते हैं। बापदादा के आज्ञाकारी बनने की विशेष आशीर्वाद की लिफ्ट के प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। इसलिए किस समय सहज होता, किस समय मेहनत लगती है।

साधारण बोल वा कर्म जमा नहीं होता, न मिटता है, न बनता है। वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य का जमा करता है। जमा का खाता बढ़ता नहीं है। तो जमा करने के हिसाब में बच्चे भोले बन जाते हैं - खुश रहते हैं कि मैंने वेस्ट नहीं किया लेकिन सिर्फ इसमें खुश नहीं रहना है। वेस्ट नहीं किया लेकिन बैस्ट कितना बनाया? कई बच्चे कहते हैं, मैंने आज किसको दुःख नहीं दिया लेकिन सुख भी दिया? दुःख नहीं दिया, इससे वर्तमान अच्छा बनाया, लेकिन सुख देने से जमा होता है, वह किया वा सिर्फ वर्तमान में ही खुश हो गए? सुखदाता के बच्चे सुख का खाता जमा करते। जो भी सम्पर्क में आए मास्टर सुखदाता द्वारा हर कदम में सुख की अनुभूति करे। इसको कहा जाता है, दिव्यता वा अलौकिकता। तो चेकिंग भी साधारण से गुह्य चेकिंग करो। हर समय यह स्मृति रखो कि एक जन्म में 21 जन्मों का खाता जमा करना है। तो सब खाते चेक करो, तन से कितना जमा किया? मन के दिव्य संकल्प से कितना जमा किया? जमा के खाते तरफ विशेष अटेन्शन दो। क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए – ''अब नहीं तो कब नहीं'।